श्रीमदखिलाण्डकोटिब्रह्मांडनायकश्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वराय नमः ।

श्रीवेङ्कटाद्रिनिलयः कमलाकामुकः पुमान् ॥ अभंगुरविभूतिर्नस्तरङ्गयतु मङ्गलम् ॥ १ ॥

एष नारायणः श्रीमान् क्षीरार्णवनिकेतनः ॥ नागपर्यङ्कमुत्सृज्य ह्यागतो मथुरां पुरीम् ॥ १ ॥
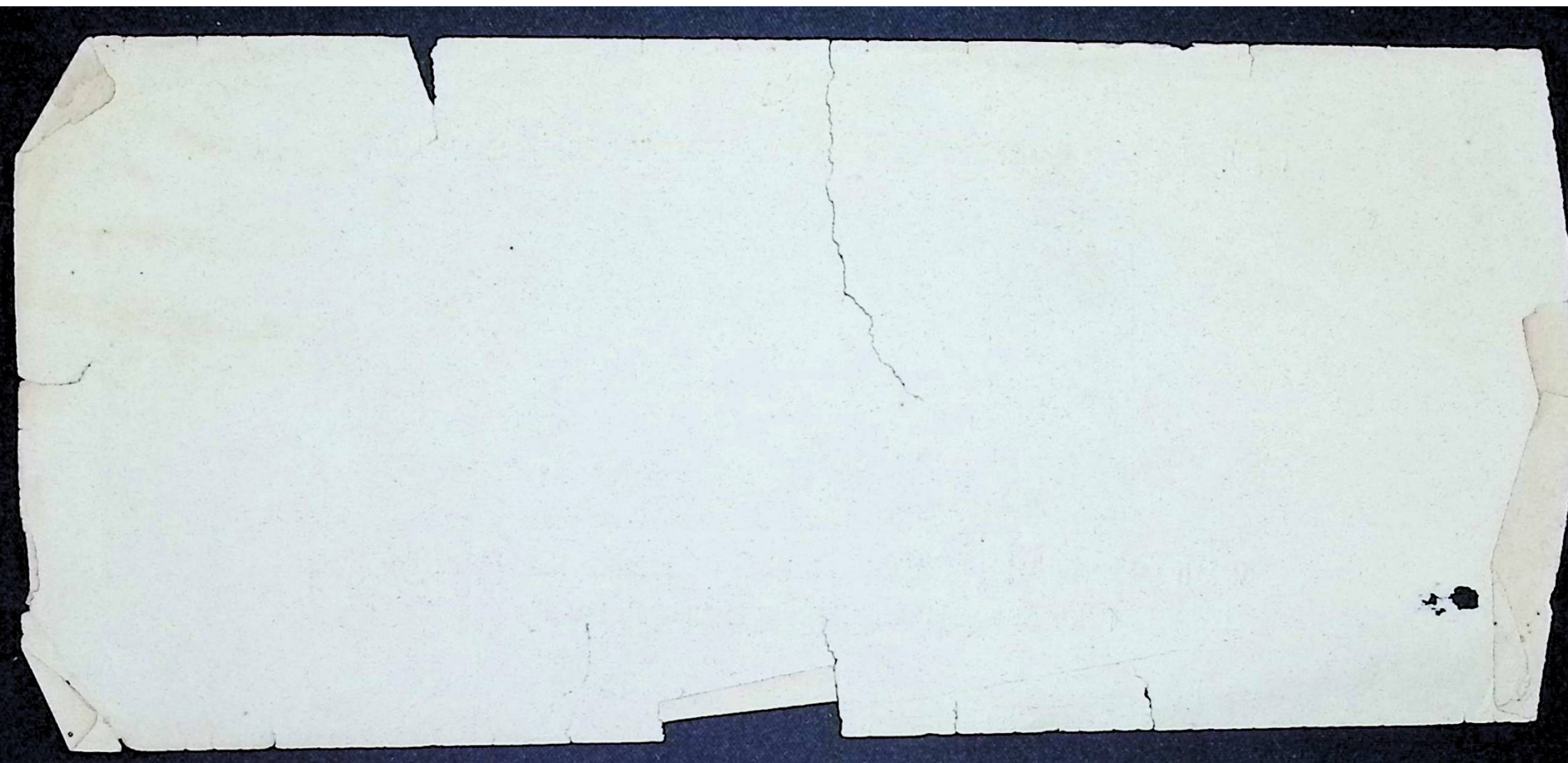
॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशं नमस्कृत्य देवीं चैव सरस्वतीम् ॥ शब्दार्थबोधरूपा वै क्रियते भावदीपि-
पिका ॥ १ ॥ मंजरी प्रेतकल्पाख्या बोधायाल्पज्ञमानुषाम् ॥ रामप्रतापविदुषा भाषाटीका विरच्यते॥२॥
देववाण्यर्थज्ञातार इहाल्पाः संति वै जनाः ॥ अभिमत्या कर्म्मलोपं कुर्वंति प्राणितुष्टये ॥ ३ ॥ दोहा ॥
भाषार्थ जानै घना, संस्कृतकुं नांय ॥ बांच बांच हर्षै बहुत, सुगम अर्थके मांय ॥१॥ सज्जन हो सो सम-

श्रीगणेशाय नमः ॥ नमस्कृत्य हयग्रीवं जगत्कारणकारणम् ॥ क्रियते छोटुमिश्रेण संक्षि

झते, सुगम अर्थकी रीत ॥ कर्म्मकांड विधिसे करै, नहीं करै विपरीत ॥ २ ॥ अर्थः—मया छोटुमिश्रेण मैं
जो छोटु नाम करके मिश्र हूं सो प्रेतपद्धति जो शास्त्रोंमें लिखा है उसीके अनुसार संक्षेपसे करवाई किंकृ-
त्य नाम कहा करके हयग्रीव भगवानकूं नमस्कार करके कैसा है हयग्रीव भगवान् कि जगत्के कारण-
काभी कारण नाम हेतु है। और श्रीहयग्रीव भगवान् इस संसारके कारण और पालन पोषण करनेवाले

हैं उनको वारंवार नमस्कार है। यह मंगलाचरणश्लोक है ॥ १ ॥ अर्थः—नानास्मृतिनिबंधानां इति। मया छोटुमिश्रेण मैं जो छोटुमिश्र हूं सो श्राद्धपद्धतिः लिख्यते श्राद्धपद्धतिकुं लिखता हूं किंकृत्य नाम कहा करके नाना प्रकारकी स्मृतियोंकुं बांधने वा करनेवाले धीमान् पंडितोंके मतकुं आलोक्य नाम देखके परंतु क्या प्रयोजनके वास्ते बालबोधाय बाल नाम अल्पज्ञ तिनके बोधके वास्ते कथंभूता श्राद्धपद्धतिः

त्ता प्रेतपद्धतिः ॥ १ ॥ नानास्मृतिनिबंधानांमतमालोक्य धीमताम् ॥ लिख्यते बालबो
धायश्राद्धपद्धतिमुत्तमाम् ॥ २ ॥ अथ प्रेताधिकारिणःकथ्यंते ॥ पुत्रःपौत्रःप्रपौत्रो वा

कैसी श्राद्धपद्धति है उत्तमा नाम शास्त्ररीत्या श्रेष्ठा और नाना प्रकारकी स्मृति बांधने वा श्राद्धपद्धति करने-की रीति बुद्धिमान् सुविज्ञ पंडितोंके मतानुसार। बालबुद्धिके समझने योग्य यह ग्रन्थ बनाता हूं ॥ २ ॥ अथ प्रेतकर्माधिकारिणः कथ्यंते प्रेत कर्म्म करवानेका जिनोंकुं अधिकार है सो कहते हैं। पुत्रः और

पौत्रः नाम पोतेकुं प्रपौत्रः नाम पडपोतेकुं कर्मकांड करवानेका अधिकार है। और भ्राता नाम भाई और भ्रातृपुत्रकुं अधिकार है । परंतु सप्त ७ पुरुषः नाम सात पिढीतक जो मिले तिनकुं प्रेतकर्म्म करवानेका अधिकार है सपिंडसंततिर्नाम सात पिढीतकके आदमियोंकुं करवानेका अधिकार श्रेष्ठ है । अब प्रथम प्रेतकर्म करवानेका जिनको अधिकार है उनको लिखता हूं पुत्र और पोते और प्रपोतेको प्रेतकर्म करवा-

भ्रातावाभ्रातृसंततिः ॥ सपिंडसंततिर्वापि क्रियार्हो नृप जायते ॥ ३ ॥ तेषामभावे सर्वेषां समानोदकसंततिः ॥ सपिंडतातु पुरुषे सप्तमे विनिवर्तते ॥ ४ ॥ समानोदकभावस्तु नि

नेका अधिकार है और भाई अथवा भाईके पुत्रकोभी अधिकार है परन्तु केवल सात पिढीतकके मनुष्यों-कोही अधिकार है ॥ ३ ॥ अथवा सप्तपिढीतक कोई उसीके न होय तो सप्तपिढीसे चौदह पिढीतक समानोदक संज्ञा है और सपिंडता तो सप्त पिढीतक रहती है ॥ ४ ॥ सो कोई समानोदकवाला होय

तो प्रेतकर्म्म करवानेके अधिकारी हैं परंतु चौदह पिढियोंसे लेके एकविंश २१ पिढीतक सगोत्रत्व होता है परंतु पिताका कर्मकांड करवानेका पुत्रकुंही अधिकार श्रेष्ठ है और किसीके पुत्र नहीं होवे जब पूर्वोक्त कहे जिनकुं अधिकार है कदाचित् सात पिढीतक उस प्राणीको कोई नहीं हो तो सात पिढीसे चौदह पिढीतकभी करा सक्ता है क्योंकि समानोदक संज्ञा है परन्तु सापिंडता तो सातही पिढीतक रहती है यदि कोई समानोदकवाला होय तो उसे अधिकार है परन्तु चौदह पिढियोंसे इक्कीस पिढीतक सगोत्रता रहती

वर्तेताचतुर्दशात् ॥ पितुःपुत्रेण कर्तव्या पिंडदानोदकक्रिया ॥ ५ ॥ पुत्राभावे तु पत्नी

है प्रथम सबसे श्रेष्ठ अधिकार पिताका कर्मकांड करवानेका केवल पुत्रकोही अधिकार है यदि पुत्र न हो तो ऊपर कहे हुए प्राणियोंको अधिकार है ॥५॥ किसीके पुत्र नहीं होवे तो पत्नी नाम स्त्रीकुं कर्म्मकांड करवानेका अधिकार है और स्त्री नहीं होवे तो सहोदरः नाम भाई निज मातृगर्भसे पैदा हुआ होय तिसको प्रेतक्रिया करनेका अधिकार है जिसके कोई बंधु नहीं होय तथा बंधु जिसकुं त्याग दिया होय

तिसका कर्म्मकांड करवानेका राजाकुं अधिकार है ॥६॥ अर्थः—पिताके मरणकालके समयमें पुत्र समीप नहीं होवे तो अन्यः नाम दूसरा कोई प्रेतक्रिया करानेका अधिकारी होय तिसके हाथसे दश दिनतकका कर्मकांड करवाना परन्तु सर्व कर्मकांड उसके हाथसे नहीं करवाना किंतु दश दिनसे उपरांतका कर्मकांड

स्यात्पत्न्यभावे सहोदरः ॥ उच्छिन्नत्यक्तबंधूनां कारयेदवनीपतिः ॥ ६ ॥ तथा च मनुः ॥
पित्रोर्मरणकाले तु न चेत्स्यात्सन्निधौ सुतः ॥ अन्यः कुर्याद्दशाहं च न च सर्वं कदाचन ॥
॥ ७ ॥ अथ प्रेतमेधविधिस्तत्कृत्यकर्तव्यता च लिख्यते ॥ तत्र प्राणप्रयाणसमये वैतरणी नदीतरणदानम् ॥ तस्यविधिः ॥ तत्र सन्निकृष्टमरणं ज्ञात्वा गोमयोपलिप्तायां भूमौ कुशं

पुत्रके हाथसे करवाना और सपिंडश्राद्ध ज्येष्ठ पुत्रके हाथसे करवाना श्रेष्ठ है, यह धर्मशास्त्रकी आज्ञा है, मनुभगवान्का वचन है ॥ ७ ॥ अथ प्रेतमेधः नाम प्रेतकी वेदोक्त विधिसे अंत्येष्टिदानपूर्वक वैतरणीनदीतरणदानादिक करना । अंत्येष्ठिमें तिलदानं १ लोहदानं २ हिरण्यदानं ३ कार्पासदानं ४ लवणदानं ५

सप्तधान्यदानं ६ पृथिवीदानं ७ गोदानं ८ ये अष्ट महादान हैं उत्तरोत्तर इनका अधिक पुण्य है। वैतरणीरूप दान करना गोमस्तके आतुरः स्वहस्तेन नाम दक्षिणहस्तेन कुशान् नीत्वा नाम कुशा मेलके वैतरणीतरणाय वैतरणी तीरनेके वास्ते काली गौ देनी श्रेष्ठ है। तत्र दानकर्त्ता प्राङ्मुखः पूर्वमुख करके

राच्छादितायांतदुपरिनिदध्यात् ॥ उत्तरशिरसिदक्षिणहस्तेनकुशंनीत्वावैतरणीतरणायगांदद्यात् ॥ तत्र प्राङ्मुखःकृताचमनः ॥ देवब्राह्मणान्संपूज्य ॥ कुशत्रयमादाय ॥ अद्येत्यादीतिवाक्यमुच्चार्यवैतरणीनदीतरणकामः इमांकृष्णांगांरुद्रदैवतांयथालंकारसहितामसुकगोत्रायामुकशर्मणेब्राह्मणायाहंसंप्रददे ॥ अथगोदानोत्तरंदक्षिणादानम् ॥ कृष्णगोदानप्रतिष्ठासं

आचमन करना पीछे देव देवता ब्राह्मणोंका पूजन करके स्वहस्ते कुशत्रयं आदाय नाम लेके और हस्ते जलाक्षतपुष्पमादाय पुनः मनसि हरिं स्मृत्वा कृष्णयुग्मवस्त्रद्वयेन गामाच्छादितां गले घंटायुक्तां चंदनपुष्पमालयालंकृतां पुच्छे मौक्तिकयुक्तां पूर्वाभिमुखां एतादृशीं गां अद्येत्यादिपूर्वकतिथ्यादिकीर्त्तनं कृत्वा

अमुकगोत्राय अमुकशर्मणे सुपूजिताय इमां गां अहं संप्रददे इति उक्त्वा जलं द्रव्यसहितं ब्राह्मण करे दद्यात् । गोदान करके पीछे ब्राह्मणकुं सुवर्णकी दक्षिणा देनी कारण दानोत्तर दक्षिणा दिये विना दानकी सिद्धि नहीं होती है इस वास्ते कौनसाभी दान करे तो दक्षिणा देना श्रेष्ठ है तथाहि कृष्णगोदानकी प्रतिष्ठाके वास्ते अग्नि देवता है जिसका ऐसा स्वर्ण रूपा दक्षिणा वा स्वर्ण नहीं होवे तो स्वर्णके मोल माफिक

सिद्ध्यर्थंदक्षिणांहिरण्यमग्निदैवतंतन्मूल्योपकल्पितंद्रव्यं अमुकगोत्रायामुकशर्मणेब्राह्मणाय वातुभ्यमहं संप्रददे ॥ उभयत्रस्वस्तीतिपठेत् ॥ ततोगोग्रहीताविप्रः कोदादितिमंत्रंपठेत् ॥

और द्रव्य ब्राह्मणकुं दक्षिणारूप करके देता हूं ऐसा वचन दाता पुरुष बोले तो श्रेष्ठ फल इस गोदानका होता है गोदान सुपात्रकुं देना परन्तु गोदान लेते विशेष ये हैं कि, गोदान लेके ब्राह्मण ऐसा वचन बोले कि स्वस्तिरस्तु परन्तु गोदानोत्तर दक्षिणा लिये पीछे स्वस्तिरस्तु इति ब्राह्मणो वदेत् कदाचित् गोदान दक्षिणा दान लेके ब्राह्मण स्वस्तिरस्तु ऐसा वचन नहीं बोले तो यजमानका किया दान निष्फल हो जाता

है परन्तु ब्राह्मण दान लेके कोऽदात् ऐसा वचन ब्राह्मण नहीं बोले तो दानसिद्धि नहीं होती है इस वास्ते यजमानका शुभेच्छु ब्राह्मणकुं कोऽदात् ऐसा बोलना श्रेष्ठ है। अब वैतरणीनदीकी प्रशंसा करता है। वैतरणीपै उष्ण नाम वायु बहुत चलती है परन्तु हिमाख्या नाम थंडी वायु बहुत चलती है हिमसे सौ-गुणी चलती है प्राणीके दुःखके वास्ते यह नदी है सो गोदान करनेसे दुर्ग नाम दुःख दूर हो जाता है

उष्णेवर्षतिशीतेवामारुते वातिवर्षति ॥ दुर्गंतारयतेयस्मात्तस्माद्वैतरणीस्मृता ॥ १ ॥ यम द्वारपथेघोरेघोरांवैतरणींनदीम् ॥ ततुकामःप्रयच्छामिकृष्णांवैतरणींचगाम् ॥ २ ॥ दक्षिणया सहदद्यात् ॥ अन्यदपिमोक्षधेनुंदद्यात्तत्रप्रार्थनामोक्षंदेहिहृषीकेश मोक्षंदेहिजगत्पते ॥ मो

इसवास्ते ताकुं वैतरणी कहते हैं। परन्तु यमके द्वारपथके विषें घोरा नाम करके वैतरणी नदी है उस वैतरणीके तिरनेकी वांछाके वास्ते अहं कृष्णां गां वैतरणीरूपां प्रयच्छामि नाम देता हूं और मोक्षरूपा धेनु देना और स्वर्णादि द्रव्य दान करना पीछे भगवान्की प्रार्थना करनी हे हृषीकेश मोक्षं देहि हे जग-त्पते मोक्षं देहि मोक्षधेनु दान करनेसे श्रीकृष्ण भगवान् प्रसन्न होवे पुत्रादिक दाह करनेके जो अधिकारी

हैं सो गतप्राणं शवं गया है प्राण जिसका इस माफिक जानके दहेत् गतप्राणस्य नाम गया प्राणवायु मालूम हुए पीछे उसकुं मृत्तिका नाम तीर्थरज मिलायके जलमें देहं प्रक्षाल्य स्नापयित्वा पश्चात् मृतकस्य नाम मृतकशरीरे सप्त ७ कनकखंडानि अमुकामुकस्थाने स्थापयेत् मुखे १ टुकडा सुवर्णका देय,

क्षधेनुप्रदानेनश्रीकृष्णस्तुप्रसीदतु ॥ ३ ॥ अन्यदपि यथाशक्ति गोहिरण्यादिकं दद्यात् ॥ एवं निरूप्य पुत्राद्यधिकारी गतप्राणं शवं ज्ञात्वा दहेत् ॥ अथ तत्र दाहप्रक्रिया ॥ ततो गतप्राणस्य मृत्तिकातोयाभ्यां देहं प्रक्षाल्य स्नापितस्य सप्तकनकखंडानि मुखे कर्णद्वये नेत्रद्वये नासापुटद्वये च सप्तसु छिद्रेषु प्रक्षिप्य सुवर्णखंडं मुखे प्रक्षिपेदिति वा ॥ परिधापितवस्त्रं ब्राह्मणस्य सोपवीतं स्रक्चंदनादिभिर्विभूषितं यत्तच्छरीरमाज्येनाभ्युक्ष्य पुत्रा

२ टुकडा कानोंमें देय, २ टुकडा नेत्रोंमें देय, २ टुकडा नासापुटद्वयमें इस माफिक सप्तच्छिद्रोंमें सुवर्ण स्थापित करना। अथवा केवल मुखे वा स्वर्ण स्थापयेत् पश्चात् वस्त्र नवीन पहराने जनेउसहित ब्राह्मणके

पुष्पोंकी माला वा तुलसीकी माला अथ चंदनसौगंधिकवस्तु शवके शरीरको लगाके शवशरीरकुं विभूषित करके पश्चात् आज्यनाम घृतकरके पुत्र प्रोक्षण करे स्मशानभूमीमें पवित्रभूमी देखना किंतु अस्थि केश भस्मरहित इस माफिककी जमीन देखके भूशोधन करके गोमयः नाम गोबरसे लेप देके ॐकारादि ईश्वरके नाम भूमीपै लिखके पश्चात् यज्ञमें तरनेवाले काष्ठकी चितां रचयेत् वा केवलचंदनकाष्ठेन चितां

दिभिः पवित्रभूभागे चंदनाद्युत्तमयज्ञियकाष्ठैश्चितां रचयित्वा तस्योपरि पुरुषमधोमुखमुदक्छिरसं च निदध्यात् ॥ नारींतूत्तानमुखदेहामुत्तरशिरस्कां च स्थापयेत् ॥ तत्र पुत्रादिः

रचयेत् यज्ञार्ह काष्ठ ये हैं अर्क आक पलाश नाम ढाक खैर उदुंबर नाम गुल्लर पीपल शमी नाम खेजडी ये पवित्र हैं रचितचितामध्ये पुरुषं अधोमुखं नाम ऊंधा धरके शेष काष्ठ ऊपर लगाना और उत्तरदिशाकी तरफ शवका शिर करना दक्षिणदिशातरफ पैर करना परन्तु स्त्रीकुं चितापै सूधी नाम ऊर्ध्वमुख उत्तरदिशामें शिर करके चितापै रखना पश्चात् जो कोई पुत्रादिके मध्यमें दाह करनेवाला है सो स्नान

करके पवित्र वस्त्र धारके अपसव्य होके अग्निकुं लायके दक्षिणमुख करके मंत्र पढे। परन्तु ऊंधासूधा जलाना कोई देशमें प्रसिद्ध नहीं है इसवास्ते ये वार्त्ता लोकविरुद्ध है सो नहीं करना बहुत ऋषियोंकी संमति नहीं है। सुदुष्कर कर्म जानके अथवा अजानके करके मृत्युकालके वशमें प्राप्त होके यह जो नर था

स्नानंकृत्वा नूतनवस्त्रादिपरिधाय्यापसव्येनाग्निमादायदक्षिणमुखोमंत्रमुदीरयेत् ॥ दुर्जनानां प्रसंगेन दुष्टबुद्धितया मया ॥ कृत्वासुदुष्करंकर्म जानता वाप्यजानता ॥ मृत्युकालवशं प्राप्य नरं पंचत्वमागतम् ॥ १ ॥ धर्माधर्मसमायुक्तं लोभमोहविवर्जितम् ॥ दाहेनसर्वगात्राणां दिव्याँल्लोकान्स गच्छतु ॥ २ ॥ पुरुषस्य स्त्रियो वापि अग्निदाहमसंभवे गृहीत्वात्वम

सो पंचत्व नाम मृत्युकुं प्राप्त भया ॥ १ ॥ धर्माधर्म करके यह प्राणी युक्त है अभी लोभ मोह करके रहित है सो हे अग्निदेव ! सर्वगात्रसहित इसकुं दग्ध करो और स्वर्गमें यह प्राणी प्राप्त होवो ॥ २ ॥ पुरुषके अथवा स्त्रीके अग्निदाहका असंभवमें आप गृहीता हो आप ईश्वरते उत्पन्न हो पुनः नाम पश्चात् तुमारेसे

यह प्राणी उत्पन्न भया है ॥ ३ ॥ एवं उक्त्वा प्राणीके शिरःस्थानमें प्रथम अग्नि लगाना और दारिद्रपुरुषकुं नहीं दग्ध करना कारण दरिद्री विशेष पापी होता है सो विचारके दग्ध करना और आपदाके कारणसे नग्न होवे तो नग्नकुं वस्त्रसहित करके दग्ध करना ॥ ४ ॥ जैसे तैसे वस्त्रके खंडसे आच्छादित करके प्रयत्नसे

सिजातस्त्वं तदयं जायतां पुनः ॥ ३ ॥ एवमुक्त्वाशिरः स्थाने वह्निंदद्याद्विचक्षणः ॥ दारि द्रोपिनदग्धव्योनग्नः कस्यांचिदापदि ॥ ४ ॥ केनापिवस्त्रखंडेनछादितव्यःप्रयत्नतः ॥ यत्रत त्रभवेदुःखीयदिनग्नस्तुदह्यते ॥ ५ ॥ निःशेषस्तुनदग्धव्यःशेषांकिंचित्त्यजेत्ततः ॥ असौ स्वर्गलोकायस्वाहा इति ॥ अथ द्वितीयमंत्रः ॥ क्रव्यादमग्निंप्रहिणोमिदूरंयमराज्यंसगच्छतु

दरिद्रीकुं कदाचित् कोई नवीन वस्त्र लपेटे विगर कोई दग्ध करे तो किंचित् शरीर शेष रखना ये धर्म्ममर्यादा है इसकुं स्वर्गलोकके वास्ते स्वाहा करना ये पौराणमंत्र है । परंतु स्वदेशे निषिद्धपरिपाटियोंकुं त्यागके श्रेष्ठ शास्त्रीय विधिकुं धारना ये सज्जनलोगोंकी रीति है । अथ द्वितीयमंत्र पढके पश्चात् एकवार चुप हो जाना

पीछे अग्निकी प्रदक्षिणा चार ४ करके शिरको अग्नि लगाना पश्चात् क्रव्यादरूप अग्निकुं नमस्कारं कृत्वा
चितामें सप्त समिध घृतसे भिजोयके डालना पश्चात् तृणकाष्ठादि करके घृत चितामें परिक्षेपण करना दग्ध

रिप्रवाहः ॥ इहैवायमितरोजातवेदादेवेभ्योहव्यंवहतुप्रजानयत्स्वाहा ॥ तूष्णींवा ॥ इमं
मंत्रमुदीर्यशीघ्रंप्रदक्षिणंविधायज्वलदग्नेः शिरोदेशेदानम् अवशिष्टंशरीरभागमंभसिक्षिपेत् ॥
ततः ॥ क्रव्यादायनमस्तुभ्यंस्वर्गवासप्रदाय चेतिमंत्रेणशवंप्रदक्षिणीकृत्यचितायांसप्तस
मिधः क्षिपेत् ॥ ततः तृणकाष्ठादिघृतंपरिक्षिप्यदग्ध्वाकिंचिदवशेषयेत् ॥ अवशिष्टंशरी
रभागमंभसि क्षिपेत् ॥ अथ पर्णशरदाहविधिः ॥ अथाचारान्निरग्नेरस्थिपर्णशरदाहः ॥

करते करते किंचित् शेष रखना पीछे शेषकुं गंगादि नदी नजीक होवे तिसमें डालना परंतु जलाभावे तु
सर्वं दहेत् ॥ अब पर्णशरदाहविधि कहते हैं ॥ लोकाचारसे कोई अग्निरहित शरीरका अस्थि मिले तो लाके

२

पर्णदाह करना दग्ध करने लायक शरीर साबुत नहीं मिले तो उसका अस्थि लावै पीछे घृतमें भिजोयके वस्त्र लपेटके दग्ध करना पूर्ववत् परंतु अस्थि उसका नहीं मिले तो तीन सौ साठ ३६० पलाशके पत्ते लेके मनुष्यकी सदृश बनायके असौ स्वर्गाय लोकाय स्वर्गलोक प्राप्त होनेके अर्थ स्वाहा इति कृत्वा दहेत् नाम दग्ध

दाह्यशरीरालाभेतदस्थिघृतेनाभ्युक्ष्यवस्त्रेणाच्छाद्यदहेत्पूर्ववत् ॥ अस्थ्यलाभेषष्ट्यधिकप लाशपत्रशतत्रयेण ३६० पुरुषाकृतिंविन्यस्यासौस्वर्गायलोकायस्वाहेतिदहेत् ॥ प्रथमतः शिरोनिवेश्य शरखंडद्वयेन जंघाद्वयं कृष्णसारचर्मोपरिऊर्णासूत्रैर्ग्रंथितैः पलाशपत्रैर्वृत्तेर्वावे ष्टय शिरः यवचूर्णेनविलिप्यकृष्णसारचर्मणाच्छाद्यपूर्ववद्दहेत् तद्विन्यासप्रकारस्तु शि

करना ये विधि जिसकुं सिंहादि पशु वा शत्रु मार डाले खबर नहीं पडे तब उस पुरुषकी प्रतिनिधि करना तिसका ये क्रम है । प्रतिनिधिका पूतला बनाना प्रथम शिर बनाना पश्चात् शरका दो डोका लेके जंघाद्वयं कालेमृगकी चर्म शरके ऊपर लपेटके ऊपरसे ऊर्णासूत्र लपेटना भीतर पलाशका पत्र लगाना शिरके यवचू-

र्णके जलसे संबंध करके नाम जौंका चून ओसनके लगाना मृगचर्म लपेटना ऊपरसे ऊर्णासूत्र लपेटना अनया रीत्या हस्तादिसर्वशरीरं विधाय । पश्चात् मनुष्यवत् पूर्वविधिसे दहेत् प्रतिनिधिके पूतलेमें पलाशके पत्र इस माफिक देना शिरकी जंघा ४० पत्रा, ग्रीवाकी जंघा दश १० देना, दोनों हाथोंमें शतं १००

रस्यशीत्यर्द्धंदेयाद्ग्रीवायांचदशैवतु ॥ बाह्वोश्चैवशतंदद्यादंगुलीषुतथादश ॥ उरसित्रिंशतं दद्याद्विंशतिंजठरेतथा ॥ अष्टार्द्धंशिश्नकेदद्याद्दशार्द्धंमुष्कयोस्तथा ॥ ऊर्वोश्चैवशतंदद्या त्रिंशतंजानुजंघयोः ॥ पादांगुलीषुदशकमेतत्प्रेतविकल्पनम् ॥ स्नपयित्वा च दग्धव्यं धर्मं मार्गं विजानता ॥ एवंपर्णशरंदग्ध्वात्रिरात्रमशुचिर्भवेत् ॥ इति पर्णशरदाहविधिः ॥ अथ

देना, हस्तकी अंगुलियोंमें दश १०, हृदयमें तीस ३० देना, पेटमें विंश २० देना, चार ४ शिश्नमें, पांच ५ पोतावजामें, दोनों जांघोंमें शत १०० देना गोडापीडियोंमें त्रिशत ३० देना, पगकी अंगुलियोंमें दश १० देना, इस प्रमाण पूतला बनाके यथाविधि दग्ध करना एवं नाम सर्व पूर्वोक्तविधिसे पर्ण शरदग्ध किये पीछे

त्रिरात्र अशुचिर्नाम शौचवान् होता है परंतु चिताकुं पीछे फिरके नहीं देखना जलाशयकुं जान बालकोंकुं अगाडी लेके आप सर्वकुटुंबवाले अगाडी होके जलके स्थानपै बालकोंकुं अगाडी प्राप्त करके पीछेसें सर्वकुं जाना उचित है। मार्गमें यमगाथा कहता जाना और वार्त्ता छोड देना। यमगाथा क्या दिन दिन

चितामपश्यन्जलाशयं प्रति सर्वबालानग्रेनीत्वायमगाथांगायमानागच्छेयुः ॥ यमगाथा यथा ॥ अहरहर्नीयमानोगमश्वपुरुषंपशून् ॥ वैवस्वतोत्तरतृप्येतसुरनदुर्मतिरिति तज्जलांतरेसर्वेएकवस्त्राएकवारं निमज्जेयुस्तत्रस्नात्वाचम्यापसव्यंकृत्वा द्विगुणभुग्नकुशत्रयेणपितृतीर्थेनप्रेतमनुध्यायन् अमुकगोत्रममुकशर्माणंप्रेतंतर्पयामीतिप्रयोगः ॥ अथ भिन्नप्रयो

सर्व क्षीयमाण है निश्चय गमन है पुरुष पशुको यमराज ले गये विना तृप्त नहीं होता है सो यमराजकी दुर्मति नहीं किंतु प्रेताधिप है पश्चात् सर्वे एकवस्त्रेण जले स्नात्वा सपिंडाः सप्तपिढीतकके चौदह पिढीतकके समानोदक एकां एकां जलांजलिं तिलसहितां पूर्वाभिमुखा अपसव्येन प्रेतं ध्यायन् दद्यात् पुत्रे तु विशेषः

सप्तांजलीन् दद्यात् अमुकगोत्र अमुकशर्मा प्रेतकुं तृप्त करते हैं ऐसे दो टुक करी हुई दर्भत्रयसे अमुकगोत्र अमुकप्रेत एष तिलतोयांजलिर्मद्दत्तस्तवोपतिष्ठतां इति वचनं वदेत् दक्षिणाभिमुखाः दक्षिणदिशाकी तरफ मुख करके तिलसहित अंजलि देना पश्चात् जलसे बाहर निकसके वस्त्र पहरके स्वगृहे गच्छेयुः। परंतु अपने

गः ॥ तिलसहितांजलिंदद्युः सर्वेपुत्रादयः क्रमादिति ॥ अमुकगोत्रामुकप्रेतएषतिलतो यांजलिर्मद्दत्तस्तवोपतिष्ठताम् ॥ दक्षिणाभिमुखाएकैकंसतिलमुदकांजलिंसर्वेदद्युः ततोज लादुत्तीर्यवस्त्रंपरिधाय गृहंप्रविशेत् ॥ अथ गृहाभ्यंतरेवाद्वारेवा दीपदानंघृतेनतिलतैलेन वाअपसव्येनवाक्यं अद्यामुकगोत्रामुकप्रेतयममार्गानुसंतरणायघोरांधकारनिवारणकामोऽ द्यारभ्यदशादिनपर्यंतमनिशंतिलतैलबोधितवर्तिसंयुक्त एषदीपः प्रज्वालितोमद्दत्तस्तवोप

घरके द्वारपै अथवा घरके अभ्यंतर दीपक करना घृतसे वा तिलतैलसे पुनः अपसव्यं कृत्वा हस्ते जलमादाय अद्यामुकगोत्र अमुकप्रेत यममार्गतरणअंधकारदुःखनिवृत्तये दशदिनपर्यंतं अखंडतिलतैलयुक्तं दीपदान एष

प्रज्वलन् मद्दत्तस्तवोपतिष्ठताम् इति जलं पृथिव्यामुत्सृजेत् । इति दीपदानम् ॥ अथ द्वितीयदिनसे लेके दशरात्रिपर्यंत सायंकाले वा प्रातःकाले पीपलके समीप जलदान और दीपदान देना प्राणीकी तुष्टिके वास्ते तत्र क्रमः । घटे जलं पूरयित्वा घटके पिंदामें छिद्र करके वस्त्रके टुकडोंसे बंद करके तिल घटमध्ये गेरके

तिष्ठताम्॥अथद्वितीयदिनमारभ्यदशरात्रावच्छिन्नप्रातःसायंकालेपिप्पलसमीपेजलदीपदानंचदद्यात्।ततोऽश्वत्थशाखावलंबितजलपूर्णघटवाक्यम्। अद्यामुकगोत्रामुकप्रेतएषत्वद्गताध्वतापश्रमविनाशकोऽशौचांतदिनपर्यंतमश्वत्थशाखावलंबितजलपूर्णघटः सतिलस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठतांसायंकालेदीपवाक्यम् । अद्याशौचान्तदिनपर्यंतममुकगोत्रामुकप्रेतयम

पीछे पीपलकी शाखाके छिंका बांधकर घटकुं छिंकापै स्थित करके जरा टोपा जलका पडे तैसा करना पश्चात् स्वहस्ते जल लेके वाक्य उच्चार करना अद्यामुकगोत्र अमुकप्रेत अध्वपरिश्रमविनाशाय दशदिनपर्यंतपिप्पलशाखावलंबितजलपूर्णघटः सतिलस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठतां इति पठित्वा स्वहस्तजलं भूमीपै

डालना । सायंकालके समयमें पिप्पलके समीप दीपदान करना दशदिन पर्यंत तत्र वाक्यं हस्ते जलं गृहीत्वा अद्याशौचांतदिनपर्यंतं अमुकगोत्र अमुकप्रेत यममार्गानुसंतरणघोरांधकारदुःखनिवारणार्थं पिप्पलसमीपे एष दीपो मद्दत्तस्तवोपतिष्ठतां इत्युच्चार्य हस्तजलं भूमौ क्षिपेत् ऐसा बोलना यह जो दीप हम देते हैं सो तेरेकुं प्राप्त होवो । परंतु क्रियाकर्त्ता पुमान् स्वबांधवान् संग लेके तडागपै तथा कोई नदी होवे तो

मार्गानुसंतरणघोरमिश्रांधतमःसंतरणार्थंकामःपिप्पलसमीपे एषदीपोमद्दत्तस्तवोपतिष्ठताम् ॥ अथ बांधवैः सहतडागेनद्यादौवागत्वादशरात्रमात्मशुद्ध्यर्थंप्रत्यहं स्नानंचकुर्यात् क्रियामुपविशेत् अलवणमेकवारमेकभुक्तंस्वयंपाकम् ॥ अथ पिंडदानप्रक्रिया ॥ अन्यगोत्रसगो

नदीपै प्रातःकाल लेके जाना अत्र देशमर्यादा लेना पश्चात् जलमें सर्व बंधुजनसहित वा स्वयं केवल वा दशदिनपर्यंत आत्मशुद्धि होनेके वास्ते स्नान करना पश्चात् क्रियापै बैठना दिनके पराह्नसमयमें एकवार भोजन लवणवर्जित करना । जो कर्म करनेवाला अन्य गोत्रका हो अथवा स्वगोत्रका होय अथवा स्त्री होय

वा पुरुष होय जो प्रथम दिन प्रेतकर्म करावे उसके हाथसे दशदिनपर्य्यंत पिंडदानादिक करवाना अर्थात्
एकादशके दिन दूसरेके हाथसे करवानेमेंभी कुछ दोष नहीं पिंड चावलोंके चूनका करके वा जौके सत्तुका
करना फकत जौके चूनकाही करना श्रेष्ठ है किसकुं चून नहीं मिले तो शाक उबालके उसीकाही पिंड देना

त्रीवा नारीवायदिवापुमान् ॥ प्रथमेहनियोदद्यात्सदशाहंसमापयेत् ॥ शालिनासक्तुभिर्वापि
शाकैर्वापिचनिर्वपेत् प्रथमेहनियद्द्रव्यं तदेव स्याद्दशाह्निकम् ॥ २ ॥ षोडशश्राद्धानितुपु
त्रेणैवकर्तव्यानीतिसिद्धम् ॥ प्रथमेचतृतीयेवापंचमेसप्तमेतथा ॥ नवमेदशमेचैवपिंडदानंप्र

श्रेष्ठ है परंतु प्रथमदिनमें जो जो जिनस पिंडमें डाले सोई दशदिनतक डालना न्यूनाधिक नहीं करना परंतु
दशाह्निक कर्मपिंड प्रथम दिनसे आरंभ करना या तृतीयदिनसे आरंभ करना या पंचमदिनसे आरंभ करना
या सप्तमदिनसे या नवमदिनसे या दशवेंही दिन सर्व पिंड देना ये अतिआलस्यवानके वास्ते है नतु धर्मज्ञा-

नाम् । परंतु दशवें दिन उडदके चूनका पिंड करके भैंसका दुग्ध गुड अंतर डालके पिंड देना ॥ अथ नव-दिनके नवपिंडसे प्राणीका पिंडरूप शरीर पैदा होता है । प्रथम दिन निमित्तक जो पिंड देते हैं तिस करके शिर बनता है । द्वितीय दिनके पिंडसे कर्णः नाम कान आंख नाक ये तीन बनते हैं । तृतीय दिनके पिंडसे

कीर्तितम् ॥१॥ शिरस्त्वाद्येनपिंडेनप्रेतस्यक्रियतेसदा ॥ द्वितीयेनतुकर्णाक्षिनासिकासुसमासतः ॥ गलांसभुजवक्षांसितृतीयेनतथाक्रमात् ॥ चतुर्थेनतुपिंडेननाभिलिंगगुदानिच ॥ जानुजंघेतथापादौपंचमेनतुसर्वदा ॥ सर्वमर्माणिषष्ठेनसप्तमेनतुनाडयः ॥ दंतलोमाद्यष्टमेनवी

गलो अंसः नाम कांधा भुजा छातीतक शरीर बनता है और चतुर्थ दिनके पिंडसे नाभि लिंग गुदा उत्पन्न होती हैं परंतु पंचम दिनके पिंडसे गोडा जांघ पग पैदा होता है । और षष्ठ दिननिमित्तक पिंडसे सर्व मर्म-स्थान पैदा होता है और सप्त दिनके पिंडसे नाडी मात्र पैदा होती हैं अष्टम दिनके पिंडसे दंत रोमावली

पैदा होती हैं नवमदिनके पिंडसे वीर्य पैदा होता है दसवें दिनके पिंडसे क्षुधा तृषा निवृत्त होती है। स्त्री सती होनेके वास्ते पतिके संग एक चितामें दग्ध हो जावे तब दोनोंका पिंडदान करनेके वास्ते पाक तो एक पात्रमें करना और पिंड पृथक् पृथक् देना पृथिवीपै कुशाका तृण मध्यभागमें रखके और कुशतृणपै पिंड

यैतुनवमेनच ॥ दशमेनतुपूर्णत्वंक्षुधातृष्णाविपर्ययात् ॥ इति ॥ वृद्धगार्ग्यः ॥ पतिपत्निस मायुक्तौदहत्येकहुताशने ॥ पाकमेकंप्रकुर्वीतपिंडंदद्यात्पृथक्पृथक् ॥ सिद्धमन्नंकृत्वाशुचौ भूभागेकुशोपरिपिंडंदद्यात् ॥ अद्यामुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्यप्रथमदिनसंबंधिशिरःपूरकपिंड दानादिक्रियामहंकरिष्ये एवं सर्वमंत्रप्रतिज्ञांकृत्वा प्रथमः शिरःपूरकापिंडः ॥ १ ॥ कर्णाक्षि नासिकापूरकोद्वितीयः ॥ २ ॥ गलांसभुजवक्षसांपूरकस्तृतीयः ॥ ३ ॥ नाभिलिंगगुदपूरक

देना। अमुक गोत्र अमुक प्रेतके पिंडज शरीर होनेके वास्ते प्रथम दिनके पिंडसे प्राणीका शिर पैदा होता है द्वितीय दिनके पिंडसे कर्ण आंख नासिका पैदा होती हैं. तृतीय दिनके पिंडसे गला कांधा भुजा वक्षस्थलतक शरीर पैदा होता है. चतुर्थ दिनके पिंडदानसे नाभि लिंग गुदा पैदा होता है पंचम दिनके पिंडदानसे

गोडा जंघा पग पैदा होता है. षष्ठ दिनके पिंडदानसे सर्व मर्मस्थान पैदा होता है. सप्तमदिनके पिंडदानसे सर्व नाडी पैदा होती हैं. अष्टम दिनके पिंडसे नख रोमावली दांत पैदा होते हैं. नवम दिनके पिंडसे प्राणीके वीर्य पैदा होता है. दशम दिनके पिंडसे क्षुधा तृषा निवृत्त होती हैं. परंतु पिंडदान दश दिन देना कहा है

श्चतुर्थः ॥ ४ ॥ जानुजंघापादपूरकः पंचमः ॥ ५ ॥ सर्वमर्मणांपूरकः षष्ठः ॥ ६ ॥ सर्वनाडी पूरकः सप्तमः ॥ ७ ॥ नखलोमदंतपूरकोऽष्टमः ॥ ८ ॥ वीर्यपूरकोनवमः ॥ ९ ॥ संपूर्णगात्र क्षुत्पिपासाविपर्ययपूरकोदशमः ॥ १० ॥ तृतीयेह्नि पिण्डत्रयंसप्तमेह्नि चत्वारः दशमेह्नि त्रयः॥अथ दशगात्रविधिः॥पुत्रादि मृन्मयेननूतनभांडेन जलमानीय ग्रामाद्बहिर्देवतायतनेगृ

पर उसमें यहभी एक विशेष वार्त्ता है. तृतीय दिन पिंड ३ देना सप्तम दिन पिंड ४ देना दशम दिन पिंड ३ देना. अब दशगात्रविधि कहते हैं. पुत्रादिक जो कर्मकांड करनेवाला होवे सो प्रथम पिंडपातनके अर्थ गौरमृत्तिकाकी वेदी बनावे दक्षिणतरफ नीचे रखे पीछे पिंडोंके वास्ते मृत्तिकाके पात्रमें तंदुल दो

मुष्टि पचाना वेदीपै गोमय लेप करना अपसव्य होके दक्षिणमुख बैठे बांया गोडा मुडाके रखे पश्चात्
हाथमें पानी लेके अमुक गोत्र अमुक प्रेत शिरःपूरकपिंडासनपै अवनेजन मैं देता हूं सो तेरेको प्राप्त होवो

हृद्वारिवाशुचितीरेवा ईशानेऽग्निप्रज्वाल्यप्रसृतिद्वयंतंडुलान्स्वयं पचेत् दक्षिणप्रवणगौरमृ
त्तिकया पिंडार्थवेदीं निर्माय अपसव्यं॥ दक्षिणाभिमुखः पातितवामजानुः पिंडस्थानोपरि द
क्षिणाग्रंकुशत्रयमास्तीर्य पुटकादौ जल तिल गंधपुष्पपाणिप्रक्षिप्य तत्पात्रंवामहस्ते कृत्वा मोद
कतिलजलान्यादायअद्यामुकगोत्रपितरमुकप्रेतइदंशिरःपूरकपिंडासनावनेजनं तेमयादीयते
तवोपतिष्ठतां इति कुशत्रयोपरि अवनेजनं दद्यात्॥ अद्यामुकगोत्रामुकप्रेतएषशिरःपूरकपिंड
स्तेमयादीयते तवोपतिष्ठतां। ततः पिंडोपरि प्रत्यवनेजनजलंदद्यात् अद्यामुकगोत्रामुकप्रे

पीछे पिंड हाथमें लेना मोदकतिलसहित अमुकगोत्र अमुकप्रेत इदं यह शिरःपूरक पिंड हम देते हैं सो तेरेकुं
प्राप्त होवो पश्चात् पिंडपै अवनेजन जल देना। अमुकगोत्र अमुकप्रेतकुं शिरःपूरकपिंडपै प्रत्यवनेजनजल मैं

देता हूं सो तेरेकुं प्राप्त होवो अब ।पिंडपूजन कहते हैं ।पिंडके ऊपर ऊर्णासूत्र रखना महाशीत निवारणके वास्ते ।पिंडके ऊपर उशीर गोपीचंदन रखना सुखके वास्ते पिंडके ऊपर भृंगराजपत्र रखना आनंदके वास्ते ।पिंडके समीप राळका धूप करना दुर्गंधनरक निवारणके वास्ते पिंडके पास दीपक रखना यमके द्वारमें महा-

तइदंशिरःपूरकपिंडमत्स्यवनेजनजलंतेमयादीयतेतवोपतिष्ठतां ॥ अथपिंडपूजनम् । ऊर्णासूत्रोशीरचंदनभृंगरापत्रधूपदीपादिभिःपिंडमर्चयेत् ऊर्णासूत्रंदद्यात् उशीरचंदनंदद्यात् भृंगराजपत्रं दद्यात्रालधूपंदद्यात अमुकगोत्रामुकप्रेतएषदीपोमदत्तस्तवोपतिष्ठताम् ॥ यमद्वारेमहाघोरेअंधेनतमसावृते ॥ तत्रावलोकनार्थायदीपोयमुपतिष्ठताम् ॥ अमुकगोत्रामुकप्रेतएषनैवेद्यो

घोर अंधकार है घोरद्वार है सो उस द्वारपै चांदना दीपदानसे हो जाता है यह दीपक महाघोर यमद्वार है तहां चांदना करता है परंतु ।पिंडके पास नैवेद्य अन्नका रखना ऐसा बोलना मैं नैवेद्य देता हूं सो तेरेकुं

प्राप्त होवो। फिर हाथमें मोटक जल तिल लेना अमुकगोत्र अमुकप्रेत ये जो ऊर्णासूत्र उशीर चंदन भृंगराजपत्र रालधूप दीप मैं देता हूं सो तेरेकुं प्राप्त होवो. इस माफक बोलके पिंडपै जल तिल अंगुष्ठद्वारा रखना. अब पिंडके समीप तिलजलपात्र रखना हाथमें तिलजलपात्र लेके मोटकतिलजल लेके अमुकगोत्र

महदत्तस्तवोपतिष्ठताम् ॥ अद्यामुकगोत्रामुकप्रेतएतेऊर्णासूत्रोशीरचंदनभृंगराजपत्ररालधूपदीपास्तेमयादीयंतेतवोपतिष्ठताम् ॥ अथ तिलतोयपात्रदानम् ॥ अद्यामुकगोत्रामुकप्रेतक्षुत्पिपासानिवृत्तिपूर्वकमिदंतिलतोयपात्रंतेमयादियते तवोपतिष्ठताम् ॥ प्रथमपिंडेएकंतिलतोयपात्रं॥ द्वितीयेतिलतोयपात्रद्वयम् ॥ एवंतृतीयादिषुप्रत्यहमेकंतिलतोयपात्रंवर्द्धयेत्॥

अमुकप्रेत क्षुत्पिपासा निवृत्त होनेके वास्ते यह जो तिलतोयपात्र मैं देता हूं सो तेरेकुं प्राप्त होवो. ऐसा वचन बोलके पिंडके समीप तिलतोयपात्र रख देना प्रथम पिंडके तो एकहि तिलतोयपात्र रखना द्वितीय दिनके पिंडके द्वय २ तिलतोयपात्र रखना तृतीय दिनके पिंडके त्रय ३ तिलतोयपात्र रखना ऐसेही दश

दिनके पिंडोंपै एक एक नित्य बधाके तिलतोयपात्र रखना ॥ ये दश गात्रोंके पिंडोंमें क्रमसे रखना अव मरणदिनसे लेके त्रयदिनतक सायंसंध्याकालमें नीरक्षीरपात्र रखनेका क्रम कहते हैं काष्ठके तीन ३ लकडी

ततस्त्रिकाष्ठिकायांअद्यामुकगोत्रामुकप्रेतअत्रस्नाहि इदंपिब। श्मशानानलदग्धोसिपरित्यक्तो सिबांधवैः॥इदंक्षीरमिदंनीरमत्रस्नाहिइदंपिब॥तेमयादीयतेतवोपतिष्ठताम् ॥इदमन्नंभुंक्ष्वइदं माल्यंपरिधेहि अथवा संध्याकालेगोमयोपलिप्तायांभूमौत्रिकाष्ठिकायांसमारोप्यतदुपरिमृन्मयपात्रद्वयेपत्रपुटेवाजलंक्षीरंचनिधायमाल्यंदीपंचधृत्वासंकल्पयेत् ॥ पूर्ववाक्येनप्रथमेह्निएकंतिलांजलिंद्वितीयेद्वौतृतीयेत्रीन् चतुर्थादिषुएवंवर्द्धमानांस्तिलांजलीन् दद्युः ॥

लेके ऊपर वंध सूत्रका लगाके चौरस्तेमें गोबरका लेप देके तीन ३ लकडी उभी करके स्थापन करना उसीके ऊपर मृण्मय पात्र दो रखे एक तो दूधका एक जलका और नीचे दीपक रखना और पात्रोंके ऊपर पुष्पमाला रखना पीछे जल हाथमें लेके अपसव्य होके बोले अमुकगोत्र अमुकप्रेत अत्र नाम यहां दुग्धपान

करो जल पीवो हे प्रेत ! तू श्मशानकी अग्निसे दग्ध हुवा है बांधव तेरेकुं त्याग कर गये हैं सो अभी तू यह क्षीर है तिसकुं और जल है तिसकुं तू पानकर हम तेरेकुं देते हैं सो तेरेकुं प्राप्त होवो और बलिदानका यह अन्न है तिसकुं भोग और मालाकुं पहर इस माफिक संकल्प पहले बोलके प्रेतके अर्पण करना इसी तरहसे तीन ३ दिनतक दीपक अन्न माला नीर क्षीर पात्र देना । प्रथम दिनमें एक तिलतोयांजलि देना द्वितीय दिन दो तिलतोयांजलि देना तृतीय दिन त्रय३ तिलतोयांजलि देना और चतुर्थादि दशदिनपर्यंत एक

अद्यामुकगोत्रामुकप्रेतएषतिलतोयांजलिस्तेमयादीयतेतवोपतिष्ठताम् ॥ एवंद्वितीयेकर्णाक्षिना

एक तिलतोयांजलि बढती देना यह शास्त्रविहित है परंतु केचित्के मतमें दिन दिनप्रति दशदिनतक दश दश अंजलि वर्द्धमान देना यह क्रम देशांतरमें प्रसिद्ध है परंतु मुख्य विधि तो एकैक वर्द्धमान देनेका है हाथमें जल तिल मोटक लेके अमुकगोत्र अमुकप्रेत एष तिलतोयांजलि मैं तुमकुं देता हूं सो तेरेकुं प्राप्त होवो इति प्रथमदिन पिंडदानविधि. इस माफक द्वितीय दिन कर्णाक्षिनासिकापूरक पिंड मैं देता हूं सो तेरेकुं प्राप्त

होवो तृतीय दिन गला कांधा भुजा छाति इनका पूरक पिंड हम देते हैं सो तेरेकुं प्राप्त होवो चौथे दिन नाभि लिंग गुदाका पूरक पिंड हम देते हैं सो तेरेकुं प्राप्त होवो पंचम दिन गोडा जंघा पगपूरक पिंड हम देते हैं सो तेरेकुं प्राप्त होवो। षष्ठ दिन सर्व मर्मस्थानोंका पूरक पिंड हम देते हैं सो तेरेकुं प्राप्त होवो सप्तम

सिकापूरकपिंडस्तेमयादीयतेतवोपतिष्ठताम् ॥ सर्वंपूर्ववत् ॥ तृतीयेगलांसभुजवक्षसांपूरकः पिंडः॥चतुर्थेनाभिलिंगगुदपूरकःपिंडः।पंचमेजानुजंघापादपूरकः पिंडः। षष्ठेसर्वमर्मपूरकापिंडः।सप्तमेसर्वनाडिकापूरकापिंडः। अष्टमेनखलोमदंतपूरकापिंडः।नवमेवीर्यपूरकापिंडः। दशमेऽह्निक्षुधातृषापूरकापिंडस्तेमयादीयतेतवोपतिष्ठताम् ॥ एवंक्रमेणपूर्ववद्दद्यात् एवंदशदि

दिन सर्वनाडिकापूरक पिंड हम देते हैं सो तेरेकुं प्राप्त होवो अष्टम दिन नख रोमावली दांतोंका पूरक पिंड हम देते हैं सो तेरेकुं प्राप्त होवो नवम दिन वीर्यपूरक पिंड हम देते हैं सो तेरेकुं प्राप्त होवो दशम दिन क्षुधा तृषा-

निवारक पिंड हम देते हैं सो तेरेकुं प्राप्त होवो इस माफक दश दिनके कर्ममें अवनेजन पिंडदान फिर अव-नेजन वर्द्धमान तिलतोयपात्रदान करने फिर हाथमें जल लेके अमुकगोत्र अमुकप्रेत शिर आदि सर्वांगपूरक पिंडोंकी सांगता सिद्धिके अर्थ एक पल प्रमाण लोहकी दक्षिणा अथवा दक्षिणाके मोलका द्रव्य यथानामगो-

नानिअवनेजनंपिंडदानं पुनरवनेजनंवर्धमानतिलतोयपात्रदानंतिलतोयांजलिंचक्षीरनीरपात्राणिचदद्यात् दक्षिणादानंच ॥ अद्यामुकगोत्रामुकप्रेतशिरआदिसर्वांगपूरकपिंडसांगतासिद्ध्यर्थं दक्षिणां पलमेकं लोहंतन्मूल्योपकल्पितंद्रव्यंवायथानामगोत्रायब्राह्मणायमद्दत्तं तवोपतिष्ठताम् ॥ अनादिनिधनोदेवः शंखचक्रगदाधरः । अक्षय्यः पुंडरीकाक्षःप्रेतमोक्षप्र

त्रवाले ब्राह्मणकुं हम देते हैं सो तेरेकुं प्राप्त होवो । पिंडदानविधि करके पश्चात् अनादिभगवान् स्थानरूप शंखचक्रगदाकूं धार रखी है ऐसा अक्षयरूप पुंडरीकाक्ष नारायण प्रेतकी मोक्ष देनेवाले होवो पीछे सो अपने कुलकी रीति हो सो करना बालकोंको अपने अगाडी करके ग्राममें प्रवेश करना पीछे अपने घरके

दरवाजापै थमके निंबपत्रकुं स्पर्श करके आचमन करके और जलकुं और अग्निकुं स्पर्श करके ब्राह्मण शुद्ध हो जाता है और क्षत्रिय वाहनकुं स्पर्श करके शुद्ध होता है वैश्य प्रतोदकुं स्पर्श करके शुद्ध होता है शूद्र लाठीकुं स्पर्श करके शुद्ध होता है परंतु जिस दिन प्राण छोडे उसी दिन अपने खानेकुं पाक नहीं

दोभव । कुलधर्मसमाचरेत् बालानग्रेकृत्वाग्रामंप्रविशेयुः तत्रद्वारेनिंबपत्राणिस्पृष्ट्वाचम्य ॥ जलमग्निंस्पृष्ट्वाब्राह्मणः शुद्धचेत् ॥ क्षत्रियोवाहनायुधम् ॥ वैश्यः प्रतोदम् ॥ शूद्रोयष्टिं स्पृष्ट्वाशुद्धचेत् ॥ तस्यांरात्रौनपाकःकर्तव्यः बालवृद्धातुरान्वर्जयित्वा उपवासः सर्वेषां त्रिरात्रमक्षारलवणम् एवंदशदिनानि तत्रब्राह्मणस्यदशमदिनेदशमपिंडोदेयः ॥ क्षत्रियस्यद्वादश

करना बालक और वृद्ध और बीमार पडा हो तिनके वास्ते तो भोजन पकाना और सर्वकुं उपवास करना कहा है । जो क्रिया करवानेवालेकुं तीन ३ रात्रितक खार लौन ये दो जिनस नहीं खाना एवं नाम ऐसेही दश दिनतक नहीं खावे तो अच्छा है अब और कहते हैं ब्राह्मणकुं दशम दिन दशवां पिंड देना कहा है

परंतु क्षत्रियोंकों द्वादशवें दिन दशवां पिंड देना कहा है और वैश्योंकुं पंदरवें दिन दशवां पिंड देना और शूद्रोंकुं एक माससे दशम पिंड देना ये विधि धर्मशास्त्र कहता है परंतु कलौ युगे नाम कलियुगमें ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र ये चार वर्णकुं दशम दिन दशम पिंड देना और द्वादशाह करना श्रेष्ठ है जिस विधिसे जिस वस्तुसे प्रथम दिनका पिंड देवे उसी विधिसे नव दिनतक पिंड देना दशम दिन उडद गुड महिषीदुग्धसे पिंड

दिनेवैश्यस्यपंचदशदिने शूद्रस्यपूर्णेमासेदशमः पिंडोदेयः ॥ येनैवप्रकारेण प्रथमःपिंडोद त्तस्तेनैवोत्तरत्रदद्यात् ॥ त्र्यहाशौचेचप्रथमदिवसेत्रयः द्वितीयदिनेचत्वारः तृतीयदिने त्रयः अथवा प्रथमे एकः द्वितीयेचत्वारः तृतीयेपंचपिंडादेयाः सद्यःशौचेत्वेकाहेएवपाकासंप

बनाके देना परंतु त्रिदिनका सूतकवाले प्राणीकुं पिंड किसी माफक देना सो कहते हैं प्रथम दिने त्रयः पिंडाः द्वितीय दिन चार पिंड तृतीय दिन त्रय ३ पिंड देना चौथे दिन शुद्धि होती है। अथवा प्रथम दिन एक पिंड दूसरे दिन चार तृतीय दिन पांच पिंड देना चौथे दिन शुद्धि और सद्यः शौच नाम उसी एक

दिन सुतकवाले प्राणीके निमित्त पाकके अभावमें फल मूल दूध शाक गुड शालिचावल सत्तु इनमेंसे एकका पिंड करना परंतु जिस वस्तुसे पिंड प्रथम दिन देवे उसी द्रव्यका पिंड नव दिनतक देना दशम पिंडका द्रव्य न्यारा है रात्रिमें जो मरे जिसके घरवाले ब्राह्मणकी आज्ञासे गृहके दरवाजापै आके निंबपत्र दांतोंसे

त्तौफलमूलपयःशाकगुडशालिसक्तुष्वेकतमेनपिंडादेयाः येनद्रव्येणप्रथमः पिंडोदीयते तज्जातीयेनैवान्येपिदेयाः ॥ रात्रौमृतेसूर्योदयेदिवामृतेनक्षत्रोदयेबहिर्गृहाद्दौब्राह्मणानुमत्या सर्वानपिबालपुरःसरान् गृहद्वारमानीयतत्रैवनिंबस्यपत्राणिदंतैःछित्वाऽऽचम्य ततोवेश्मनि पदन्यासंकृत्वाऽऽचम्योदकगोमयगौरसर्षपाग्निदूर्वाप्रवालवृषान्संस्पृश्यगृहंप्रविशेयुः दशरा

चावके आचमन करके घरमें पग धरना परंतु दिनमें जो मरे उसके घरवाले रात्रिमें गृहके द्वारपै आके निंबपत्र दांतोंसे चावके आचमन करके घरमें पग धरके जाना पीछे आचमन करके पीछे जलकुं तथा गौर सरसोंकुं अग्निकुं दूर्वाकुं मूंगकुं बैलकुं स्पर्श करके अपने घरके अंदर जाना यह विधि देशांतरोंमें है कोई

देशोंमें नहीं है परंतु जैसी अपने देशकी तथा कुलकी तथा ग्रामकी रीति होवे सो करना यह शास्त्रकी आज्ञा है। महागुरु जो माता पिता आचार्य इन्होंका मरण होवे तब दशरात्रपर्यंत शस्त्र रखनेवाले शस्त्रकी उपसेवन करे जो मनुष्य जुदे जुदे पुत्रादिक पृथिवीपै शयन करना परंतु प्रथम तृतीय पंचम दशम दिनोंमें

त्रंमहागुरुषु मातापिताचार्यएतेमहागुरवः शस्त्रपाणयश्चोपसेविनः पृथक्क्षितौशायिनःप्रथमतृतीयपंचमदशमदिनेषुसर्वेषामेवसपिंडानां बहिः स्नानंतिलोदकदानंचत्रिः प्रक्षालनंसहभोजनम् चतुष्पथश्मशानगृहेषुदीपदानंअंगवाहनंप्रेताप्यायनकरम् ॥ अथास्थिसंचयनम् ॥ तत्रास्थिसंचयननिमित्तमेकोद्दिष्टंविधायपुत्रःसज्ञातिबंधुमित्रःस्नात्वाशुद्धोतुनानाविधफलमू

सप्त पिढीवाले मनुष्योंकुं घरके बाहर स्नान करना तिलोदकसे अंजलि देना तीन बार वस्त्र प्रक्षालन करना प्रथम दिनमें तृतीय दिनमें दशम दिनमें सर्व कुटुंबवाला प्राणीके घरपै भोजन करना पीछे पुत्रादिक प्राणीके वास्ते चौरस्तेमें तथा श्मशानमें तथा अपने घरपै प्राणीके वास्ते अखंड दीपक रखना अंगवाहन-

कर्म करना प्रेतकी तृप्ति करना। अब अस्थिसंचयनविधि कहते हैं। अस्थिसंचयनमें एकोद्दिष्ट नाम एक पिंड जिसमें लगे तिसका नाम एकोद्दिष्ट है सो एकोद्दिष्ट करना पुत्र सावधान होके कटुंब बंधु मित्र इन्होंकुं साथ लेके घरके बाहर स्नान करके और नानाविधके फल मूल ईक्षुरस अपनी जातिके माफिक पात्रोंमें जुदा जुदा गंध पुष्प धूप दीप माला भोजन तिल घृत दुग्ध चावलोंके पात्र साथ लेके पुत्र श्मशानके समीप जाके प्रथम एकोद्दिष्ट करके पश्चात् श्मशानके उत्तर भागमें बैठके अष्टांगबली देना अष्टांगबली

लेक्षुपानादिभिःस्वजात्यनुरूपैःपात्राणिपूरयित्वागंधपुष्पधूपदीपादिकंचगृहीत्वाश्मशानसमीपंगत्वात्वरान्वितः।अस्माकमायुरारोग्यंसुखंचददतांवरंइतिमंत्रेणदेवताभ्योबलिंदत्त्वाक्षी

कया अर्घ्यपुष्प भोजन धूप दीप माला पानी अक्षत ये अष्टांगबलीकुं देते वख्त क्रव्याददेवता अग्नि है तिसकुं नमस्कार करना जो श्मशानका देवता है तिनकुं नमस्कार करना और देवता प्रेतकुं शुभ लोकोंमें प्राप्त करो अस्माकं नाम हमारी आयु बधावो आरोग्य करो सुख हमकुं देवो वर नाम श्रेष्ठ ऐसा बोलके श्मशानके उत्तरभागमें शंकरादिदेवताभ्यो नमः ऐसा बोलके बली देना इन्द्रादिदेवताभ्यो नमः ऐसा बोलके श्मशानके

पूर्वभागमें बली देना यमादिपितृगणेभ्यो नमः ऐसा बोलके दक्षिणमें देना वरुणादिलोकपालेभ्यो नमः ऐसा बोलके पश्चिमभागमें बली देना पीछे बलीपै दूध सेचना पश्चात् देवतोंका विसर्जन करके चिताकुं दूधसे सेचन करना खेजडीकी फावडी और पलासका पत्ता जलसे धोके रखना पीछे सुगंधके जलसे सेचन करना

रेणाभ्युक्ष्यश्मशानस्थानंगच्छेत् । इतिदेवतांविसृज्य क्षीरेणवा चितास्थानमभ्युक्ष्यशमीप लाशंधृत्वाभ्युक्ष्यगंधवारिणासिक्त्वा कृतापसव्योदक्षिणामुखोऽगुष्ठकनिष्ठिकाभ्यांप्रथमं शिरोस्थिगृहीत्वा पंचगव्येनसुगंधवारिणासिक्त्वापलाशपुटेनिक्षिप्य क्षौमवस्त्रेणसंवेष्टच मृन्मयनूतनभांडेआच्छाद्यतद्भांडमारोप्यवृक्षमूलेनियतगर्तेवाधारयेत् चिताभस्मादितोये

इस फावडी मस्तकका अस्थि श्मशानसे जुदा करना पीछे अपसव्य होके दक्षिणदिशामें मुख करे चिताके पूर्वभागमें बैठना अपने अंगुष्ठ कनिष्ठिका अंगुलीसे प्रथम शिरका अस्थि उठाना पलासके पत्तेमें रख देना पीछे पंचगव्यसे धोना सुगंधजलसे प्रक्षालन करना पीछे मृत्तिकाके पात्रमें पलाशपत्रसहित रखना रेशमी वस्त्र लपेटना पीछे मृत्तिकाके भांडकुं वृक्षसे मूलके पास गडा खोदके अस्थि भांडसहित रख देना रेतीसे

गर्त्तकुं पुर देना पीछे चिताकी भस्मकुं नदीके वा तीर्थके जलमें बहा देना पश्चात् अस्थि गंगामें पधरानेकुं जलदी भेजना होवे तो पंचगव्यसे धोके अस्थिसमुदायके बीच हिरण्य सहत घृत तिल डालके दक्षिणदिशाकुं देखता देखता चलके गंगामें अस्थि डालनेके वख्त नमो धर्माय ऐसा बोलना। गंगाके जलके अंदर

निक्षिपेत् अथकश्चित्पुत्रपौत्रसहोदरादिःस्नात्वातदस्थिपंचगव्येप्रक्षिप्यहिरण्यमध्वाज्यतिलैः संयोज्यमृत्पिंडपुटेनिधायदक्षिणांदिशंपश्यन् नमोस्तुधर्मायेतिवदेत् जलंप्रविश्य प्रेतस्य स्वर्गगमनकामोदक्षिणामुखः समेप्रीयतामित्युक्त्वागंगांभसिनिक्षिपेत् ततः स्नात्वोत्थाय सूर्यमवेक्ष्यास्थिनिक्षेपकर्मप्रतिष्ठार्थंब्राह्मणायदक्षिणांकिंचिद्द्यात् ॥ गंगातोयेषुयस्यास्थि

जाके प्रेतके स्वर्गप्राप्तिके अर्थ आस्थि गंगामें पधराना दक्षिणमुख होके प्रेत मेरे पै प्रसन्न होवे ऐसा वचन बोलके पीछे स्नान करके उठके सूर्यका दर्शन करना पीछे दक्षिणा जल हाथमें लेके ऐसा बोलना अस्थिकर्मप्रतिष्ठाके अर्थ ब्राह्मणकुं दक्षिणा श्रद्धाके माफक देना जिस मनुष्यका गंगाके जलके अंदर अस्थि

पडते हैं सो पुण्यात्मा है दश दिनके अंदर अस्थि गंगामें पधराये जाते हैं तो वह मनुष्य जीव ब्रह्मलोकमें प्राप्त होता है फिर पीछे नहीं आता है किसी तरहसे विधिसे गंगाजलमें अस्थि प्रवेश हो जावे तो उस जीवकी गति महेंद्रकी तुल्य होती है जबतक गंगामें अस्थि पडे रहते हैं तबतक सहस्र वर्षोंपर्यंत स्वर्गमें

प्लवतेशुभकर्मणः ॥ नतस्यपुनरावृत्तिर्ब्रह्मलोकात्कथंचन ॥ एवंकृतेप्रेतपुरस्थितस्यस्वर्गे गतिः स्यात्तुमहेंद्रतुल्या ॥ अस्थियावन्मनुष्यस्यगंगातोयेषुतिष्ठति ॥ तावद्वर्षसहस्राणि स्वर्गलोकेमहीयते ॥ पितृमातृकुलंवापिवर्जयित्वानराधमः ॥ अस्थीन्यन्यकुलोत्थानिनी त्वाचांद्रायणंचरेत् दशमदिनेनखलोमादिकंवापयित्वातिलतैलेनगौरसर्षपेणकल्केन शिर

प्राणीकी स्थिति रहती है। जो कोई अपने मातापिताके अस्थि विना औरका अस्थि गंगामें ले जाके डालते हैं सो मनुष्य चांद्रायण व्रत किया शुद्ध होता है। अथ दशम दिने क्षौर करवाना नख छेदन कराना और तिलतैल करके वा गौरसर्षपके तैल करके मर्दन शिर तकायत करके स्नान करना पीछे आच-

मन करना पीछे शुद्ध वस्त्र पहरना पीछे सूर्यनारायणकुं गौकुं सुवर्णकुं ब्राह्मणकुं नमस्कार करना पीछे गोरोचन दधि मृत्तिका श्वेत सरसों ये घिसके तिलक चढाना सूर्यादिकनके पीछे क्षत्रिय तो अग्निकुं स्पर्श करे वैश्य हलकुं स्पर्श करे शूद्र लाठिकुं स्पर्श करे तो श्रेष्ठ है ब्राह्मण पंचगव्य पीके शुद्ध होता है और

श्वोन्मृज्यस्नात्वाचम्यशुद्धवस्त्रंपरिधाय आदित्यंगांसुवर्णंब्राह्मणं च नत्वागोरोचनंदधिमृत्तिकांसितसर्षपंचतिलकंदद्यात् क्षत्रियोऽग्निं वैश्योहलायुधं शूद्रोयष्टिंसंस्पृशेत् ॥ मंगलानिचसंस्मृत्यसंकीर्त्यब्राह्मणान्स्वस्तिवाचयित्वागृहंप्रविशेत् ततो दशमदिनेपिंडदानानंतरंप्रेतकनीयसांवपनंनखलोमत्यागोबहिरेवतैलेनाभ्यंगः प्रक्षालितवस्त्रः त्यक्तवस्त्र पाश्रितायदेयम्॥ आ

मंगलोंकुं स्मरण करना ब्राह्मणोंकुं याद करना स्वस्तिवाचन करवाके घरमें आना यह गंगामें अस्थिप्रवेशकी विधि है। अथ दशम दिन प्रेतके छोटे भाई बंधुओंको क्षौर करवाना भद्र होना घरसे बाहर पवित्र जलकी जगहमें, पीछे तैल अंगको लगाके स्नान करना सूतकके वस्त्र धोना और पुत्रका धोती अंगोछा

आश्रित नोकरके विना मनुष्य कर्मीने लोगोंकुं देना पछि आचमन करके अपने घरमें आके अग्निकुं स्पर्श करना दशम दिनमें स्नान करे और मुंडन होवे सो घरसे बाहर कूप तलाव नदीपै करना वहां सूतकका वस्त्र त्यागन करना यह पराशरमुनिका मत है परंतु दशम दिन सामुद्रलवण सैंधवलवण यव मूंग लावमांस

चम्यगृहमागत्याग्निंस्पृशेत् ॥ दशमेहनिसंप्राप्तेस्नानंकुर्याद्बहिर्जले ॥ तत्रत्याज्यानिवासांसि केशश्मश्रुनखानिचेतिपराशरः । तत्रसामुद्रसैंधवलवणानियवमुद्गकलायगव्यक्षीरदधिघृत खांडान्नाश्नीयुः मधुमांसस्त्रीवर्जिताभवेयुः सपिंडाएकवारंभुंजीयुः ॥ इतिदशाहक्रियासमाप्ता ॥ अथैकादशाहकृत्यम् ॥ आशौचांतेद्वितीयेह्निशय्यांदद्याद्विचक्षणः ॥ नानावर्णैर्वितानै

दुग्ध दधि गोघृत खांड नहीं खाना मधु सहत मांस और स्त्रीभोग नहीं करना सप्त पिढीतकके मनुष्य कुटुंबवाले एक वख्त भोजन उसी प्राणिके घर करे ये विचार कोईक देशांतरमें है सर्वत्र नहीं है । इति दशगात्रविधि । अथ एकादशदिनका कृत्य कहते हैं । अशौचके द्वितीय दिन नाम एकादशके दिन आचार्यकुं

शय्या देना प्राणीको निमित्त विचारके और अनेक रंगके रंगे हुए वस्त्रोंका चंदोवा करना और सुवर्णका जिनमें छापा होवे और पुष्प आभूषण शय्यापै रखना दर्पण और स्वर्ण चांदीके पात्र ऊपर रखना और कांचनकी मूर्ति नारायणकी ऊपर रखना और फल वस्त्र श्रद्धामाफक शय्यापै रखना ब्राह्मणोंकुं पूजन करे पुत्रसहित और नाना प्रकारके आभूषण ब्राह्मणोंकुं पहराना और वृषोत्सर्ग करना कपिला गौ देना पश्चात्

श्वहेमपट्टिमलंकृतैः ॥ पुष्पाद्यैर्भूषणैराव्यांदर्पणादिसमन्विताम् ॥ कांचनंपुरुषंतद्वत्फलव स्त्रसमन्वितम् ॥ पूजयेद्विजदांपत्यंनानाभरणभूषणैः ॥ वृषोत्सर्गंप्रकुर्वीतदेयाचकपिलाशु भा ॥ एकोद्दिष्टंततः श्राद्धं ततः सान्नोदकंतथा ॥ मासिकंच ततः श्राद्धंसपिंडनमतः परम् ॥ अथवृषोत्सर्गे वेदीप्रमाणम् ॥ तत्रादौषोडशहस्तव्यायामविस्तीर्णांचतुरस्रांहस्तोच्छ्रितांवे

एकोद्दिष्ट श्राद्ध करना अन्नजलसहित मासिक श्राद्ध करना इसके पीछे सपिंडन श्राद्ध करना ॥ अथ अगाडी वृषोत्सर्गकी वेदीका प्रमाण कहते हैं । कर्त्ता पुरुषके हाथोंसे षोडश नाम सोलह हाथमें चौडी लंबी करना एक हाथ ऊंची करना उसके ऊपर अष्टदिक्रूप केलेके थंभ अष्ट रोपके चार ४ द्वार बनाना ऊपर

मंडप छाना पीछे उसी सोलह हाथकी वेदीपै उत्तर अर्द्धभागके मध्य एक हस्त प्रमाण ऊंची एक हस्त प्रमाण चौडी लंबी विष्णुकी वेदी करना और ईशानकोणमें रुद्रकलश स्थापनके वास्ते हस्तप्रमाण हस्तोच्छ्रित रुद्रवेदी करना। परंतु नैर्ऋत्य पश्चिम दिशाके मध्य प्रेतमातृका स्थापनकी वेदी करना पूर्वोक्त प्रमा-

दिकांकुर्यात् तस्योपरिकदलीकाष्ठस्तंभैश्चचतुर्द्वारंमंडपंकुर्यात् ॥ तत्रोत्तरार्द्धेचतुरस्रैकहस्तोच्छ्रितांविष्णुवेदिंनिर्माय ऐशान्यांरुद्रकलशार्थंवेदिकांकुर्यात् नैर्ऋत्यपश्चिमयोर्मध्येप्रेतमातृसंस्थापनार्थंवेदींरचयेत् मध्योत्तरदिशिहवनवेदिंचतुरस्रैकहस्तोच्छ्रितांनिर्माय ततः सव्यंकृत्वापंचगव्येनकुशोदकेनवेदींमंडपंचसंप्रोक्ष्यपूजयेत् ॥ प्रथमतःअष्टौद्वारपालान्दश

णकी। उत्तर दिशाके मध्यमें हवनकी वेदी चौकोर हस्तमात्रकी करना पीछे सव्यं कृत्वा पंचगव्य और कुशोदक मिलाके वेदीमंडपकुं संप्रोक्षण करना पीछे वेदीमंडपका पूजन करना पश्चात् प्रथम अष्टद्वारपालोंकी पूजा करना पीछे दश दिक्पालोंको स्थापन करके पूजन करना अथ पूर्वादि दिशाओंमें सर्व दिक्पालोंके

कलश स्थापन करना पीछे कलशोंके ऊपर दिक्पालोंकी मूर्ति स्थापन करके वेदमंत्रोंसे पूजन करना यज-
मान सावधान होके पूर्वद्वारपै बैठके प्रतिमाके पूजनका आरंभ करना। अद्येत्यादि वचन बोलके पीछे
ऐसा बोलना मैं वेदीमंडपका पूजन करता हूं ऐसा संकल्प बोलके वेदीमंडपको पूजन करके द्वारपालोंका

दिक्पालान्संस्थाप्यपूजयेत् ॥ अथ पूर्वादिदिक्षु इंद्रादिदिक्पालानांकलशान् संस्थाप्यतस्यो
परिपूजयेत् ॥ ततोयजमानः पूर्वद्वारमागत्यप्रतिमापूजनंचारभेत् अद्येत्यादिइतिवाक्यंपठि
त्वावेदिमंडपयोः पूजनमहंकरिष्ये ॥ इति वेदिमंडपौ संपूज्यद्वारपालान्पूजयेत् तत्रादौपूर्व
द्वारपालान्पूजयेत् पूर्वद्वारे द्वारपालेभ्योनमः इति नाममंत्रेणध्यात्वाऽक्षतैरावाहनंकृत्वाशु

पूजन करना यहां द्वारपालोंमें प्रथम पूर्व दिशाके द्वारपालकी पूजा करनी पूर्वद्वारके द्वारपाल हैं तिनकुं
नमस्कार है. पश्चात् नाममंत्र करके ध्यान करना और अक्षत हाथमें लेके द्वारपालका आवाहन करना पीछे
शुद्ध जलसे स्नान करना गंधधूपादि करके पूजन करना. इस माफक सर्वद्वारपालोंकी पूजा करना परंतु जो

पूर्वद्वारपै स्थित ब्राह्मण हैं तिनकी प्रार्थना करना यज्ञकी सिद्धिके वास्ते हम आप लोग ब्राह्मण हो तिनकी प्रार्थना करता हूं ऐसा बोलना । पूर्व द्वारके प्रतिपूजन करानेवाले ब्राह्मणोंकुं ऐसा वचन कहना महाराज तुम सुप्रसन्न होके विधिपूर्वक कर्म करो ऐसा वचन ब्राह्मणोंकुं बोलके पश्चात् इंद्रादि दिक्पालोंका आवा-

द्धोदकेनस्नात्वागंधादिभिः पूजयेत् एवंसर्वेषांपूजांकुर्यात् ॥ अस्ययागस्यनिष्पत्तौभवंतोभ्य र्थितामया ॥ सुप्रसन्नैश्चकर्तव्यंकर्मेदंविधिपूर्वकम् ॥ इति ततइंद्रादिदिक्पालानावाह्यपीतादि पताकासतोयमाषान्नभक्तबलिभिः पूर्वादिषुप्रत्येकंपूजयेत् अद्येत्यादीतिवाक्यंपठित्वाअमु कगोत्रोऽमुकशर्मायजमानः अमुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्यप्रेतत्वमुक्तिपूर्वकाक्षयस्वर्गलोकप्रा

हन करना और पीली ध्वजासे आदि लेके ध्वजा और जलसहित माषभक्तबलि पूर्वादि द्वारपालोंकुं देना । पूजन करना सो क्रम कहते हैं हस्ते जलाक्षतकुशानादाय अद्येत्यादि वाक्य बोलके अमुक मास तिथ्यादि-वारपर्यंत उच्चारके अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य प्रेतयोनि दूर होनेके वास्ते अक्षय स्वर्ग प्राप्त होनेके वास्ते

इस कामना करके इस ग्यारहवें दिन एकादशाहकृत्य वृषोत्सर्गकर्मके अंगरूप असुकासुक दिक्पालोंका पूजन हम करेंगे यह प्रतिज्ञा करना इति संकल्पः ॥ पछि कलश पूर्वदिशामें वेदीके ऊपर रखना पीछे निर्जर देवतोंका ईश्वर जो इंद्र है और सहस्राक्ष है तिसकुं पूर्वकलशपै स्थापन करना स्वर्णमूर्त्तिरूप हे

तिकामनयास्मिन्नेकादशाहकृत्ये वृषोत्सर्गकर्मंणितदंगत्वेन अमुकदिशिअमुकदिक्पालपूजनमहंकरिष्ये॥ततः कलशकरणम्। इंद्रायनिर्जरेशायसहस्राक्षायतेनम इति पूर्वकलशे एह्येहि सर्वामरसिद्धसंघैरभीष्टतोवज्रधरामरेश ॥ संवीज्यमानोप्सरसांगणेनरक्षाध्वरंनोभगवन्नमस्ते ॥ १ ॥ इतिध्यात्वा ॥ गजस्कंधसमारूढंवज्रहस्तंपुरंदरम् ॥ आवाहयामितमहंसुरराजंशचीं

वज्रधर हे अमरेश सर्व देवतोंके समुदायकुं साथ लेके यहां आओ आओ अप्सराओंके समुदाय करके आप संवीज्यमान हो सो हमारे यज्ञकी रक्षा करो हे भगवन् तेरेकुं नमस्कार है ॥ १ ॥ इति नाम ऐसे ध्यान करना पीछे आवाहन करना इंद्र हो आप सुरपति हो आप श्रेष्ठ हो आपने हाथमें वज्र धारण कर रखा है

महाबली हो शत नाम सौ यज्ञोंके आप अधिपति हो स्वर्गक्रीडा करनेवाले हो नित्य आपकुं वारंवार नमस्कार है। इस माफक पाद्य, अर्घ्य, आचमनादि करके पूजन करना और त्रातारमिंद्र इस मंत्रसे अथवा सजोषामिंद्र इस मंत्र करके पीछे रंगकी ध्वजा इंद्रके अर्पण करना तहां कुमुदाक्षका पूजन करना। पीछे

पतिम् ॥ २॥ इत्यावाहनम् ॥ इंद्रः सुरपतिः श्रेष्ठोवज्रहस्तोमहाबलः ॥ शतयज्ञाधिपोदेवस्तस्मैनित्यंनमोनमः ॥ इतिपाद्यादिभिः पूजयेत् ॥ त्रातारमिंद्रेति वा सजोषाइन्द्रेतिमंत्रेणपीतपताकां दद्यात् तत्रकुमुदाक्षंपूजयेत् ॥ इंद्रस्तुसहसादीप्तः सहदेवाधिपोमहान् ॥ वज्रहस्तोमहाबाहुस्तस्मैनित्यंनमोनमः ॥ इंद्रायसुराधिपतये इमंसतोयमाषभक्तबलिंनमः बलिभक्ष

इंद्रभगवान् दीप्तिमान् होय रहे है सर्वदेवतोंकुं संग लेके महान् है वज्र हाथमें है बडी भुजा है तिसकुं नित्य वारंवार नमस्कार करना। देवताओंका अधिपति इंद्र है तिसकुं जलसहित माषभक्तबलि अर्पण किया है सो बलिकुं भक्षण करो यज्ञकी रक्षा करो यजमानकुं कुशलयुक्त करो ॥ १ ॥ इसके पश्चात् अग्निकोणके

कलशके ऊपर प्रत्यक्ष अग्निदेवका पूजन करना प्रथम आवाहन करना हे सर्वामरहव्यवाह आप मुनिश्रेष्ठों करके चारों तरफसे पुष्ट और अप्सरोंका गण आपकुं हवा कर रहे हैं सो हे भगवन् हमारे यज्ञकी आप रक्षा करो ऐसे ध्यान करना और आप शक्ति हाथमें धार रखी है देदीप्यमान आपको रूप है बकरापै आप

क्रतुंरक्षयजमानंकुशलं कुरु ॥ १ ॥ तत अग्नेपकलशे शक्तिपू० ॥ एह्येहिसर्वामरहव्यवाह मुनिप्रवीरैरभितोपिपुष्टः ॥ संवीज्यमानोप्सरसांगणेनरक्षाध्वरंनोभगवन्नमस्ते ॥ इतिध्यानम् ॥ शक्तिहस्तंज्वलद्रूपंछागारूढंसुरोत्तमम् ॥ आवाहयामिज्वलनंपूजेयंप्रतिगृह्यताम् ॥ इत्यावाहनम् ॥ सर्वतेजोमयश्चैवरक्तवर्णोमहाबलः ॥ शक्तिहस्तोमहावीर्योवैश्वानर नमोस्तु

आरूढ होय रहे हो देवताओंमें उत्तम हो सो अग्निदेवकुं हम इस यज्ञमें बुलाते हैं सो आओ यह पूजा अंगीकार करो ऐसे आवाहन करना और अग्निदेवकुं नमस्कार करना कैसा अग्निदेव है शक्ति हाथमें है महाविद्या वीर्यवान् वैश्वानर आपके नाम सो आपकुं वारंवार नमस्कार करते हैं ऐसा नमस्कार करके

वैश्वानरेतिमंत्रसे अग्निदेवका पूजन करना और अग्निर्मूर्द्धा इस मंत्र करके रक्तपताका अर्पण करना तहां कुसुदाक्षका पूजन करना कुसुदाक्ष नाम भगवान्‌का है और अग्निदेवकुं नमस्कार करना आप अग्नि-पुरुष हो रक्तवर्ण हो सर्व देवमय हो अविनाशी हो और धूम्रकेतु हो गणोंके अधिष्ठाता हो सो

ते ॥ इतिपाद्यादिभिः पूजयेत् ॥ वैश्वानरेतिपूजनम् अग्निर्मूर्द्धेतिरक्तपताकांदद्यात् तस्मिं न्कुसुदाक्षंपूजयेत्। आग्नेयपुरुषोरक्तःसर्वदेवमयोऽव्ययः ॥धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षस्तस्मैनित्यंनमो नमः॥ १ ॥ अग्नयेसर्वतेजोधिपतयेइमंसतोयमाषभक्तबलिंनमः बलिंभक्षक्रतुंरक्षयजमानंकुश लंकुरु॥ २ ॥ दक्षिणकलशेदंडपूजा ॥ एह्येहिवैवस्वतधर्मराजसर्वामरैरार्चितधर्ममूर्ते ॥ सुरा

आपकुं नित्य वारंवार नमस्कार है परंतु सर्व तेजके अधिपति अग्निदेवकुं जलसहित माषभक्तबलि अर्पण किया है सो बलिकुं भक्षण करो यज्ञकी रक्षा करो यजमानकुं कुशलयुक्त करो ॥ २ ॥ अथ दक्षिणकल-शपै यमदंडका पूजन करना। हे वैवस्वत हे धर्मराज सर्व देवताओंकरके आपकी मूर्त्ति पूजित है देवता और राक्षसोंके आप अधिपति हो प्रजाके ईश्वर कल्याणरूप हो महाबल हो सो आपकुं इस यज्ञमें बुलाते

हैं सो आओ इस यज्ञमें पूजाकुं अंगीकार करो ऐसे आवाहन करना । दंडहस्त हो आप कृष्णवर्ण हो धर्मका अधिपति हो महाबल हो प्रेताधिपति हो यमराज हो सो आपकुं नमस्कार है पीछे पाद्य, अर्घ्य, आचमनादि करके पूजन करना यमराजेति इस मंत्र करके, परंतु असियम इस मंत्र करके कृष्णध्वजा

सुराणामधिपप्रजेशशिवायतुभ्यंसततंनमोनमः ॥ इतिध्यानम् ॥ महामहिषमारूढंदंडहस्तं महाबलम् ॥ अवाहयामियज्ञेस्मिन्पूजेयंप्रतिगृह्यताम् ॥ इत्यावाहनम् ॥ दंडहस्तः कृष्णवर्णोधर्माध्यक्षोमहाबलः ॥ प्रेताधिपतयेनित्यंयमराजायतेनमः ॥ इतिपाद्यादिभिः पूजयेत् यमराजेतिपूजनम् ॥ असियमइतिकृष्णपताकांदद्यात् पताकायांपुंडरीकाक्षंपूजयेत् ॥ यमश्चोत्पलवर्णाभः किरीटीदंडधृक्सदा ॥ धर्माध्यक्षोविशुद्धात्मातस्मैनित्यंनमोनमः ॥ य

यमदंडके अर्पण करना पताकामें पुंडरीकाक्ष भगवान्का पूजन करना और यमराजकुं नमस्कार करना उत्पलजातिके कमलकी माफिक शरीरका वर्ण है माथेपै मुकुट है दंड धार रखा है सदा धर्मका अधिष्ठाता

है विशेष करके आत्मा शुद्ध है तिस यमराजकुं हम वारंवार नमस्कार करते हैं ऐसे नमस्कार करके महि-षवाहन जिसके ऐसे यमराजकुं जलसहित माषभक्तबलि दिया है सो बलिकुं भक्षण करो यज्ञकी रक्षा करो यजमानकुं कुशलयुक्त करो ॥ ३ ॥ नैर्ऋतिकोणके कलशके ऊपर खड्गकी पूजा करना राक्षसगणोंके आप नायक हो विशाल वेताल विशेष करके पिशाच इनके समुदाय आपके पास रहते हैं सो मेरे वृषोत्सर्गयज्ञमें

मायमहिषवाहनायइमंसतोयमाषभक्तबलिंनमः बलिंभक्षकतुंरक्षयजमानंकुशलंकुरु ॥ ३ ॥
नैर्ऋत्यकलशेखड्गंपूजयेत् ॥ एह्येहिरक्षोगणनायकस्त्वंविशालवेतालपिशाचसंघैः ॥ ममा
ध्वरंरक्षशुभाधिनाथलोकेश्वरस्त्वंभगवन्नमस्ते ॥ इतिध्यानम् ॥ योवैयक्षाधिपोदेवोनैर्ऋतोनी

आप एहि एहि नाम आओ आओ आदरमें वीप्सा पद देते हैं मेरे यज्ञकी रक्षा करो आप तो शुभका अधिनाथ हो लोकका ईश्वर हो सो हे भगवन् आपकुं नमस्कार है। ऐसे ध्यान करना। परंतु जो यज्ञा-धिपति देव सो नैर्ऋत है श्याम शरीर है महाखड्ग धारण कर रखा है ऐसा निर्ऋतिदेवकुं हम नस्कार करते

हैं इति आवाहन । एष ते निर्ऋते भाग इस मंत्र करके पूजन करना और इयं देवी इस मंत्र करके नीलप-
ताका निर्ऋतिदेवके अर्पण करना तिस ध्वजामें वामनभगवान्‌का पूजन करना । परंतु निर्ऋतिभगवान् काला
पुरुष है सर्व रक्षोंका अधिपति है महान् है खड्ग हाथमें है महासत्व है ऐसे निर्ऋतिदेवकुं हम नमस्कार

लविग्रहः ॥ महाखड्गधरोनित्यंतस्मैनिर्ऋतयेनमः ॥ इत्यावाहनम् ॥ एषतेनिर्ऋतयेभागइति
पूजनम् ॥ इयंदेवीतिनीलपताकांदद्यात् तस्मिन्वामनंपूजयेत् ॥ निर्ऋतिस्तुपुमान्कृष्णः
सर्वरक्षोधिपोमहान् ॥ खड्गहस्तोमहासत्वस्तस्मैनिर्ऋतयेनमः ॥ निर्ऋतयेसर्वरक्षोधिपतये
इमंसतोयमाषभक्तबलिंनमः बलिंभक्षक्रतुंरक्षयजमानं कुशलंकुरु ॥ ४ ॥ पश्चिमकलशोपा
शंपूजयेत् एह्येहिपाथोगणनायकस्त्वंगणेशपर्जन्यसहाप्सरोभिः ॥ विद्याधरेंद्रामरगीयमान

करते हैं और सर्व यज्ञोंका अधिपति निर्ऋतिदेवकुं जलसहित माषभक्तबलि देता हूं सो बलिकुं भक्षण
करो यज्ञकी रक्षा करो यजमानकुं कुशलयुक्त करो ॥ ४ ॥ पश्चिम दिशाके कलशपै फांसीका पूजन

करना । आप पाथोगण जलके जीवोंके तुम नायक हो आप गणोंका स्वामी हो आप पर्ज्जन्य अप्सरागण करके युक्त हो विद्याधरदेवताओंके आप इंद्र हो देवता आपकुं गाय रहे हैं सो तुम हमारी रक्षा करो हे भगवन् आपकुं नमस्कार है जो ध्यान आवाहन है । परंतु वरुणस्योत्तंभन इति मंत्र करके पूजन करना

पाहित्वमस्मान्भगवन्नमस्ते ॥ इतिध्यानावाहने ॥ वरुणस्योत्तंभनमितिपूजनम् ॥ इमंते वरुणेतिश्वेतपताकांदद्यात् तत्रशंकुकर्णंपूजयेत् । वरुणः सोचलोविष्णुः पुरुषोनिम्नगाधिपः॥ पाशहस्तोमहातेजास्तस्मैनित्यंनमोनमः ॥ वरुणायनिम्नगाधिपतयेइमंसतोयमाषभक्तबलिं नमः बलिंभक्षकतुंरक्षयजमानंकुशलंकुरु ॥ ९ ॥ वायव्यकलशे अंकुशंपूजयेत् ॥ एह्येहिय

और इमंते वरुण इस मंत्रसे श्वेत पताका अर्पण करना तहां पताकामें शंकुकर्ण भगवान्का पूजन करना ॥ वरुणदेवता अचल विष्णु है पुरुषरूप है निम्नगा नाम नदियोंका अधिपति है पाश हस्तमें है महातेजःपुंज है तिसकुं हम नमस्कार करते हैं नदियोंका पति वरुण भगवान् आपके अर्थ जलसहित माषभक्तबलि है

सो बलिकुं भक्षण करो वृषोत्सर्ग यज्ञकी रक्षा करो यजमानकुं कुशलयुक्त करो ॥ ५ ॥ वायव्यकोणके कलशके ऊपर अंकुशका पूजन करना परंतु अंकुशरूप प्राणाधिप कालकाचिका सहाय करनेवाला है मृगपै आधिरूढ होय रहे है सिद्धगण आपके साथ है सो आप मेरे यज्ञकी रक्षा करनेके वास्ते एहि एहि नाम मेरी रक्षा करनेके वास्ते आओ और पूजा अंगीकार करो हे भगवन् आपकुं नमस्कार है इति ध्यान।

ह्येममरक्षणायमृगाधिरूढः सहसिद्धसंघैः ॥ प्राणाधिपः कालकवेशहायगृह्णाणपूजांभगवन्नमस्ते ॥ इतिध्यानम् ॥ सर्वप्राणाधिपोनित्यंसर्वजंतुष्ववस्थितः ॥ ध्वजहस्तोमेघवर्णस्तस्मै नित्यंनमोनमः ॥ इत्यावाहनम् ॥ वातोवातेतिपूजनं वायोरग्नेगायेतिधूम्रपताकां दद्यात्

आप सर्वके प्राणोंका नित्य अधिपति हो सर्व जीवमात्रमें अब स्थित हो सो ध्वजा हाथमें है मेघकी माफक आपका श्यामवर्ण है सो आपकुं नित्य वारंवार नमस्कार है इति आवाहनम् । वातो वातेति मंत्र करके पूजन करना। वायु अग्निका अंग है जिसकुं। वायोरग्नेगाय इस मंत्रसे ध्वजा धूम्रवर्णकी अर्पण करना यहां

ध्वजामें सर्वनेत्र भगवान्‌की पूजा करना। परंतु वातदेवता सर्वरंगरूप है सर्व गंधकुं वहनेवाली है शुचि नाम पवित्र है पुरुषरूप है ध्वजा हाथमें है तिसकुं हम नित्य वारंवार नमस्कार करते हैं सर्वप्राणाधिपति वायुदेवताकुं जलसहित यह माषभक्तबलि देते हैं सो बलिकुं भक्षण करो यज्ञकी रक्षा करो यजमानकुं कु-

तत्रसर्वनेत्रंपूजयेत् ॥ वातस्तुसर्ववर्णोयः सर्वगंधवहः शुचिः ॥ पुरुषोध्वजहस्तश्चत स्मै नित्यंनमोनमः ॥ वातायसर्वप्राणाधिपतये इमं सतोयमाषभक्तबलिंनमः बलिंभ क्षक्रतुंरक्षयजमानंकुशलंकुरु ॥ ६ ॥ उत्तरकलशेगदांपूजयेत् एह्येहियज्ञेश्वरयज्ञरक्षां विधत्स्व नक्षत्रगणेनसार्द्धम् ॥ सर्वौषधीभिः पितृभिः सहैवगृहाणपूजांभगवन्नमस्ते ॥ इतिध्यानम् ॥ यक्षस्कंधसमारूढंगदाहस्तंमहाबलम् ॥ आवाहयामिधनदंपूजेयंप्रतिगृह्यताम् ॥ इत्यावाहनम् ॥

शलयुक्त करो ॥६॥ उत्तर कलशके ऊपर गदाकी पूजा करना हे यज्ञेश्वर यहां आप आओ आओ और यज्ञकी रक्षा करो आपके साथ नक्षत्रगण रहता है और सर्व औषधी रहती है और सर्व पितृगणकुं साथ लेके हे भगवन् रक्षा करो आपकुं नमस्कार है इति ध्यान। अथ आवाहन। यक्षदेवताओंके कांधेपे आप

आरूढ रहते हो आपके हाथमें गदा है और महाबली हो आप धनद हो क्या धनके देनेवाले हो सो आपकुं इस यज्ञमें हम आवाहन करते हैं सो आओ और पूजाकुं अंगीकार करो । इति आवाहन । सर्व नक्षत्रोंके मध्यमें आप सोमराजा होके स्थित होय रहे हो । शुक्ल नाम श्वेतवर्ण आपका है गदा आपके हाथमें है सो हम आपकुं वारंवार नमस्कार करते हैं । इमं देवेति मंत्र करके पूजन करना । आप गौरवर्ण हो युगयुगमें

सर्वनक्षत्रमध्येयः सोमोराजाव्यवस्थितः ॥ शुक्लवर्णोगदाहस्तस्तस्मैनित्यंनमोनमः ॥ इमंदेवे तिपूजनं कुर्विदंगइतिश्वेतपताकांदद्यात् तत्रसुमुखंपूजयेत् ॥ गौरस्त्वंचयुगेजातः सर्वौषधिसम न्वितः ॥ नक्षत्राधिपतिः सौम्यस्तस्मैनित्यंनमोनमः ॥ कुबेरायधनाधिपतयेइमंसतोयमाष भक्तबलिंनमः बलिंभक्षक्रतुंरक्षयजमानंकुशलंकुरु ॥ ७ ॥ ईशानकलशेशूलं पूजयेत् ॥ एह्येहि

प्रकाशक हो सर्व ओषधि करके युक्त हो नक्षत्राधिपति हो सौम्यरूप हो सो आपकुं नित्य वारंवार नमस्कार करते हैं धनाधिपति कुबेर भगवान्कु जलसहित माषभक्त बलि देते हैं सो आप बलिकुं भक्षण करो यज्ञकी रक्षा करो यजमानको कुशलयुक्त करो ॥ ७ ॥ ईशानकलशके ऊपर शूलका पूजन करना हे सर्वेश्वर आप

सिद्ध देवताओंके संघकुं साथ रखते हो त्रिशूल खट्वांगधारीके साथ रहते हो और यज्ञदेवता यज्ञेश्वर यज्ञकी सिद्धिके अर्थ आओ आओ प्रजाकुं अंगीकार करो इति ध्यानं । वृषके कांधेपै आप स्थित रहते हो त्रिशूल हाथमें है महाबली हो ईशानरूप हो सो आपकुं इस यज्ञमें हम आवाहन करते हैं सो आगमन

सर्वेश्वरसिद्धसंघैस्त्रिशूलखट्वांगधरेणसार्द्धम् ॥ यज्ञेज्ययज्ञेश्वरयज्ञसिद्धौगृहाणपूजां भगवन्नम स्ते इतिध्यानम् ॥ वृषस्कंधसमारूढंशूलहस्तंमहाबलम् ॥ आवाहयामिचेशानंपूजेयंप्रतिगृ ह्यताम् इत्यावाहनं ॥ सर्वदेवाधिपोदेवईशानः शुक्लविग्रहः ॥ शूलपाणिर्विरूपाक्षोरुद्राधिप तयेनमः ॥ ईशावास्येतिपूजनं ॥ अभित्वाशूरनोनुमेतिश्वेतपताकांदद्यात् ॥ तत्रसुप्रतिष्ठित

करो और पूजाकुं अंगीकार करो । इति आवाहनं । परंतु आप सर्वदेवताके अधिप हो देव हो ईशान नाम प्रेरकरूप श्वेत शरीरवान् त्रिशूल जिसके हाथमें है भयंकर जिसके नेत्र हैं एकादश रुद्रोंका अधिप-तिकुं नमस्कार है । ईशावास्य इस मंत्र करके पूजन करना अभित्वा० यह मंत्र बोलके श्वेत ध्वजा देना

ईशान पुरुष शुक्र सर्वदेवाधिप महान् ऐसे नाम बोलके सर्वदेवाधिपति ईशानदेवकुं जलसहित उडदका बलि देना सो हे ईशान बलि भक्षण करो यजमानके यज्ञकी रक्षा करो यजमानको कुशलयुक्त करो ॥ ८ ॥ नैर्ऋत्य वरुण कोणके मध्यभागमें कलशपै चक्रकी पूजा करनी। परंतु आवाहन करना हे पातालधराधरेंद्र

मीशानं पूजयेत् ॥ ईशानः पुरुषः शुक्रः सर्वदेवाधिपोमहान् ॥ शूलहस्तोविरूपाक्षस्त स्मैनित्यं नमोनमः ॥ ईशानायसर्वदेवाधिपतयेइमंसतोयमाषान्नभक्तबलिंनमः ॥ बलिंभक्ष क्रतुंरक्षयजमानंकुशलंकुरु ॥ ८ ॥ नैर्ऋत्यवरुणयोर्मध्येकलशेचक्रंपू० ॥ एह्येहिपातालधराध रेंद्रनागांगनाकिन्नरगीयमानः॥यक्षोरगेंद्राप्सरलोकसंघैरनंतरक्षाध्वरमस्मदीयं॥इतिध्यानं ॥ निःशेषजगदाधारमशेषसुरगणार्चितं ॥ आवाहयामियज्ञेस्मिन्पूजेयंप्रतिगृह्यतां ॥ इत्यावाह

आओ आओ नागपत्नी किन्नरियों करके आप गीयमान हो और यक्ष उरगेंद्र अप्सराओं करके आप उपगीयमान हो हमारे यज्ञकी रक्षा करो ऐसा ध्यान करना ॥ सर्वजगत्का आधार हो सर्वदेवताओंकरके अर्चित हो सो इस यज्ञमें आगमन करो यह जो पूजा है तिसकुं अंगीकार करो। इति आवाहन ॥ सर्पोंका

अधिपति हो आप अनंतदेव हो धूम्ररूप हो नित्य पाताललोकमें वसते हो अनंतरूप हो आपकुं नमस्कार है नमस्कार है। नमोस्तु सर्पेभ्य इस मंत्रकरके पूजन करना और ये मा रोचन इस मंत्रकरके धूम्रवर्णकी ध्वजा देना यहां धातारदेवताका पूजन करना। जिसने ब्रह्मांड अपने मस्तकपै पुष्पकी नाई धार रखा है

नं॥ पन्नगाधिपतिर्देवअनंतोनामधूम्रकः ॥ पातालेवसतेनित्यमनंतायनमोनमः ॥ नमोस्तुसर्पेभ्यइतिपूजनं॥ येमारोचनेतिधूम्रपताकांदद्यात्॥ तत्रधातारंपूजयेत्॥ इमंयोनंतरूपेणब्रह्मांडंसचराचरं॥ पुष्पवद्धारयेन्मूर्ध्नितस्मैनित्यंनमोनमः॥ अनंतायसर्वयज्ञाधिपतये इमंसतोयमाषभक्तबलिंनमः बलिंभक्षक्रतुंरक्षयजमानंकुशलंकुरु॥ ९॥ इंद्रेशानयोर्मध्येक

अनंतरूप धारके सो ऐसा भगवान् है तिसकुं नित्य नमस्कार करता हूं। सब यज्ञोंके पति अनंत भगवान्कुं जलसहित माषभक्त बलि देना सो बलिकुं भक्षण करो यज्ञकी रक्षा करो यजमानकुं कुशलवान् करो॥ ९॥ पूर्वईशानके मध्यमें कलशके ऊपर पद्मकी पूजा करना हे विश्वाधिपते हे सुरेश हे लोकेश पितृदेवताओंकुं

साथ लेके यहां यज्ञमें आगमन करो आगमन करो आप सर्वके विधता हो आपका अनंत प्रभाव है जगत् और हमारा यज्ञ जिसका भलेका करनेवाला हो श्वेत हंसपै आरूढ हो कमलोद्भव हो जगत्का गुरु हो सो इस यज्ञमें आपकुं हम बुलाते हैं सो आओ पूजा अंगीकार करो । इति आवाहन । पाताललोक पुष्पके

लशेपद्मंपूजयेत् ॥ एह्येहिविश्वाधिपतयेसुरेशलोकेशसार्धंपितृदेवताभिः ॥ सर्वस्यधातास्य मितप्रभावोविश्वाध्वरंनः सततंशिवाय॥श्वेतहंससमारूढंपद्मयोनिंजगद्गुरुम् ॥ आवाहयामि यज्ञेस्मिन्पूजेयंप्रतिगृह्यताम्॥इत्यावाहनं ॥पातालकुसुमाकारो ब्रह्मसर्वार्थसूत्रधृक्॥सर्वलो कपतिर्ज्येष्ठस्तस्मैनित्यंनमोनमः॥आब्रह्मन्निति पूजनं ब्रह्मजज्ञानमिति सर्ववर्णपताकांदद्यात्

आकार है ब्रह्म भगवान् सर्व बातोंका सूत्र धार रखा है सर्व लोकपतियोंका ज्येष्ठ स्वामी है ऐसे आप हो तिनकुं हम वारंवार नमस्कार करते हैं नित्य । आ ब्रह्मन्निति मंत्रकरके पूजन करना ब्रह्मेति मंत्र बोलके सर्व रंगकी पताका देना तहां विधातार देवका पूजन करना कमलमें पैदा हुआ है चार वेदका आधार है

और पितामह है यज्ञोंका अधिष्ठाता है निरंतर तिसकुं नित्य नमस्कार करते हैं वारंवार सर्व लोकोंका पति ब्राह्मणकुं जलसहित माष नाम उडदोंकी बनाई हुई बलि दिया है सो बलिकुं भक्षण करो यज्ञकी रक्षा करो यजमानको कुशलयुक्त करो ॥ १० ॥ इति दिक्पालपूजनं समाप्तं ॥ अथ इसके अनंतर चतुर्दश यम-

तत्रविधातारंपूजयेत् । पद्मयोनिश्चतुर्मूर्तिर्वेदाधारः पितामहः ॥ यज्ञाध्यक्षश्चसततंतस्मैनित्यंनमोनमः ॥ ब्रह्मणेसर्वलोकाधिपतयेइमंसतोयमाषभक्तबलिंनमः । बलिंभक्षक्रतुंरक्षयजमानंकुशलंकुरु ॥१०॥ इतिदिक्पालपूजनम् ॥ अथचतुर्दशयमान् आग्नेय्यांनैर्ऋत्यांतंचतुर्दश कलशोपरिसंस्थाप्य॥यमायधर्मराजायमृत्यवेचांतकायच ॥ वैवस्वतायकालायसर्वभूतक्षयायच ॥ औदुंबरायदध्नायनीलायपरमेष्ठिने ॥ वृकोदरायचित्रायचित्रगुप्तायवैनमः ॥ इति

देवताओंका स्थापन अग्निकोणसे लेके नैर्ऋति कोणतक चतुर्दश कलशोंके ऊपर स्थापन करना पीछे नाम-मंत्रों करके लोह प्रतिमाके मध्य आवाहन पूजन करना धर्माय नमः धर्मं आवाहयामि स्थापयामि

पाद्यादिभिः पूजयामि इस माफिक सर्वकुं बुलाना पूजा करना पाद्य, अर्घ्य, आचमन, स्नान, गंध, धूप, दीप, नैवेद्य, तांबूल, दक्षिणा, जुदे सर्वके नाममंत्रोंसे चतुर्दशोंकी पूजा करना पीछे रक्षा करना ब्रह्मा विष्णु शिव इनकुं साथ लेके चतुर्दश नाम युक्त यम हैं सो रक्षा करो इस माफिक प्रथम प्रार्थना करना पीछे मंड-

नाममंत्रैरावाह्यपाद्यादिभिः पृथक्पृथक्पूजयेत् इतिचतुर्दशयमपूजा ॥ त्रैलोक्येयानिभूतानिस्थावराजंगमानिच ॥ ब्रह्मविष्णुशिवैः सार्द्धंरक्षांकुर्वंतुतानिवै ॥ इतिप्रथमप्रार्थनांपठेत् ॥ ततोमंडपाभ्यंतरेयजमानः प्रविश्य गृहीतपुष्पांजलिः पूर्वाभिमुखं । देवदानवगंधर्वायक्षराक्षसपन्नगाः ॥ ऋषयोमुनयोगावोदेवमातरएवच ॥ सर्वेममाध्वरेरक्षांकुर्वंत्वेते

पके अंदर यजमान प्रवेश करके पुष्प हाथोंमें लेके पूर्वाभिमुख होके देव, दानव, गंधर्व, यक्ष, राक्षस, पन्नग, ऋषि, मुनि, गाव, देवमातर ये इतनी देवता मेरे यज्ञमें आओ यज्ञकी रक्षा करो एते नाम ये देवतादिक हैं सो आनंदसे मेरे यज्ञमें रहो । ऐसा बोलके सर्वकुं पुष्पांजलि देना प्रसन्न होनेके वास्ते ॥ पुष्पांज-

लिके विना सर्व देवपूजा निष्फल होती है सो इसी कारणसे पुष्पांजलि जरूर देना ये विधि जाननेवालेका काम है ॥ अथ नाम दशम दिनके अनंतर एकादशके दिन पात्र ब्राह्मणोंको निमंत्रण करना दश दिनके पीछे एकादशके दिन वृषोत्सर्ग करना पूर्वदिन नाम दशम दिन सायंकालमें आमिषरहित भोजन श्राद्धकर्त्ता करके

मुदान्विताः ॥ इतिसर्वेभ्यः पुष्पांजलिंत्यजेत् ॥ पुष्पांजलिं विनापूजा देवानांनिष्फलाभवेत्॥अतःपुष्पांजलिप्रांते दातव्यं विधिजानता॥अथैकादशाहेश्राद्धार्थंपात्रब्राह्मणनिमंत्रणादि ॥ दशाहानंतरंविप्रोवृषोत्सर्गादिपूर्वकमितिकर्मकुर्यात् ॥ ततः पूर्वदिनेनिरामिषमेकवारंभुक्त्वा अस्तंगतेदिनकरेरात्रौश्राद्धकर्ताविप्रनिवेशनंगत्वा सर्वभुक्तजनगृहेगोमयोपलिप्ता

सूर्य अस्त हुए पीछे रात्रिमें श्राद्धकर्त्ता ब्राह्मणोंके घर जाके ब्राह्मणोंके सर्व घरवालोंने भोजन किये पीछे गोबरका चौका लगायके दक्षिण दिशाकी ओर निम्न होवे ऐसी जमीन ऊपर आसन डालके ब्राह्मण बैठा होय तहां श्राद्धकर्त्ता बैठे पश्चात् श्राद्धकर्त्ता तो दक्षिणमुख बैठे और ब्राह्मण उत्तराभिमुख बैठे पीछे

ई. यह वृषोत्सर्गयज्ञकी वेदी है पू. षोडश १६ हाथ में अ.

कदली थंभः रुद्रः पद्मं इंद्रः ब्राह्मणासन शक्तिः कदली थंभः

यजमान यमः ०

पूर्वद्वारः धर्मराजः ०

मृत्युः ०

अंतकः ०

वैवस्वतः ०

समिधः कालः ०

हवनवेदी विष्णुवेदी सर्वभूतक्षयः ०

ब्राह्मणा० उ. गदा उत्तरद्वारः दक्षिणद्वारः यमः द.ब्राह्मणासनं।

गौः वृषभ यजमान औदुंबरः ०

स्नानपट्टा. सामग्री दध्रः ०

निलः ०

मंडपसर्वोपरि। परमेष्ठिः ०

वृकोदरः ०

चित्रः ०

पश्चिमद्वारः चित्रगुप्तः ०

कदली थंभः अंकुशं वरुणं चक्रं प्रेतमातृ खड्गं

वा. ब्राह्मणासन। प. कदली. नै. थंभः

इस माफक वेदि रच-के वृषोत्सर्गयज्ञ कर-ना और यजमान स्व-श्रद्धायुक्त यज्ञविधि करना । आचार्यः सुखशय्या नवीन देना मलिन नहीं देना । सप्त धान्य.

यजमान अपसव्य होके वांया गोडा मोडके बैठे पीछे हाथमें नागरपान लेके प्रथम प्रेतब्राह्मणका निमंत्रण करे परंतु एकादशके दिनके श्राद्धके वास्ते असुकगोत्रप्रेतका बोलके असुक प्रेतका नाम बोलके एकादशके दिन जो श्राद्ध करेंगे उसके वास्ते आपको ये जो पुष्प चंदन तांबूल यज्ञोपवीती धोती करके निमंत्रण

यांदक्षिणनिम्नवत्यांभूमौब्राह्मणमुदङ्मुखमुपवेश्य कृतापसव्योदक्षिणाभिमुखः पातितवामजानुः तांबूलमादायप्रेतब्राह्मणंनिमंत्रयेत् ॥ आशौचांते द्वितीयेह्नि असुकगोत्रस्यासुकप्रेतस्यैकादशाहश्राद्धकृत्ये भवंतंप्रेतब्राह्मणमेभिरुपनीतद्रव्यैस्तांबूलत्वेनत्वामहंनिमंत्रये ॥ ॐ गतोसिदिव्यलोकांस्त्वंकृतांतंविहितःपथः ॥ मनसावायुपूतेनविप्रत्वाहंनिमंत्रये ॥ आमं

करते हैं सो तुम श्राद्धमें आना ऐसा वचन यजमान बोले पीछे ब्राह्मण बोले मैं तुमारे आमंत्रित हो गयाहूं पीछे यजमान ब्राह्मणोंको ऐसा बोले क्रोध नहीं करना । पवित्र रहना । वेदवचन बोलना और आपसमें भावितव्य करने करके सर्वोपरि परिश्रम त्याग देना काम क्रोध त्याग करना परभातही श्राद्धकर्ममें साव-

धान रहना । आप दिव्यलोककुं गये हो यममार्ग जानेका है वायुरूप मन करके ब्राह्मणमें तेरेकुं युक्त करता हूं ॥ मेरेकुं तुम निमंत्रणसे निमंत्रित करा है जो यह रात्रि विघ्नरहित निकलेगा तो सर्व कर्म करेंगे ॥ ये ब्राह्मणके वचन है परंतु सूर्योदयमें पात्र ब्राह्मणके केश श्मश्रु नख छेदन करायके ताम्रके पात्रके मध्य

त्रितोस्मीतितेनोक्ते अक्रोधनैरितिपठित्वाविप्रमुद्दिश्य इतिब्राह्मणंनिमंत्र्यपूर्वदिनेतदह्निवा यद्यविघ्नेनरजनीयास्यतितार्हिश्वः कालेसर्वमेतत्करिष्यामीति तेनोक्ते सूर्योदयेपात्रब्राह्मण स्यकेशश्मश्रुकर्मनखच्छेदंकारयित्वा ताम्रपात्रेणतैलोद्वर्तनोपकरणम् आशौचांतेद्वितीयेह्नि नदीतीरेगृहे वान्यशुद्धभूमौवाश्राद्धभूमिंप्रकल्प्य पंचगव्येनोपलिप्यज्वलदंगारैः संशोध्यगौ

तैलका उबटन करना परंतु एकादशका कर्म करवानेके वास्ते भूमि नदीके तीरपै देखना अथवा अपने गृहके पास तथा गृहमध्ये अथवा और कोई भूमि शुद्ध मिले तो देखके भूमिकुं पंचगव्यसे शोधना अग्निके बलते हुए अंगारे वहां भूमिके ऊपर डालना पश्चात् संशोधन करके गौर मृत्तिका वहां भूमिपै डालना पीछे

तिल सर्षप लेके विखेरना और पाक जहां बनावे वहांभी तिल विखेरना पीछे अपनी स्त्रीके हाथसे अथवा अपनेही हाथसे पिंडोंका पाक पकाना नवीन पात्रमें। पीछे ब्राह्मणके वास्ते पाद्यार्घ्यपात्र देना इदं पाद्यं ऐसा बोलके ब्राह्मणकुं पात्र देना पीछे ब्राह्मणकुं नमस्कार करके प्रेतका हित चाहके तिलतैल जो पूर्व

रमृत्तिकामाच्छाद्यतिलसर्षपैश्चप्रविकिरेत् पाकस्थानेतिलान्विकीर्य ततः स्त्रीद्वारास्वयंवा पिंडार्थं नूतनभांडेपाकमारभेत् ततः पाद्यार्घ्यपात्रदानेइदंपाद्यमितिपात्रंदत्त्वा द्विजंनमस्कृत्यप्रेतहितमुद्दिश्यतिलतैलेनजानुनीपादौब्राह्मणस्यप्रक्षालयेत् ततस्तिलजलैः पादार्घ्यमापूर्यंब्राह्मणचरणंप्रक्षाल्यपादार्घ्यं प्रदापयेत। अमुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य एकादशाहकृत्ये

ताम्रमें स्थापित किया है तिसके अंदरसे लेके ब्राह्मणके गोडेको लगाके धोना पश्चात् तिल जल एक पात्रमें डालके अर्घ्य पूरण करके ब्राह्मणके चरण प्रक्षालन करना पादयोः पगोंमें अर्घ्य देना। पश्चात् हाथमें जल तिल मोटक लेके अमुकगोत्रस्याऽमुकप्रेतस्य एकादशमे दिन या पादार्घ्य मैं देता हूं सो तेरेकुं प्राप्त होवो। पश्चात् पादार्घ्याचमनीय देके आप आचमन करके पाकस्थानमें जाके पाक बनाके ल्याय रखे पश्चात् ब्रा-

ह्मणकुं आसनपै बैठायके प्रथम ब्राह्मणकुं शय्या देना शय्याका स्थापन दानसंग्रहमें दिखाया है । देवशय्या-का शिर पूर्वदिशामें करना यज्ञशय्याका शिर दक्षिणदिशामें करना । तीर्थशय्याका शिर पश्चिमदिशामें करना प्रेतशय्याका शिर उत्तरदिशामें करना । अथ अब ब्राह्मणवरण कहते हैं । अद्य कर्त्तव्य जो शय्यादानसे आदि

एषः पाद्यार्घोमयादीयतेतवोपतिष्ठतां ततः पाद्यार्घ्याचमनीयंस्वयमाचम्यपाकस्थानंगत्वा ततआसनंनिवेश्यप्रथमतः ब्राह्मणायशय्यांदद्यात् । शय्यास्थापनंदानसंग्रहे । देवशय्याशिरःप्राच्यांमखशय्यातुदक्षिणे । पश्चिमेतीर्थशय्यायांप्रेतशय्याशिरोत्तरे ॥ अथब्राह्मणवरणं । अद्यकर्त्तव्यशय्यादानादिदाननिमित्तकममुकशर्माणंब्राह्मणंएभिरुपनीतद्रव्यैस्त्वामहंवृणे ॥ वृतोस्मिइतिप्रतिवचनम् । ततःपूर्वाभिमुखउदङ्मुखोवा शय्यांदद्यात्॥सोपस्करणायेशय्या

लेके दानके निमित्त अमुकशर्मा ब्राह्मणकुं ये जो प्राप्त द्रव्य है जिनकरके आपकुं वरता हूं वृतोस्मि ऐसा वचन ब्राह्मण बोले पश्चात् यजमान पूर्वकी तरफ मुख करे अथवा उत्तरकी तरफ मुख करे शय्यादान करे परंतु उपस्कर नाम सर्व जिनसोंकरके युक्त जो शय्या तिसकुं नमस्कार करना ब्राणह्मकुं ब्राह्मणाय पाद्यं

समर्पयामि ब्राह्मणाय अर्घ्यं० इस माफक बोलके पूजन करना फल वस्त्र गंधसे आदि लेके पदार्थोंसे ब्राह्मणका पूजन करके पीछे ब्राह्मणके अगाडी संकल्पका जल हाथमें रखके ऐसा बोलना हे भूदेव यह जो प्रेतशय्या है सो मैं आपकुं देता हूं ऐसा वचन उच्चार करके संकल्पका जल ब्राह्मणके हाथमें रखना पीछे

यैनमः। इतिब्राह्मणायचतुर्थ्यंतेनपूजयेत्। फलवस्त्रसमन्वितगंधादिभिःब्राह्मणायचसंपूज्य। इमां शय्यांसोपकरणांब्राह्मणायददामीतिद्विजकरेजलदानंवारिणाशय्यायामभिषेचनंच। ततोऽपसव्येनकुशत्रययवतिलजलान्यादाय अद्येत्यादिकालज्ञानंकृत्वा अशौचांतद्वितीयेह्निअमुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्यप्रेतत्वविमुक्तिकामः स्वर्गलोकगमनवाससुखशयनार्थकामःइमांशय्यां

जलकरके शय्याका अभिषेचन करना पश्चात् अपसव्य हुआ थका मोटक तिल जल हाथमें लेना अद्येत्यादि ऐसा बोलके फिर कहना सूतकके अंतका दिन एकादशाह है सो आज दिन हे द्विज असुकगोत्रस्याऽसुकप्रेतस्य प्रेतयोनि छुटनेके वास्ते और प्रेतका स्वर्गवास होनेके वास्ते स्वर्गमें सुखशयन मिलनेके

वास्ते कामना धारके यह जो शय्या है सो सामग्रीसहित इसके विष्णु देवता है फलवस्त्रोंकरके युक्त है और उत्तानः अंगिरस इस शय्याका देवरूप ऋषि हैं सो हम असुकगोत्र असुकशर्मा ब्राह्मणकुं अच्छतिरहसे देता हूं संकल्पका जल हाथमें ब्राह्मण लेके स्वस्ति इति पछि वचन ब्राह्मण बोले तो अच्छा है। पीछे

सोपकरणांविष्णुदैवतांफलवस्त्रसमन्वितां उत्तानांगिरसदैवतां वा यथानामगोत्रायामुकशर्म्मणे ब्राह्मणायतुभ्यमहंसंप्रददे स्वस्तीतिब्राह्मणोवदेत्।सोपकरणशय्यांस्पृशेत्। कृतैतच्छय्यादानप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थंदक्षिणां हिरण्यमग्निदैवतंतन्मूल्योपकल्पितद्रव्यंवाअमुकगोत्रायामुकशर्मणेब्राह्मणायतुभ्यमहंसंप्रददे॥स्वस्तीतिप्रतिवचनं। ततःफलवस्त्रसमन्वितांकांचनपुरुष

सामग्रीसहित शय्याकुं ब्राह्मण स्पर्श करे पश्चात् हस्ते स्वर्णदक्षिणाजलमादाय नाम लेके ऐसा वचन बोलना किया जो शय्यादान तिसकी प्रतिष्ठाके वास्ते सुवर्णकी दक्षिणा अग्नि देवता जिसका अथवा दक्षिणाका मोलरूपि द्रव्य अमुकगोत्र अमुकशर्मा ब्राह्मणकुं मैं देता हूं। दानदक्षिणा लेके पीछे ब्राह्मण बोले स्वस्ति

होवो पश्चात् फलवस्त्रसमन्वित कांचनकी प्रतिमाका पूजन करना । मनोर्ज़ूति मंत्र बोलके प्रतिमाकी प्रतिष्ठा करना पीछे पाद्य, अर्घ्य, आचमनीय, स्नान, गंध, धूप, दीप, नैवेद्य, तांबूल, द्रव्य, अक्षत, इतनी जीनसुं करके प्रतिमा पूजके प्रतिमा ब्राह्मणकुं देना ॥ हस्ते मोदक तिल जल लेके बोलना अद्य सूतकके द्वितीय

प्रतिमांपूजयेत् । ॐमनोर्ज़ूतिर्जुषतामाज्यस्यबृहस्पतिर्यज्ञमिमंतनोत्वरिष्टंयज्ञ ँ समिमंदधातुविश्वेदेवासइहमादयंतामोंप्रतिष्ठेतिप्रतिष्ठापयेत् । पाद्यार्घाचमनीयस्नानंगंधंधूपदीपनैवेद्यताम्बूलद्रव्याक्षतैः संपूज्यब्राह्मणायनिवेदयेत् ॥ अद्याशौचांतद्वितीयेह्निअमुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्यप्रेतत्वविमुक्तिपूर्वकाक्षय्यस्वर्गाद्युत्तमलोकगमनकामतयाइमंकांचनपुरुषं फलवस्त्र

दिन नाम एकादशके दिन अमुकगोत्र अमुकप्रेतकी मुक्तिकी वाञ्छा करके और अक्षय स्वर्गप्राप्तिकी कामना करके या जो प्रतिमा कांचनकी है फलवस्त्रों करके युक्त है प्रतिमाका विष्णु देवता है सो यथानाम-गोत्र अमुकशर्मा ब्राह्मणकुं हम देते हैं सो प्रतिमा लेके ब्राह्मण पीछे वचन स्वस्तिरस्तु ऐसा बोले पुनः हस्ते जल लेना अब क्रिया जो प्रतिमादान तिसकी प्रतिष्ठा सिद्ध होनेके अर्थ अग्नि देवता जिसका ऐसा

स्वर्ण अथवा स्वर्णका मोलरूपी द्रव्य अमुकगोत्र अमुकशर्मा जो तू ब्राह्मण है सो मैं तेरेकुं दक्षिणा देता हूं
स्वस्ति यजमानके होवो ऐसा पीछे वचन ब्राह्मण वदेत् परंतु सर्वसामग्रीसहित जो शय्या और कांचनकी

समन्वितं विष्णुदैवतंयथानामगोत्रायाऽमुकशर्म्मणेब्राह्मणायतुभ्यमहंसंप्रददे । स्वस्तीतिप्र
तिवचनम् । अद्यकृतैतत्फलवस्त्रसमन्वितकांचनपुरुषदानप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं दक्षिणांहिरण्यम
ग्निदैवतंतन्मूल्योपकल्पितंद्रव्यं वा अमुकगोत्रायअमुकशर्मणेब्राह्मणायतुभ्यमहंसंप्रददेस्व
स्तीतिप्रतिवचनं ॥ ततः सोपकरणशय्यांकांचनपुरुषंस्पृशेत्स्थापयेत् । ततोद्विजदंपतीपु
ष्पाक्षतैःसंपूजयेत् ॥ अद्याशौचांतद्वितीयेऽह्निअमुकप्रेतस्यप्रेतत्वविमुक्तिकांक्षी स्वर्गाद्युत्त
मलोकगमनकामः द्विजदंपतीपूजनमहंकरिष्ये । इतिकुशत्रययवतिलजलैः संकल्पः । अथ

मूर्तिकुं स्पर्श करे स्थापन कर रखे पश्चात् स्त्रीसहित ब्राह्मणकी पूजा करना पुष्पाक्षत चढाने ऐसा संकल्प
बोलके अभी आशौचांत जो एकादशवां दिन है तिसमें हम पत्नीसहित ब्राह्मणकी पूजना करेंगे ऐसा संकल्प
छोडके मोटक जल तिल हाथमें लेना द्विजदंपतीभ्यां या अर्घ्य है सो लेना स्त्रीसहित ब्राह्मणके वास्ते जो

गंध है सो लेना पुष्प लेना धूप लेना नैवेद्य लेना तांबूल लेना आभूषण लेना वस्त्र लेना ये देके पूजनके समयमें स्त्रीसहित ब्राह्मणकुं नमस्कार है पांच पात्र प्राणिके वास्ते ब्राह्मणकुं देना। संकल्प करके अद्ये-त्यादि बोलके अमुकगोत्र अमुकप्रेतकी प्रेतयोनि निवृत्त होनेके वास्ते मुक्तिकी वांछाके वास्ते उत्तमस्वर्गादि

द्विजदंपतीभ्यांनमः॥इत्यर्घ्यंगंधाक्षतपुष्पधूपदीपनैवेद्यवासोभिः पूजयेत्। अद्यैतानिगंधपुष्पधूपदीपनैवेद्यादिविभूषणवासांसिद्विजदंपतीभ्यांनमः ॥ पंचपात्रंदेयं ॥ अथसंकल्पः ॥ अद्यैत्यादिअमुकगोत्रस्याऽमुकप्रेतस्यप्रेतत्वविमुक्तिकांक्षीस्वर्गाद्युत्तमलोकवासकामनयासूपौदनादीनिइमानिपंचसंख्याकपात्राणिभोजनपाकार्थं अमुकगोत्रायाऽमुकशर्म्मणेब्राह्मणाय तुभ्यमहंसंप्रददे।इतिकेचित् स्वस्तीतिप्रतिवचनं ॥ पात्रदानप्रतिष्ठार्थंदक्षिणांदद्यात्॥अथ

लोक प्राप्त होनेके वास्ते सूपछाज अन्नसहित भोजनके पंचसंख्यापात्र अमुकगोत्र अमुक ब्राह्मण जो तू है तेरेकुं हम प्रेतके वास्ते पात्र देते हैं ऐसा बोलके संकल्पका जल ब्राह्मणके हाथमें डालना लेके संकल्प ब्राह्मण स्वस्तिरस्तु ऐसा वचन बोले तो अच्छा है पीछे पात्रदानकी प्रतिष्ठासिद्धिके अर्थ ब्राह्मणकुं दक्षिणा

देना। अब वृषोत्सर्गका आरंभ करना। किसी मनुष्यके श्रेष्ठ बहुत पुत्र होवें और उन पुत्रोंके मध्यका कोई पुत्र गया करवाय देवे अथवा कोई पुत्र अश्वमेध करे कोई पुत्र वृषोत्सर्ग करे तो ये पुत्र श्रेष्ठ जानने। वृषोत्सर्ग और अश्वमेध और गया करना ये तीनका तुल्य पुण्य है। प्रेतकर्ममें आशौचांत जो एकादश दिन है तिसमें वृषोत्सर्गका विधि करना अथवा कोई मनुष्य अपने जीवतेही वृषोत्सर्ग करे तो कार्ति-

वृषोत्सर्गारंभः। एष्टव्याबहवःपुत्रायद्येकोपिगयांव्रजेत्। यजेतवाश्वमेधेननीलंवावृषमुत्सृजेत्॥ तत्राशौचांतद्वितीयेऽह्निवृषोत्सर्गःकर्त्तव्यः। कार्तिकीचैत्रीवैशाखीवारेवतीयुताश्वयुज्याजीवतोवृषोत्सर्गकालः। ततोमातृपूजापूर्वकंनांदीमुखश्राद्धंकृत्वागवांगोष्ठेपंचभूसंस्कारान्कृ

कमासकी शुद्ध तिथिमें रेवतीनक्षत्रमें और वैशाखमासकी शुद्ध तिथिमें चैत्रमासकी शुद्ध तिथिमें आश्वि-नमासकी शुद्ध तिथिमें रेवतीनक्षत्रमें वृषोत्सर्ग करना परंतु कार्तिककी वैशाखकी चैत्रकी पूर्णिमासीके दिन करना जब वृषोत्सर्ग करे तब प्रथम षोडशमातृकाकी पूजा करना नांदीमुखश्राद्ध करना गौओंकी गोशा-

लामें नांदीमुखके वास्ते जमीनके पंचसंस्कार पंचगव्यादि कर करे जलसहित करना लौकिक अग्निका स्थापन करना और पितृब्राह्मणकुं वरणा परंतु संवत्सरसे उपरांत कामनापूर्वक वृषोत्सर्ग करे तोभी इसी विधिसे करना परंतु नांदीमुखश्राद्धसंबंधी कर्मकी आवश्यकता होय तो प्रथम वर्षमें निश्चय करके अधि-

त्वाल्लौकिकाग्नेः स्थापनंकुर्यात् । पितृब्राह्मणंवृणुयात् । संवत्सरादुपरियदाक्रियते काम्यवृषोत्सर्गस्तदाऽनेनप्रकारेणकर्त्तव्यः आभ्युदयिकश्राद्धसंबंधिकर्म्मण्यवाऽवश्यकेप्रथमवर्षेन्यूनाधिकारः॥तत्राशौचांतेद्वितीयाहएववृषोत्सर्गकालः।नकार्तिक्यादिकालः। अथवृषलक्षणं। पृथुकर्णोमहास्कंधःसूक्ष्मरोमाचयोभवेत्। श्वेतोदरः कृष्णपृष्ठोब्राह्मणस्यप्रशस्यते। लोहितो

कार है तत्र नाम तहां इसके अंततः नाम मध्य एकादश दिनसे उपरांत त्रयोदशदिने वृषोत्सर्ग करनेका जीवित मनुष्योंकुं वृषोत्सर्ग काल मुख्य है कार्तिक्यादि पूर्णिमाका कुछ जरूर नहीं। अथ नाम अब वृषके लक्षण कहते हैं। बडे कर्ण जिसकुं होय बडा कांधा जिसका होवे सूक्ष्म रोमावली जिसकी होवे श्वेत उदर होवे काली पीठ होवे ऐसे वृष ब्राह्मणकुं चाहिये। और लालगात्र जिसीके होवे खुर पुच्छ पांडुर रंग होवे

॥३७॥

माथेपे तिलक होवे ऐसा वृषभ क्षत्रियकुं कहा है परंतु पीले रंगका वृषभ वैश्यकुं कहा है और शूद्रकुं काले रंगका वृषभ कहा है । और कहते हैं वृषभ जब अपने शृंगोंसे जमीन खोदे उसी दिनके अन्नपान पितृदेवतोंकुं विशेष आनंद करके प्राप्त होता है सूतकके अंतका दूसरा दिन एकादशाहके दिन वृषोत्सर्ग

यश्चगात्रेषुखुरपुच्छेषुपांडुरः । ललाटेतिलकंयस्यक्षत्रियस्यप्रशस्यते । कांचनाभस्तुवैश्य स्यशूद्रस्यकृष्णउच्यते । शृंगेणोल्लिख्यतेभूमिर्यत्रक्कचनहृन्त्यपि ॥ पितॄणामन्नपानंतुप्रभूतमु पतिष्ठति ॥ सूतकांतद्वितीयेऽह्निवृषोत्सर्गः प्रशस्यते । तस्याभावेचकार्तिक्यांचैत्र्यांसंवत्स राद्दते । उत्सृष्टोवृषभोयस्मिन्पिबत्यंबुजलाशये । तज्जलंचसुधातुल्यंपितृभ्यउपतिष्ठति । त्रिहायनोवृषः वत्सतर्य्यास्त्रिहायन्योवाएवंलक्षणंवृषंनिरूप्य। अद्याशौचांतद्वितीयेह्नि अद्या

करना श्रेष्ठ है । एकादशके दिन वृषोत्सर्ग नहीं करे तो कार्तिकी पूर्णिमाकुं वृषोत्सर्ग करना श्रेष्ठ है संवत्स-रके विना चैत्री पूर्णिमाकुं वृषोत्सर्ग करना और उत्सर्ग किया हुआ वृषभ जिस जलाशयमें पानी पीवे तो वही जल अमृतकी तुल्य जानना और पित्रेश्वरोंका तप स्थित रहता है वृषभ वर्ष ३ होवे तो अच्छा है

और बाछडी वर्ष ३ होवे तो अच्छी है पुनः हस्ते मोटक तिल जल लेना पीछे बोलना अद्य आशौचां-
तदिने अमुकगोत्र अमुकप्रेतको उत्सृज्यमान जो वृषभ और बाछडी चार जिनके अंगके ऊपर जितने
रोमावली होवे तितनेही कोटि वर्षोंका सहस्र वर्षोंताईं स्थिर रुद्रलोकमें निवास प्राणीका होवे और वृष-

मुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्योत्सृज्यमानवृषभवत्सतरीचतुष्टयरोमसमसंख्याकवर्षकोटिसहस्राव
च्छिन्नरुद्रलोकनिवासपूर्वकतदुत्सृष्टपुच्छाग्रजलपितृतृप्तिपूर्वकतदुद्धृतकूलशृंगाग्रस्थितमृ
त्तिकासमकल्पितभक्ष्यभोज्यतृप्तिपूर्वकगोमध्यकृतक्रीडासमानकालिकाऽप्सरोगणसेवित
विमानारोहणपूर्वकपितृगणतृप्तिकामः सोपकरणवत्सतरीचतुष्टयसहितनीलवृषोत्सर्गमहंक

भकी पुच्छ ऊपर तर्पण करे जिसका जल पित्रेश्वरोंकी तृप्ति करनेवाला है और शृंगोंसे जितनी मृत्तिका
वृषभ उठावे उतनेही भक्ष्य भोज्य तृप्तिसहित गोमध्यमे किया जो क्रिडाचारित्र तिनकी तुल्य स्वर्गमें
अप्सरागण सेवन प्राणीको करते हैं और विमानमें बैठके जाना और पितृगणोंका तृप्त होना सर्वसामग्री-

सहित वाछडी चारों सहित नील वृषका उत्सर्ग नाम त्याग मैं करता हूं ऐसा संकल्प छोडके उत्सर्ग करना
अब यहां आदिमें ईशानकोणमें रुद्रकलश सर्वौषधियुक्त शन्नोदेवीति मंत्र करके रुद्रकलशका पूजन करना
पहला स्थापन करके पीछे सहस्रशीर्षाका पाठ करना नमस्ते रुद्रमन्यवः इस रुद्राध्यायका पाठ करना पीछे

रिष्ये ॥ तत्रादावीशानेरुद्रकलशंसर्वौषधिभिः शन्नोदेवीत्यादिमंत्रेणसंस्थाप्यसंपूज्य पुरुष
सूक्तंरुद्राध्यायंजपेत् ततोमंडपाभ्यंतरे नैर्ऋत्यपश्चिमयोर्मध्येतृणमंडपंकारयेत् ॥ तन्मध्ये
सप्तप्रेतमातृःस्थापयेत् । तत्रप्रतिष्ठा सेंदुरादिभिः प्रेतमातॄर्निरूप्यकार्पासबीजेनसंपूज्यअष्ट
धातुमिलितलोहंचतत्रसंस्थाप्य । तद्यथा । कराली १ भीषणा २ रौद्री ३ यमदंष्ट्रा ४ कू

मंडपके अंदर जाके नैर्ऋति पश्चिमकोणके बीचमें तृणका मंडप प्रेतमातृकोंकी वेदीके ऊपर स्थापन करना
पीछे ईशवेदीपैं सप्त प्रेतमातृकाको स्थापन करना पीछे सिंदुरतैलसे प्रेतमातृका बनाके तोरनके आकार
पीछे रुईके बीज जो काकडों करके पूजन करना सप्तधातु मिलाके लोह यहां स्थापन करना इस माफक
प्रथम कराली स्थापन करना । भीषणा स्थापन करना । रौद्री स्थापन करना । यमदंष्ट्रा स्थापन करना ।

कृशोदरी स्थापन करना। उग्रचंडा स्थापन करना। महाकाली स्थापन करना ये सप्त प्रेतमातर हैं और केचित्के मतमें नव ९ प्रेतमातर हैं। हस्ते तिल जल मोटक लेके अद्य आशौचके पश्चात् एकादशवें दिनमें असुक गोत्र असुक प्रेतका प्रेतत्वपना दूर होनेकुं स्वर्गादि उत्तम लोक प्राप्त होनेकी कामना करके प्रेतमातृ-

शोदरी ५। उग्रचंडा ६ महाकाली ७ सप्तैताःप्रेतमातरः॥ अद्याशौचांतद्वितीयेह्निअमुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्यप्रेतत्वविमुक्तिकांक्षीस्वर्गाद्युत्तमलोकप्राप्तिकामनयासप्तप्रेतमातॄणांपूजनमहंकरिष्ये इतिसंकल्पः ॐ करालयैनमः १ भीषणायैनमः २ रौद्रायैनमः ३ यमदंष्ट्रायैनमः ४ कृशोदर्य्यैनमः ५ उग्रचंडायैनमः ६ महाकालयैनमः ७ इतिगंधादिअक्षतपुष्पधूपदीपतांबूलसमाषान्नसप्तवटकनैवेद्याचमनीयतांबूलादीनिप्रत्येकंसमर्पयेत्। संपूज्यएतत्पू

कोंका पूजन मैं करता हूं ऐसा संकल्प करना पीछे करालीकुं नमस्कार है। भीषणाकुं नमस्कार है। रौद्राकुं नमस्कार है। यमदंष्ट्राकुं नमस्कार है। कृशोदरीकुं नमस्कार है। उग्रचंडाकुं नमस्कार है। महाकालीकुं नमस्कार है। ऐसे नमस्कार करके गंध, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप, तांबूल, माषान्नभक्तबालि, वटका नैवेद्य,

आचमनीय, तांबूलादीनि ये जिनस सर्वके जुदी जुदी अर्पण करना ये पूजन है॥ इस पूजनसांगताकी सिद्धिके अर्थ लोह दक्षिणा ब्राह्मणकुं देना पश्चात् सप्त प्रेतमातृकाके समीप सप्त ७ कलश स्थापन करना पश्चात् शन्नोदेवीति मंत्र बोलके जलसे पूर्ण करना यवोसीति मंत्र बोलके कलशमें यव डालना तिलोसीति

जनसांगतासिद्ध्यर्थंलोहदक्षिणांब्राह्मणायदद्यात् । तत्समीपेकलशंस्थापयेत् ॥ सप्त ७ मृन्मयान्कलशान् इतिस्थापयित्वा। शन्नोदेवीतिजलंनिक्षिप्य यवोसीतियवान्। तिलोसीति तिलान्। पवित्रस्थेतिपवित्रकं। तज्जलानिशिरस्यभिषिच्य। ततः सव्येन पूर्वाभिमुखो रुद्राध्यायं पुरुषसूक्तंयद्देवादेवहेडनमितिजपेत्॥ ततोऽपसव्येन कुशयवजलान्यादाय ॥ अ

मंत्र बोलके तिल डालना पवित्रस्थेति मंत्र बोलके कलशोंमें पवित्र डालना पश्चात् कलशोंके जलसे मस्तकमें अभिषेक करना पश्चात् सव्य होके हाथमें दर्भ यव तिल जल लेके अद्याशौचांत द्वितीय दिन असुकगोत्र असुकप्रेतका प्रेतत्वपना छुटनेकी वांछा करके स्वर्गादि उत्तम लोककी प्राप्तिकी कामना करके वाछडी

चारों करके सहित वृषोत्सर्गयज्ञमें ब्राह्मणद्वारा हवन मैं करता हूं ऐसा संकल्प करना परंतु यजमान आपही हवन करे तो आचार्यका वरण नहीं करना ब्राह्मणद्वारा हवन करवावे तो आचार्यवरण ब्रह्माव-रण करना नमोस्त्वनंताय यह पुराणमंत्र बोलके चंदन, अक्षत, पुष्प, वस्त्र, अलंकार, तांबूलों करके

द्याशौचांतद्वितीयेह्नि अमुकगोत्रस्याऽमुकप्रेतस्यप्रेतत्वविमुक्तिकांक्षीस्वर्गाद्युत्तमलोकप्राप्ति कामनया वत्सतरीचतुष्टयसहितवृषोत्सर्गयज्ञेब्राह्मणद्वाराहवनमहंकरिष्ये। इतिसंकल्पः। स्व कर्तृपक्षेआचार्य्यवरणाभावः। ब्राह्मणकर्तृपक्षेआचार्य्यवरणं ब्रह्मवरणंच ॥ नमोस्त्वनंताये तिमंत्रेणचंदनाक्षतपुष्पवस्त्रालंकारतांबूलैर्ब्राह्मणमभ्यर्च्य। कुशयवजलान्यादाय ॥ अद्येत्या द्यमुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्यप्रेतत्वविमुक्तिकांक्षीस्वर्गाद्युत्तमलोकगमनकामनयावत्सतरीचतुष्ट यसहितवृषोत्सर्गांगभूतहोमादिसकलकर्मकर्तुममुकगोत्रममुकशर्म्माणंब्राह्मणमेभिश्चंदनतांबू

ब्राह्मणोंका पूजन करना पश्चात् कुश यव जल हाथमें लेके अद्येत्यादि बोलके अमुकगोत्र अमुकप्रेतका प्रेतत्व छुटनेके वास्ते और स्वर्गादि उत्तमलोककी प्राप्तिकी कामनाके अर्थ बाछडी चारसहित वृषोत्सर्गके

अंगरूप होमादि सर्व कर्म करनेके अर्थ असुकगोत्र असुकशर्म्मा ब्राह्मणकुं ये जो चंदन तांबूल वस्त्रों करके हे भूदेव आपकुं आचार्य करके वरता हूं पछि ब्राह्मण स्वस्तीति प्रतिवचन कहना पछि आचार्यकी पूजा करना और इस तरहसे ब्रह्मारूप ब्राह्मणका वरण करना हवन कर्म करनेवाले ब्राह्मणकुं श्राद्धकर्त्ता यजमान

लवासोभिराचार्य्यत्वेनत्वामहंवृणेइतिवृणुयात्॥स्वस्तीतिप्रतिवचनं।तस्यपूजादिविधाय॥ अनेनैवक्रमेणब्रह्मवरणं ॥ हवनकर्म्मकर्तारंप्रतिश्राद्धकर्तापृच्छेत् ॥ भोब्रह्मन्यथाविहितंकर्म्मकुरु॥ भोब्राह्मणास्मिन्कर्म्मणित्वमेवब्रह्माभव भवामीतिप्रतिवचनं॥ अद्यामुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्यकर्त्तव्यवृषोत्सर्गांगभूतहोमकर्मकर्तुममुकगोत्रममुकशर्म्माणंएभिः पुष्पाक्षततांबूलवासोभिरभ्यर्च्यहोतृत्वेनत्वामहंवृणे। वृतोस्मीतिप्रतिवचनं। ततः होताप्राङ्मुखउप

पूछे भो ब्रह्मन् यथा योग्य कर्म आप करो हे ब्राह्मण इस वृषोत्सर्गकर्म्ममें आप मेरे कामका ब्रह्मा बनो पछि ब्राह्मण बोले ब्रह्मा बना हूं पीछे यजमान हाथमें मोदक तिल जल लेके बोले अद्यामुकगोत्र अमुक-प्रेतके मुक्तिके अर्थ करने लायक वृषोत्सर्गका अंगरूप होमकर्म करनेकुं असुकगोत्र असुकशर्म्मा जो आप

ब्राह्मण हो सो आपकुं ये जो पुष्प तांबूल अक्षत वस्त्र यज्ञोपवीत आदि करके पूजन करके होतृरूप करके आपकुं मैं वरता हूं पीछे वृतोऽस्मीति वचन ब्राह्मण बोलै पश्चात् होता नाम होम करनेवाला ब्राह्मण पूर्वमुख वैठके कुशकंडिका करना। अब कुशकंडिकाक्रम कहते हैं। मृत्तिकाके पात्रमें पिठीका मेरुपर्वत करके एकनाके मेरुसे जल भरणा एकनाके मेरुसे दूध भरना पात्रमें जल है तिससे मेरुपर्वतकुं सिंचना और

विश्य ॥ अथकुशकंडिकाकरणं ॥ तत्रक्रमः ॥ मृन्मयपात्रमध्येपिष्टादिनामेरुंकृत्वा एकदेशेजलं एकदेशेक्षीरंचकुर्यात् । पात्रजलसेचनंचरेत्क्षीरसेचनंचरेत्ततः हस्तमात्रपरिमित चतुरस्रांभूमिंशुद्धायांभूमौवेदिकांकृत्वा दर्भैः परिसमूहनं । तानैशान्यांपरित्यज्य गोमयेनोद

दूधसे सिंचना पश्चात् एक हाथ प्रमाणकी वेदी चोकोर करना भूमि शुद्ध करके वेदी करना पश्चात् दर्भ हाथमें लेके होमवेदीकुं परिशोधन करना पीछे वाजो दर्भ ईशानकोणमें डाल देना पीछे गोबरजलसे वेदीके लेप देना पश्चात् वेदीकुं जलसे सेचन करना। पीछे खैरके स्रुवे करके प्रादेशप्रमाण तीन रेखा करनी पूर्व-पश्चिममें लांबी और दक्षिणासे लेके उत्तरकी तरफ रेषा करना पश्चात् वेदीकुं जलसे सेचन करना। जिस

तरह रेषा निकाले उस क्रमसे अनामिका अंगुली और अंगुष्ठसे जराजरासी मृत्तिका वेदी ऊपरसे अलग तीन ३ वार डालना फिर जलसे वेदीका प्रोक्षण करना ये पंच भूसंस्कार हैं। सो ये पंच भूसंस्कार करके चुप होके कांस्यपात्रमें स्थापन करके कांस्यपात्र दूसरेसे ढकके अग्निकोण होके अग्निदेवकुं लाके वेदी

केनोपलेपनं जलेनाभ्युक्ष्य खादिरस्रुवमूलेन प्रादेशमितउत्तरोत्तरक्रमेणत्रिरुल्लिख्य उल्ले खनक्रमेणानामिकांगुष्ठाभ्यां उद्धृत्य हस्तेनोद्धरणं । उदकेनाभ्युक्षणं । एतान्पंचभूसंस्का रान्कृत्वा यत्रयत्राग्नेःस्थापनंतत्रतत्रक्रियते ॥ तत्रतूष्णींभूत्वाकांस्यपात्रस्थमग्निमानीयस्वा भिमुखंप्रत्यङ्मुखंअग्निमुपसमाधायाग्निस्थापयेत्॥ ततोग्नेर्दक्षिणतःशुद्धमासनंदत्त्वातदुपरि प्रागग्रान्कुशानास्तीर्य्य तदुपरिब्रह्माणमुपवेश्य प्रणीतापात्रंपुरतः कृत्वावारिणापरिपूर्यकु शैराच्छाद्यब्रह्म गोमुखमवलोकयाग्नेरुत्तरतः कुशोपरिनिदध्यात् ॥ ततः बर्हिषापरिस्तरणम् व

ऊपर स्थापन करना अग्निका मुख पश्चिमदिशामें रहता है परंतु अग्निदेवसे दक्षिणभागमें शुद्ध आसन रखना उस आसनके ऊपर पूर्वमें अग्रभाग जिनोंका ऐसी कुशा त्रय रखना उसी दर्भोंके ऊपर जो ब्रह्मा है

उसकुं बैठाना पछि ब्रह्माके अगाडी प्रणीतापात्र रखना और पानीसे पूर्ण करना और कुशा करके प्रणीता आच्छादित करना पछि ब्रह्माका मुख प्रणीतापात्रमें ब्रह्माकुं देखना पीछे प्रणीतापात्र अग्निदेवसे उत्तरदिशामें कुशाके ऊपर रखना पीछे बर्हिषदर्भासे परिस्तरण करना सो कहते हैं। एकाशीति दर्भा है सो बर्हिष नाम बोलते हैं सो कारिकामें लिखा है सो बर्हिषका चौथा भाग लेना जिसकी संख्या १६ दर्भा होती है

र्हिषः कोऽर्थः एकाशीतिदर्भदलानि बर्हिषशब्देनोच्यते तेषांचतुर्थभागंकृत्वा एकेनदर्भेण शून्यहस्तोनभवति प्रथमभागरूपदर्भमादायआग्नेयादीशानांतम् १ द्वितीयभागमादायब्रह्मणोग्निपर्य्यंतं २ तृतीयभागमादायनैर्ऋत्याद्वायव्यांतम् ३ चतुर्थभागमादायअग्नितः प्रणीतापर्य्यंतं ४ ततोऽग्नेरुत्तरतः पश्चिमदिशिपवित्रच्छेदनार्थंकुशत्रयं। पवित्रकरणार्थंसाग्रमनंत

एक दर्भा शेष रहे जिससे स्वहस्त शून्य नहीं रहता है प्रथमभागरूप षोडशः १६ दर्भा लेके अग्निकोणसे ईशानतक पूर्वाग्रभाग रखके बिछाना पश्चात् तृतीयभाग संख्या १६ षोडश दर्भ लेकै ब्रह्मासे अग्निदेवपर्यंत रखना दर्भोंका पूर्वमें अग्रभाग करना पश्चात् तृतीय भागका षोडश १६ दर्भा लेके नैर्ऋत्यकोणसे वायव्यतक

बिछाना पूर्वमें दर्भोंका अग्रभाग रखना पश्चात् चतुर्थ भाग षोडश १६ दर्भ लेके अग्निदेवसे प्रणीतापात्र-पर्यंत रखना पूर्वाग्रभाग करके इसके पश्चात् अग्निदेवसे उत्तरभाग उस उत्तरभागसे पश्चिमदिशामें पवित्रच्छेदन करनेके अर्थ कुशा त्रय ३ रखना अन्यकुशामेंसे लेके पीछे पवित्र करनेके अर्थ एक पत्ती दर्भाके पत्रद्वय रखना पिछाडी दर्भा रखी है तिनसे पूर्वमें रखना अगाडी सर्व पूर्वपूर्वमें रखना ये क्रम है पश्चात्

गर्भकुशपत्रद्वयं । प्रोक्षणीपात्रं । आज्यस्थाली । चरुस्थाली । संमार्जनकुशाःपंच उपयमन कुशाः सप्त । समिधस्तिस्रः प्रादेशमात्राः स्रुवः खादिरः । आज्यं । षट्पंचाशदुत्तरशतद्वयमुष्टयवच्छिन्नतंडुलपूर्णपात्रं । पवित्रच्छेदनकुशानांपूर्वपूर्वदिशिक्रमेणासादनीयम् । अथत्रिभिः

प्रोक्षणीपात्र रखना आज्यस्थाली रखना । इसीके अगाडी चरुस्थाली रखना इसीके अगाडी संमार्जन कुशा पांच ५ रखना इसीके अगाडी उपयमन कुशा सप्त ७ रखना इसीके अगाडी प्रादेशमात्र अष्ट अंगुलकी त्रय ३ समिध नाम लकडी हवनकी रखना इसीके अगाडी खैरका स्रुवा रखना इसीके अगाडी घृत पात्रमें रखना इसीके अगाडी २५६ मुठि चावलोंका भरा हुआ पूर्णपात्र रखना ये सर्व जिनस पवित्रछेदनकी

कुशासे पूर्वपूर्वमें रखना और त्रयः ३ पवित्रछेदनकी कुशा है तिनसे द्वे पवित्र करनेकी कुशा च्छेदन करना पीछे द्वय द्वय कुशका पवित्र द्वय करके युक्त जो दहना हाथ उस दाहिने हाथमें प्रणीतापात्र लेके प्रणीताका जल त्रयः ३ वार प्रोक्षणीपात्रमें डालना पीछे प्रोक्षणीपात्रकुं वामे हाथमें करके दक्षिणहस्तके अनामिका- अंगुली अंगुष्ठसे पवित्रा पकडके प्रोक्षणीपात्रका जल पवित्रोंसे त्रय ३ वार ऊपरकुं जल फेंकना पश्चात्

पवित्रच्छेदनकुशैर्द्वेपवित्रेच्छित्त्वा सपवित्रकरेण प्रणीतोदकंत्रिः प्रोक्षणीपात्रेनिधाय। प्रोक्षणीपात्रंवामहस्तेकृत्वा दक्षिणहस्तानामिकांगुष्ठाभ्यांपवित्रेगृहीत्वा त्रिरुत्पवनं ततः प्रोक्षणीपात्रं अकाकवत् प्रणीतोदकेनापूर्य्य। भूमौपतितितदाप्रायश्चित्तंगोदानम् ततःप्रोक्षणीजलेन यथासादितवस्तुरूपंसेचनम् । ततोग्निप्रणीतयोर्मध्येप्रोक्षणीपात्रंनिदध्यात् आज्य

प्रोक्षणीपात्रकुं प्रणीतापात्रके जल करके सीधे हाथसे परिपूर्ण कर देना कदाचित् जमीनऊपर जल पड जावे तो गोदान किया पाप उतरे ये जल उसी वक्त जमीनपै नहीं डालना प्रोक्षणीपात्रके जलसे जो वक्त हवनमें होय तिनका सेचन करना पीछे अग्निदेव और प्रणीतापात्रके मध्यमें प्रोक्षणीपात्र रखना और आज्य-

स्थालीमें घृत रखना और चरुपात्रमें चरु रखना पीछे आज्यस्थालीकुं अग्निके ऊपर धरना पीछे जलता हुआ तृण हाथमें लेके घृतके ऊपर परिमाकी माफक भ्रमायके तृणकुं अग्निमें डालना पीछे स्रुवेकुं अग्निमें तपाना पश्चात् संमार्जन कुशा जो पांच हैं तिन करके स्रुवेकुं संमार्जन करना मूल करके मूलके लगाना मध्यभाग करके मध्यभागके लगाना और अग्रभागके अग्रभाग स्रुवेका है तहां लगाना फेर स्रुवेकुं तपवाना

स्थाल्यामाज्यनिर्वापः चरुपात्रेचरुप्रक्षेपः आज्याधिश्रपणम् ततोज्वलत्तृणमादाय आज्यस्योपरिप्रदक्षिणं भ्रामयित्वावह्नौतत्प्रक्षेपः ततःस्रुवप्रतपनंकृत्वा समार्जनकुशैः स्रुवसंमार्जनं मूलेनमूलं मध्येनमध्यं अग्रेणाग्रं पुनः प्रताप्य स्रुवंदक्षिणतोनिदध्यात् ततः आज्योत्तरणं अवेक्षणम्।अपद्रव्यनिरसनं ततः उपयमनकुशानादाय वामहस्तेकृत्वा अग्निपर्युक्षणंकृत्वाउ

पीछे स्रुवेकुं अग्निदेवके दक्षिणभागमें रखना पीछे अग्निके ऊपरसे आज्यस्थाली उतार लेना पीछे घृतकुं देखना घृतमें कुछ मक्षिका रोगादि पडा होवे तो निकाल देना पश्चात् उपयमन कुशा ७ सप्त है तिनकुं वामे हाथमें लेके पीछे दक्षिण हाथकी चलु जलकी भरके अग्निकुं चोगडदसे सेचन करना पीछे खडा होना

हाथमें घृतसे लगी हुई त्रयः ३ समिध लेना पीछे प्रजापतिकुं मनसे ध्यायके चुप होके समिध अग्निमें डाल देना पीछे बैठ जाना पश्चात् पवित्रसहित हाथमें प्रोक्षणीपात्रका जल लेके अग्निका सेचन करना पीछे दोनों पवित्र प्रणीतापात्रमें रख देना पछि पातितवामजानु होना वामा गोडा मोडके गोडेसे लगायके अग्निदे-

त्तिष्ठन्मनसाप्रजापतिंध्यात्वा तूष्णीमग्नौघृताक्ताः समिधस्तिस्रः क्षिपेत् । उपविश्यसपवित्रःप्रोक्षण्युदकेनाग्निंपर्युक्षणीकृत्वापवित्रेप्रणीतापात्रेनिधाय पातितदक्षिणजानुः कुशेनब्राह्मणान्वारब्धः समिद्धतमेग्नौस्रुवेणाज्याहुतिंजुहोति तत्राघारादारभ्यआहुतिंदद्यात् । अथाग्न्यावाहनं । ततः कुंडमध्ये ॐ इतिअग्निबीजंलिखेत् योनिमुद्रांकृत्वा आवाहयेदग्निपूरुषं । रुद्रतेजःसमु

वतक दर्भा रखना पीछे स्रुवा हाथमें लेके प्रज्वलित अग्निमें घृतकी आहुति देना यहां आघारसे आरंभ करके आहुति देना परंतु प्रथम अग्निका आवाहन करना और कुंडके मध्य ॐ रँ जो अग्निका बीज है सो लिखना और कुंडके ऊपर योनिमुद्रा लिखना । अग्निदेव पुरुष रुद्रतेजसे उत्पन्न हुआ अग्निके दो मस्तक

हैं दो नासिका हैं अग्निदेवके सप्त भुजा हैं तिन भुजोंमें सप्त वस्तु हैं चार भुजा तो दक्षिणभागमें हैं त्रय भुजा वामभागमें हैं एक भुजामें शुची है एक भुजामें स्रुवा है एक भुजामें शक्ति है एक भुजामें रुद्राक्षकी माला है ये तो दक्षिणहस्तमें और एक हाथमें तोमर है एक हाथमें पंखा है एक हाथमें घृतपात्र है दो मुख हैं सप्त जिह्वा है। दक्षिणमुखमें चार जिह्वा हैं उत्तरमुखमें त्रय जिह्वा हैं। द्वादश कोटि मूर्द्धा नाम है बावन्न-

द्भूतंद्विमूर्द्धानंद्विनासिकं स्रुचंस्रुवंचशक्तिंचअक्षमालांचदक्षिणैः तोमरंव्यजनंचैवघृतपात्रंतु
वामकः बिभ्रतंसप्तभिर्हस्तैर्द्विमुखंसप्तजिह्वकं दक्षिणंचचतुर्जिह्वंत्रिजिह्वमुत्तरंमुखं द्वादशको
टिमूर्द्धाख्यंद्विपंचाशत्कलायुतं स्वाहास्वधावषट्कारैरंकितंमेषवाहनं। रक्तमाल्यांबरंरक्तंर
क्तपद्मासनस्थितं। रौद्रंवागीश्वरीरूपंवह्निमावाहयाम्यहं त्वंमुखंसर्वदेवानांसप्तार्चिरमितद्युते

कला करके युक्त है स्वाहास्वधा चिह्न हैं मेंढा वाहन है रक्तपुष्पकी रक्तरत्नोंकी माला गलेमें है रक्तवस्त्र धारण कर रखा है रक्तकमलके आसनपै बैठा है रौद्र और सरस्वतीका रूप धार रखा है ऐसा अग्निदेवका मैं आवाहन करता हूं हे अग्निदेव तुम देवतोंका मुख हो सप्तजिह्वा प्रकाशक हो अनंत आपका तेज है।

सो हे भगवन् इस यज्ञमें आप आओ समीप बैठो हे अग्ने हे वैश्वानर यहा आओ यहां आओ यहां अग्नि-
स्थंडिल वा कुंडमें स्थित होओ ऐसा वचन बोलके अग्निकी स्नान, आचमन, पाद्य, नैवेद्य, तांबूल करके
पंचोपचार पूजा करना परंतु अग्निकी सप्तजिह्वाकी पूजा करना कनकायै नमः पाद्यादि समर्पयामि रक्तायै

आगच्छभगवन्नग्नेयज्ञेस्मिन्संनिधौभव अग्नेवैश्वानरइहागच्छइहतिष्ठ इत्यावाह्य पंचोपचारैः
पूजयेत् ततः अग्नेः सप्तजिह्वानांपूजा कनकायैनमः १रक्तायैनमः २ कृष्णायैनमः ३ उदीरण्या
यैनमः ४ उत्तरमुखे सुप्रभायैनमः ५ बहुरूपायैनमः ६ अतिरिक्तायैनमः ७ इतिकुशकंडि
काअग्निस्थापनं तदनंतरंहोममारभेत् कुशकंडिकांविनाग्नौहवनंयःकुरुतेपुमान् । निष्फलंह
वनंतत्तुइतिशातातपोऽब्रवीत् १ अमुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्याक्षय्यस्वर्गप्राप्तिकामनयाविप्रद्वारा

पाद्यादि समर्पयामि कृष्णायै पाद्यादि समर्पयामि । उदीरण्यायै पाद्यादि समर्पयामि । सुप्रभायै पाद्यादि
समर्पयामि बहुरूपायै पाद्यादि समर्पयामि । अतिरिक्तायै पाद्यादि समर्पयामि इति कुशकंडिका अग्निस्था-
पनम् । इसके पश्चात् हवन करना हस्ते मोटक तिल जल लेके अमुकगोत्र अमुकप्रेतकुं अक्षय्य स्वर्गप्रा-

त्तिकामना करके विप्रद्वारा हवन मैं करता हूं ऐसा संकल्प करना पश्चात् ॐकाररहित षट् आहुति घृतकी देना और स्रुवामें हुतशेष घृत रहे तो प्रोक्षणीपात्रमें डालना आहुति आहुतिके प्रति परंतु शुद्ध गोघृत करके आहुति देना सो कहते हैं यह रती स्वाहा यह आहुति अग्नि देवताके अर्थ है इह रमध्व ८ स्वाहा यह

हवनमहंकरिष्ये ॐ काररहिताः षडाज्याहुतीर्जुहुयात्॥स्रुवाऽवस्थितहुतशेषस्यप्रोक्षणीपात्रे प्रक्षेपः। शुद्धेनाज्येनाहुतिंदद्यात्तथा इहरतीस्वाहा॰ इदमग्नये १ इहरमध्व ८ स्वाहा॰ इदमग्नये २ इहधृतीस्वाहा॰ इदमग्नये ३ इहस्वधृतीस्वाहा॰ इदमग्नये ४ उपसृजेन्वरुणंमंत्रेव्वरारुणंमातरंधयत्स्वाहा॰ इदमग्नये ५ रायस्पोषामस्मासुदीधरत्स्वाहा॰ इदमग्नये ६ ब्रह्मणान्वारब्धः॥आघारावाज्यभागौजुहोति॥ मनसि प्रजापतयेस्वाहा॰ इदंप्रजापतये। मनसैव

आहुति अग्निदेवताके अर्थ है इह धृति स्वाहा या आहुति अग्निदेवताके अर्थ है इह स्वधृति स्वाहा यह आहुति अग्निदेवताके अर्थ है वरुणकुं रचनेवाली मंत्रमें श्रेष्ठ रक्तरूपमाता अग्नि पाचककुं स्वाहा यह आहुति अग्निदेवके अर्थ है यह आहुति द्रव्यपोषणरूप अग्निदेवके वास्ते है और आहुति देनेवाला ब्राह्मण

अपने गोडेसे लगाके ब्रह्मातक दर्भा रखे पछि आघार और घृतभागका हवन करे यह आहुति प्रजापतिके वास्ते है । मनमें बोलके देना । और यह आहुति इंद्रके वास्ते है । यह आहुति अग्निदेवताके वास्ते है । यह आहुति सोमदेवताके वास्ते है । और इन आहुतियोंमें स्रुवेमें हुतशेष रहता है सो प्रति आहुतिके प-

जुहोति इंद्रायस्वाहा० इदमिंद्राय । अग्नयेस्वाहा० इदमग्नये ॥ सोमायस्वाहा० इदंसोमाय एतासामाहुतीनांहुतशेषस्य प्रणीतापात्रेप्रक्षेपः ॥ अथपायसहोमः ॥ ॐकारसहितः । ॐ अग्नयेस्वाहा० इदमग्नये ॥ ॐ रुद्रायस्वाहा० इदंरुद्राय ॥ ॐ शर्वायस्वाहा० इदंशर्वाय ॥ ॐपशुपतयेस्वाहा० इदंपशुतये ॥ ॐ उग्रायस्वाहा इदमुग्राय ॥ ॐ आसनायस्वाहा० इदमासनाय ॥ ॐ भवायस्वाहा० इदंभवाय ॥ ॐ महादेवायस्वाहा० इदंमहादेवाय ॥ ॐ

णीतापात्रमें डालना अब दुग्धकी क्षीरका होम करना ॐ कारसहित मंत्र बोलके यह आहुति अग्निदेवके वास्ते है यह आहुति रुद्रदेवताके वास्ते है या आहुति सर्व्वदेवताके वास्ते है या आहुति पशुपतिके अर्थ है या आहुति उग्रदेवके अर्थ है यह आहुति आसनदेवके अर्थ है । यह आहुति भवदेवताकुं है । यह

आहुति महादेवके वास्ते है यह आहुति ईशानदेवताके वास्ते है और पिठी चरु मिलायके होम करना यह आहुति पूषादेवताके वास्ते है और क्षीरदूधकी पिठी और चरु आज्य नाम घृत मिलायके आहुति देना यह आहुति स्विष्टकृत अग्निके वास्ते है यह आहुति सम्यक् आहुतशेष अग्निके वास्ते है । और पुनः

ईशानायस्वाहा० इदंईशानाय ॥ अथपिष्टचरुहोमः ॥ ॐ पूषांअन्यतुनःपूषारक्षंतुसर्वतः पूषाचात्मसनोतुनः स्वाहा इदंपूष्णे । ततः पायसपिष्टंचरुमाज्यमेकीकृत्यगृहीत्वाजुहोति । अग्नयेस्विष्टकृतेस्वाहा० इदमग्नयेस्विष्टकृते एतासामाहुतशेषोग्नावेव ॥ पुनराज्येनहोमः ॐ भूः स्वाहा० इदमग्नये ॥ ॐ भुवः स्वाहा० इदंवायवे ॥ ॐ स्वः स्वाहा इदंसूर्याय । ॐ तन्नोऽअग्नेवरुणस्येति ॥ ॐसत्वन्नोइति ॥ अयाश्चाग्ने इति ॥ येतेशतमिति ॥ उदुत्तममिति ॥ इतिप्रायश्चित्तसंज्ञकोहोमः ॥ ततः संस्रवप्राशनं ॥ ततोब्रह्मणेपूर्णपात्र

आज्येन होम करना यह आहुति भूमिकुं है यह आहुति भुवरूपके वास्ते है या आहुति स्वर्गके वास्ते है परंतु अग्निके तथा वायुके तथा सूर्यके निमित्त आहुति है ॥ इन पांच मंत्रोंसे प्रायाश्चित्तसंज्ञक हवन होता है

इस माफक होम करनेके पीछे स्रुवेसे प्रणीतापात्रके जलके आचमन त्रय वार यजमानकुं करवाना पश्चात् यजमानके हाथसे दक्षिणासहित पूर्णपात्र ब्रह्माकुं देना। देते वखत ऐसा बोलना अद्येत्यादि पठके आशौ-चांत द्वितीय दिन कर्त्तव्य जो वृषोत्सर्ग जिसका अंगरूप होम कर्म्म किया अथवा नहीं किया ऐसा देखके

दानंदक्षिणांच ॥ तत्रवाक्यं ॥ अद्येत्यादिआशौचांतद्वितीयेह्निकर्त्तव्यवृषोत्सर्गांगभूतहोमकर्मंकृताकृताऽवेक्षकत्वेनब्रह्मकर्मप्रतिष्ठासंसिद्ध्यर्थमिदंपूर्णपात्रं अमुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्रह्मणेदातुमहमुत्सृजे ॥ ततोबर्हिर्होमः ॥ देवागातुविदोगातुवित्त्वागातुमिमतमनुः

चातानेके वास्ते आपकुं ब्रह्मा बनाया था कर्म्मविपरीत नहीं होय सके इसवास्ते सो अमुकगोत्र अमुक-शर्म्मा ब्रह्माकुं यह पूर्णपात्र और दक्षिणासहित आपकुं मैं देता हूं सो स्वीकार करो ऐसा बोलके देना पश्चात् ब्रह्मा स्वस्ति वचन बोले इसके पीछे बर्हिहोम करना जो माला दर्भांकुशकंडिकाकी रीतिसे रखी थी

उसी तरह उठायके होम देना देवागातु या मंत्र बोलके दर्भके घृत लगायके अग्नि रखना। पश्चात् प्रणीता-पात्रकुं अलग धरना पीछे पवित्रसे प्रणीताको जल लेके सुमित्रियान मंत्र बोलके यजमानके शिरपै संमार्जन करना। पश्चात् दुर्मित्रियास्तस्मै या मंत्र बोलके प्रणीताका जल लेके पवित्रसे अपने यजमानके शत्रुके ऊपर

स्पतयइमंदेवयज्ञ ं ॐ स्वाहा वातेधाइतित्रहिंर्होमः ॥ ततः प्रणीताविमोकः ॥ ॐ सुमित्रियानआपःओषधयःसंतु इतिप्रणीताजलेनशिरःसंमार्ज्यं । ॐ दुर्मित्रियास्त स्मैसंतुयोस्मान्द्वेष्टियंचवयंद्विष्मइत्यैशान्यांप्रणीतांन्युब्जीकुर्य्यात् ॥ पवित्रेवह्नौक्षिपेतत् तोब्रह्मग्रंथिविमोकः॥ ततः पूर्णाहुतिहोमः ॥ आचार्याय दक्षिणादानम् ॥ तत्रवाक्यं ॥

डालना शत्रु हाजर नहीं होवे तो यजमानके वामे पसवाडे पापपुरुष रहता है सो उसपै डालना पीछे प्रणी-तापात्रकुं होता उठाके वेदीकी ईशानकोणपै न्युब्जी नाम औंधा कर देना। पश्चात् ब्रह्माके जो रक्षा बांधी थी सो खोलना इसका नाम ब्रह्मग्रंथिविमोक कहते हैं पीछे पूर्णाहुतिहोम करना आचार्यकुं दक्षिणा देना

तहां ऐसा वचन बोलना अद्येत्याद्यशौचांतद्वितीयेह्नि अद्यकर्त्तव्य वृषोत्सर्गका अंगरूप किया जो होम कर्म्म जिसकी प्रतिष्ठा।सिद्धि होनेके अर्थ अग्नि है देवता जिसको ऐसा हिरण्य नाम सोना अथवा सोनेके मोलरूप जो द्रव्य सो आचार्य्यरूप जो तुम हो आपकुं मैं स्वर्ण वा द्रव्यदक्षिणा करके देता हूं पछि

अद्येत्याद्यशौचांतद्वितीयेऽह्निअद्यकर्त्तव्यवृषोत्सर्गांगभूतकृतेतद्धोमकर्मप्रतिष्ठासंसिद्ध्यर्थंहिरण्यमग्निदैवतंतन्मूल्योपकल्पितंद्रव्यंवाअमुकाचार्य्यत्वेनत्वामहंसंप्रददे ॥ स्वस्तीतिप्रतिवचनम् ॥ ततोरुद्राध्यायंपठित्वा ॥ ततोलोहकारमाहूयवृषभंलांछयेत् ॥ इमारुद्रायमितिदक्षिणपार्श्वेद्वादशांगुलंत्रिशूलंलिखेत् ॥ रुद्र २ स २ सृजइतिवामपार्श्वे

ब्राह्मण आचार्य है सो स्वस्ति ऐसा पछि वचन बोले इस कर्म्मके पश्चात् रुद्राध्यायका पाठ करना। पछि लोहारकुं बुलायके त्रिशूलचक्र तपाके वृषभकुं अंकित करना इमारुद्राय या मंत्र बोलके वृषभके दक्षिणपग पिछाडीका है तिसके पसवाडेमें ऊर्ध्व त्रिशूलसे अंकित करना द्वादश अंगुलकी।त्रिशूल प्रमाण है
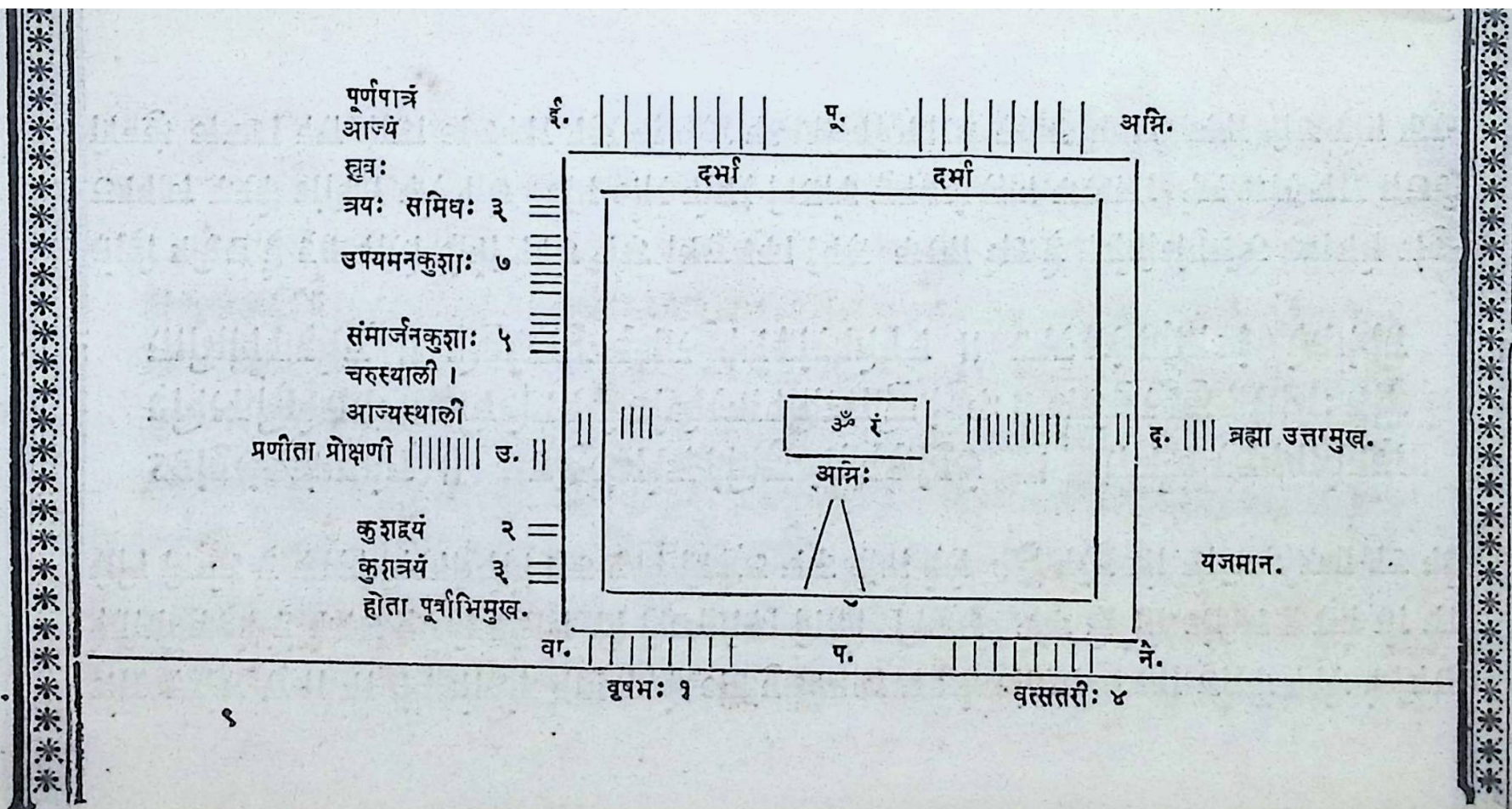
पूर्णपात्रं
आज्यं
स्रुवः
त्रयः समिधः ३
उपयमनकुशाः ७
संमार्जनकुशाः ५
चरुस्थाली।
आज्यस्थाली
प्रणीता प्रोक्षणी
उ.
कुशद्वयं २
कुशात्रयं ३
होता पूर्वाभिमुख.
ई.
पू.
अग्नि.
दर्भा
दर्भा
ॐ रं
अग्निः
द. ब्रह्मा उत्तरमुख.
यजमान.
वा.
प.
नै.
वृषभः १
वत्सतरीः ४
९

और रुद्रः॒स॒सृजा या मंत्र बोलके वाम पगके अष्टांगुलप्रमाण चक्रसे अंकित करना लारके पगके केचित् ऐसीभी कहते हैं केवल एकही दक्षिण पग पिछाडीका तिसपै त्रिशूल चक्र दोनोंसे अंकित करना सो या रीति निर्मूल है काश्यादिनगरियोंमें एक पगपै त्रिशूल चक्र दोनों देखे नहीं परंतु जो लौकिक प्रथा पड गई

ऽष्टांगुलंचक्रंन्यसेत् ॥ अष्टांगुलंभवेच्चक्रंत्रिशूलंद्वादशांगुलं । तर्ज्जन्यास्तुप्रमाणेनदाहयित्वाक्षिपेत्ततः ॥ दधिगोमययोर्म्मध्येस्नापयित्वाङ्कितंपुनः ॥ अलंकृत्यकुमारीभिः सहिताभिर्विवाहयेत् ॥ होतुर्वस्त्रयुगंदद्यात्सुवर्णंकांस्यमेवच ॥ उपस्करंचदातव्यं वेतनंमन

सोही प्रसिद्ध है इस वास्ते दोनों पगके चक्र त्रिशूलका चिह्न करना श्रेष्ठ है तर्जनीअंगुलीके प्रमाणसे अंगुलप्रमाण करके अंकित करे पीछे दधि और गोबर मिलाके वृषभकुं स्नान करवाना फेर और चार बछडी तिनकुं अच्छा वस्त्र माला अलंकार पहराना ऐसी वत्सतरियों करिके सहित विवाह करना पीछे होम कर-

नेवाले ब्राह्मणकुं वस्त्रका जोडा देना और स्वर्ण कांस्यपात्र देना और सामग्री वेशने आदि लेके देना । पछि चारों बछियों सहित वृषभकुं सर्वौषधि मिलाके रुद्रकलशसे स्नान करवाना । सर्वौषधि ये हैं सुरा १ जटामांसी २ कूट ३ शैला ४ दारुहलदी ५ हलदी ६ सठी ७ चंपक ८ नागरमोथा ९ ये सर्वौषधि हैं स्नान कर-

सेप्सितं ॥ ततोवत्सतरीचतुष्टयसहितंवृषभंसर्वौषधिभिः सहरुद्रकलशजलेनस्नापयेत् ॥ अथसर्वौषधिः ॥ मुरामांसीजटाकुष्ठीशैलेयंरजनीद्वयं ॥ सटीचंपकमुक्ताचसर्वौषधिगणः स्मृतः ॥ तत्रमंत्राः ॥ हिरण्यवर्णाःशुचयः पावकायासुजातः कश्यपोयास्विंद्रः । याअग्निर्गर्भंदधिरेसुवर्णास्तानआपः स्योनासुभवाभवंतु । यासांराजावरुणोयातिमध्येसत्यानृते अपश्यंजनानां जायअपिगर्भंदधिरेसुवर्णः वासायादेवादिविक्रूण्वंतिअक्षपापंअंतरिक्षेबहुधा

वाने वक्त ये वेदके मंत्र बोलना हिरण्यवर्ण या मंत्र स्नानको है ये जो सुवर्णके रंग आप जो जल सो अपनेकुं शुभके देनेवाले हैं इन जलोंका राजा वरुण देवता है ॥ यजमानमूर्तिः ॥ वृषभमूर्तिः ॥ वत्सतरीमू० १ ॥ वत्सतरीमू० २ ॥ वत्सतरीमू० ३ ॥ वत्सतरीमू० ४ ॥ ब्राह्मणमूर्तिः ॥ जलक-

लशः ॥ सामग्रीपात्राणि ॥ ये पूर्वोक्त जो मंत्रोंकरके सर्वौषधिमिश्रित जलसे बछियोंसहित वृषभकूं स्नान
कराना पछि बछियोंसहित वृषकी पूजा करके पीछे वृषभके दक्षिणकानमें ऐसा मंत्र जो अगाडी लिखे है

भवंति यापृथिवीपराभवोवदंतिशुक्रस्तानआपः स्योनाभवंतिशिवेनमाचक्षुभ्यामापश्य
तापः शिवजातन्वोपास्यतांचमेधयुतः शुचयोयाः पावकास्तानआपः स्वः स्योना
सुहवाभवंतु शन्नोदेवीरभिष्टयआपोभवंतुपीतये शंयोरभिस्रवंतुनः इतिमंत्रेणसर्वौषधिमि
श्रितजलेनचतुर्वत्सतरीभिः सहितंवृषभंस्नापयेत् ॥ चतुर्वत्सतरीसहितंवृषभंसंपूज्य ।
वृषभस्यदक्षिणकर्णेजपेत् ॥ लोहघंटांगलेबध्वापृष्ठेचवस्त्रधारणं ॥ गलेमाल्याद्यलंकृत्यवृष
स्यश्रवणेजपेत् ॥ वृषोसिभगवन्धर्म्मचतुःपादः प्रकीर्त्तितः । वृणोमितमहंभक्त्यास

सो कहना परंतु प्रथम वृषभके गलेमें लोहकी घंटा बांधना और पीठपै वस्त्र रखना और गलेमें पुष्पोंकी
माला और आभूषण श्रद्धा माफक डालके ये मंत्र कानमें सुनानेके है सो कहते हैं। हे वृषभ तु वृष है हे

भगवन् तू चारोंपगसहित धर्म देवता है आपकुं भक्ति करके मैं वरता हूं सो आप मेरी रक्षा करो सर्वतर-हसे और प्राणीकी मुक्ति करो आप सत्य है गौवोंके आनंद दायक हो धर्मकी अष्ट मूर्ति सों मुख्य मूर्ति है सो आप सनातन धर्मकी रक्षा करो परंतु आपके मध्यमें मैंने धर्म दृष्टि लगाई है इसवास्ते प्रेतकुं आनन्द

मांरक्षतुसर्वतः ॥ सत्यंवृषरूपेणगवामानंदकारकः ॥ अष्टमूर्त्तेरधिष्ठानंअतः पाहिस नातनं ॥ त्वयिमत्तेक्षयाल्लोकाः प्रेताः संतुनिरामयाः ॥ इतिध्यानं ॥ अथन्यासः ॥ त्र्यंब कंयजामहेइतिशिरसि । नमस्तेरुद्रमन्यवेतिललाटे । नमःशंभवायेतिमुखे । प्राणायस्वाहेति नासिकायां । नीलग्रीवाशितिमितिग्रीवायां । यज्जाग्रतइतिबाह्वोः । शिवोनामेतिलांगूले ।

होना चाहिये ये हम आपका ध्यान करते हैं ऐसा बोलके पश्चात् अगाडी वृषभका मंत्रोंकरके अङ्गन्यास करना त्र्यम्बक मंत्र बोलके यजमान वृषभके शिरके हाथ लगाना । नमस्ते मंत्र बोलके मस्तकके हाथ लगाना । नमः शम्भवाय मंत्र बोलके मुखके हाथ लगाना प्राणाय० मंत्र बोलके नासिकाके हाथ लगाना

नीलग्री० मंत्र बोलके ग्रीवाके हाथ लगाना यज्जाग्रत० मंत्र बोलके अगले पगके हाथ लगाना शिवाना० मंत्र बोलके पूंछको हाथ लगाना । वृषाग्नि० ॥ मंत्र बोलके पोताबलोंको हाथ लगाना त्र्यंबक० मंत्र बोलके सर्वशरीरको हाथ लगाना। पीछे बछियोंसहित वृषभका पूजन करना पीछे अद्येत्याद्यशौचांतद्वितीयेह्नि

वृषाग्निवृषणंजरनितिवृषणे । त्र्यंबकंयजामहेइतिशरीरन्यासः । ततोवत्सतरीसहितंवृषभं पूजयेत् । अद्येत्याद्यशौचांतद्वितीयेह्निअमुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्यप्रेतत्वविमुक्तिकांक्षयास्वर्गाद्युत्तमलोकवासकामनयाएकादशाहकृत्यंचतुष्टयवत्सतरीसहितवृषभपूजनमहंकरिष्ये ॥ तत्रक्रमः । वत्सतरीभ्योनमः धर्म्मरूपायवृषायनमः ॥ इतिपाद्यार्घाचमनीयस्नानादिभिरु

अमुकगोत्र अमुकप्रेतका प्रेतत्वभाव छुटनेकी वांछा करके स्वर्गादि उत्तम लोक प्राप्त होनेकी कामना करके एकादशके दिन कृत्य चार बछियों सहित वृषका पूजन मैं करता हूं ऐसा संकल्प छोडना । पीछे क्रमसे करना चारों बछियोंको नमस्कार है और धर्मरूप वृषभकुं नमस्कार है ऐसे नमस्कार करके पाद्य, अर्घ्य, आचमनीय, स्नान करवाना गंध लगाना अक्षत, पुष्प, पुष्पोंकी माल पहराना ऐसे पूजा करके हाथमें

कुश तिल जल लेना यवसहित अब वृषका उत्सर्ग नाम छोडनेका संकल्प करना अद्येत्यादीति वचन बोलके एकादशके दिन असुकगोत्र असुकप्रेतका प्रेतभाव मुक्त होनेकी वांछा करके स्वर्गादि उत्तम लोक प्राप्त होनेकी कामना करके सर्व दुष्टपापादि दूर होनेके वास्ते तथा अश्वमेधादि यज्ञोंका फल प्राप्त होनेके अर्थ

पचारैः संपूजयेत् । ततःकुशयवतिलजलान्यादाय । अथोत्सर्गसंकल्पः ॥ अद्येत्यादीति वाक्यंपठित्वा आशौचांतद्वितीयेह्निअमुकगोत्रस्याऽमुकप्रेतस्यप्रेतत्वविमुक्तिकांक्षयास्वर्गाद्युत्तमलोकप्राप्तिकामः सकलदुरितोत्सारितअश्वमेधादियज्ञफलप्राप्तिरंभाद्यप्सरोगणसेवितकिन्नरगीयमानशंखदुंदुभिमृदंगवाद्यमानतदवर्त्तनिताभिरुपशोभितमानचामरदिव्यरूपशोभितहिरण्यमयमणिसायुज्यकमलमहाविमानस्थिततुंबरादिगंधर्वइंद्रादिसुरपूजितमरक

रंभासे आदिलेके अप्सरागण सेवनाके अर्थ किंनर देवतोंकरके पुण्य कर्म गयिमान होनेके अर्थ और देवतोंका शंख नगारे मृदंग अगाडी स्वर्गमें सदा बाजनेके अर्थ इन करिके शोभायमान होनेके अर्थ और दिव्य चवरोंकरके शोभितमान हिरणमयि स्वर्णमयि विमानोंमें मणिपूरित कमलमहाविमानमें बैठके सुख

भोगनेके अर्थ तुंबरुसे आदि लेके गंधर्वोंकरिके गीयमान होनेके अर्थ इन्द्रादि देवतोंकरके सराने लायक मणियोंका जडा हुवा सिंहासनपै बैठनेके अर्थ और देवतोंके लोकके आभूषण मोतियोंके हार इन्हों करके अलंकृत होनेके अर्थ और सुवर्णमणिमय जो कमलाकार आसनोंपै बैठनेके अर्थ जितने अंगपै रोम कोटी

तमणिहाटकमणिमयासिंहासनसितदिव्यभूषणमुक्ताहाराद्यलंकृतसुवर्णमयतनुकमलासनयाव द्वृषभगात्रलोमतत्कोटिदिव्यवर्षसहस्रस्वर्गप्राप्तिप्रक्षिप्तजललांगूलश्रृङ्गाग्रमृत्तिकाबहुकोटिदि व्यवर्षस्वर्गप्राप्तिपितृपितामहादितृप्तिहेतुपतितप्रेतोद्धरणसप्तावरसप्तपरिमितं पितृदेवत्वहेतु

हैं तत्संख्या वर्षोंतक दिव्यवर्षोंके सहस्रतक स्वर्गमें प्राप्त रहनेके वास्ते और जितने टोपे जलके पुच्छऊपर पडे तत्संख्या वर्ष और जितनी धूल वृषभ अपने श्रृंगसे उठावे तितनी संख्याके वर्षोंतक स्वर्ग प्राप्त रहनेके अर्थ पिता पितामह प्रपितामहादिकोंके तृप्ति होनेके अर्थ और पतित प्रेतोद्धरणके अर्थ प्रेतके उद्धार

साहित पित्रेश्वर देवतोंके मध्य वसनेके वास्ते सत्यलोकमें वसनेके वास्ते यो जो वृषभ अंकित किया हुआ बछियोंसहित मैं त्यागन करता हूं ऐसा संकल्प करना ॥ और यो मंत्र बोलके वृषभकुं छोडना और बहुत अच्छा माल अपनी श्रद्धामाफक वृषभकुं खवाना ॥ पीछे घरमें नहीं रखना यह शास्त्रकी रीति है ॥ इन

सत्यलोकवासकामः इमं वृषभंवत्सतरीचतुष्टयसहितमहमुत्सृजे । इति संकल्पः ॥ एनं युवानंपतिंवोददामितेन क्रीडंतीवरप्रियतमायुः स्वरथग्रीये नमानः सप्तजनुषोसुभगाराय-स्पोषेणसमिषामदेन इत्यनेनयात्रावासमुत्सृजेत् ॥ अनेनवाक्येनप्रदक्षिणंकृत्वाईशान्यां दिशिचालयेत् ॥ ततोवत्सतरीचतुष्टयमध्यगतंवृषभमभिमंत्रयेत् ॥ तत्रमंत्राः ॥ समुद्रोसि नभःस्वामीददातुःशंभोर्मयोभूरभिमावाहिस्वाहा ॥ मारुतोसिमरुद्गणःशंभूर्मयोभूरभि-

वचनोंसे परिक्रमा करके वृषभकुं ईशानकोणकी तरफ ले जाना साथही बछियोंको ले जाना । पीछे बाछि-योंके मध्यमें प्राप्त जो वृषभ तिसकुं वक्ष्यमाण मंत्रों करके मांत्रितमान करना परंतु यजमानकुं मंत्र नहीं आवते होवे तौ विप्रद्वारा ये वेदके मंत्रोंसे मंत्र मंत्रके प्रति सर्वौषधि मिलित जलसे छिटा देना मिथ्या

भाषण मध्यमें किसीसे करना नहीं ॥ हे वृषभ धर्ममूर्ते हमारी ब्राह्मण शरीरमें रुचि स्थिर रहे ऐसी रुचि

मावाहिस्वाहा । वस्युरसिदुर्वस्वाहा बभूर्म्मयोभूरभिमावाहिस्वाहा मरुताद्गुणः शंभूर्म्मध्य-योभूरभिमावाहिस्वाहा ॥ यास्तेऽग्नेसूर्य्योरुदिवमातन्वतीरश्मिभिः ताभिर्नोअद्यसर्व्वान्नीरु-चजनायनमस्कृधिः यावोदेवाहसूर्योरुचोगोष्ठेपुषारुचः इन्द्राग्निताभिः सर्व्वाभिरुचंदनोध-नबृहस्पते ॐरुचन्नोधेहिब्राह्मणेषुरुच ँराजसुनमस्कृधिरुचंवैश्येषुशूद्रेषुमयिधेहि ॥ रुचारु चतत्वायामिब्रह्मणावंदमानस्तदाशास्तेयजमानोहविर्भिः अहेडमानोवरुणोहबोध्युरुस ँ स मानंआयुःप्रमोषि ॥ ॐस्वर्णधर्मःस्वाहा स्वर्णार्कःस्वाहा ॥ स्वर्णशुक्रःस्वाहा॥ स्वर्णज्योतिः स्वाहा ॥ स्वर्णसूर्य्यःस्वाहा ॥ अथनीलश्राद्धकर्त्तव्यता ॥ नीलश्राद्धंकरिष्यामियवपिष्टेन

हमकुं तुम देवो हे धर्म्ममूर्ते वृषभ हमारी रुचि राजामें प्राणरूप होवे ऐसी रुचि और वैश्योंमें शूद्रोंमें रुचि यथास्वभाव धर्मरूप रहो ॥ अथ नीलश्राद्धकी कर्त्तव्यता कहते हैं ॥ यजमान सावधान होके आचमन करे

जोवाके आठकी हलद रली हुई पीठीमें तिल खांड रलाके पिंड बनाना सप्तविंश २७ सत्ताईस पीछे अप-सव्य होके वामो हाथ दक्षिण हाथके चिपायके दक्षिण हाथसे एक पिंड लेके साथ तिल जल लेके ऐसा वचन बोलके जो पिताके पक्षमें जो माताके पक्षमें जो गुरु श्वशुरके पक्षमें जो बंधुनके पक्षमें होये थे जहां

धीमता ॥ तिलशर्करयायुक्तंतर्पणं चततःपठेत् ॥ यवचूर्णेनतिलघृतमधुशर्कराभिर्नीलमुखाग्रेपिंडान्पौराणिकमंत्रेणदद्यात् ततोऽपसव्यम्॥पितृपक्षाश्चयेकेचिद्येचान्येमातृपक्षकाः॥ गुरुश्वशुरबन्धूनांयेकुलेषुसमुद्भवाः । तेसर्वेतृप्तिमायान्तुनीलपिंडंददाम्यहम् । येचान्येलुप्तपिंडाश्चपुत्रदारविवर्जिताः । तेसर्वेतृप्तिमायांतुनीलपिंडंददाम्यहम् ॥ आब्रह्मणोयेपितृवंशजा

तहां योनिमें हैं सो ये सर्व नीलपिंडसे तृप्तिकुं प्राप्त होवो ऐसा बोलके पिंड वृषभके चरणके अगाडी दर्भा बिछायके उसपै पिंड देना पीछे दूसरा पिंड लेके इसी तरह देना जो हमारे कुलमें पिंड रह गये और पुत्र स्त्री करके वर्जित थे सो सब नीलपिंड करके तृप्त होवो मैं नीलपिंड देता हूं । ब्रह्मासे लेके अबतक पितृ-

मातृवंशमें जो होये सो सर्व नीलपिंडते तृप्त होवो मैं नीलपिंड देता हूं। जो नोकर और आश्रित सेवकों तक और मित्र शिष्य स्वपशु और वृक्ष और जो मैं देखे हैं जो मैं स्पर्श करेहैं जो देशांतरमें हमारे संग रहे हैं तिनकुं इसी नीलपिंडसे तृप्ति होवो मैं नीलपिंड देता हूं। जो मेरे बंधु है और जन्मके बंधु है जो आकाशमें

तामातुस्तथावंशभवामदीयाः॥कुलद्वयेयेममवंशभूताभृत्यास्तथावाश्रितसेवकाश्च॥तेसर्वे०॥ मित्राणिशिष्याःपशवश्चवृक्षाहष्टाश्चस्पृष्टाःस्वकृतोपकाराः ॥ देशांतरेयेममसंगताश्चतेभ्यः स्वधा कृत्यइदंददामि॥ तेसर्वे० ॥ येबांधवाऽबांधवायेयेन्यजन्मनिबांधवाः ॥ आकाशोपग तायेच येचांधाः पंगवस्तथा ॥ तेसर्वे० ॥ विरूपाआमगर्भाश्चज्ञाताज्ञाताः कुलेमम ॥ आ मगर्भाश्चयेकेचिदागताःसुखगोचरे ॥ तेसर्वे० ॥ वृषयोनिगतायेचकीटकादिपतंगकाः ॥ तेस

जीवयोनिकुं प्राप्त भये है सो और अंधा पांगला सर्व नीलपिंडसे तृप्त होवो सो मैं नीलपिंड देता हूं। जो मेरे ज्ञात अज्ञात कुलमें रूपरहित और गर्भमें विलाय गये जो जो केचित् मेरे सुखके सामने आया

प्राप्त हुए हैं सो मैं देता हूं नीलपिंड तिसीसे तृप्त होवो । जो वृषयोनिमें और कीटपतंगयोनिमें हैं सो मेरे दिये हैं नीलपिंडसे तृप्त होवो और रौरवनरकमें जो पडे हैं कुंभीपाकमें जो पडे हैं सो सर्व नीलपिंड मैं जो देता हूं तिससे तृप्त होवे । और तप्त तैल कुंडमें जो पडा है पितृमातृगोत्रवाले और यमपुरीमें बहोत भय है सो वहां पडे सो नीलपिंड मैं देता हूं तिससे तृप्त होवो । और यमके दूतोंकरके पीडितमान है भिछवोंके

वै० ॥ नरकेरौरवेजाताः कुंभीपाकेचयेगताः तेसर्वेतृप्तिमायांतुनीलपिंडंददाम्यहम् ॥ तप्ततैलेचक्षीयंतेयमलोकमहाभये ॥ तेसर्वे० ॥ किंकरैः पीडयतेयेचक्षुद्दृढमिक्षुकांडवत् ॥ तेसर्वे० ॥ जलेनपीडितापंकयमदूतैर्महाबलैः ॥ तेसर्वे० ॥ पत्रमध्येप्रपीडचंते प्रेतपीडाव्यवस्थिताः ॥ तेसर्वे० ॥ कुष्ठापस्मारलूताभिर्जलोदरभगंदरैः ॥ तेसर्वे० ॥ गंड

समुदायकी माफक और जल करके यमदूतोंकरके पीडित है सो सर्व मैं जो देता हूं नीलपिंड इसी करके तृप्त होवो । और असिपत्रनरकमें पीडितमान होय रहे है जो प्रेतपीडामें जो स्थित है ये जो सर्व मैं दिया जो नीलपिंड इसीसे तृप्त होवो । जो कोढ मृगी लूतरोग जलंधर, भगंदर, रोगोंसे मरे है सो सर्व मैं देता हूं

नीलपिंड जिसी करके तृप्त होवो। जो गंडमालरोग पांडुरोग क्षयरोग इनोंकरके मरे है सो मैं देता हूं नीलपिंड जिसी करके तृप्त होवो। जो कैदके घरमें मरगया है और सिंह व्याघ्रके भयसे मरगया होय सो सर्व मैं देता हूं नीलपिंड जिसी करके तृप्त होवो। जो मार्गमे चांडालोंने मारेगये है और मलीनशय्याके ऊपर मर

मालापांडुरोगक्षयव्याधिमृताश्चये ॥ तेसर्वे० ॥ कारागृहेमृतायेचव्याघ्रभीतिहतास्तथा ॥ तेसर्वे० ॥ चांडालैर्नियतामार्गे अशौचशयने मृताः ॥ तेसर्वे० ॥ ब्रह्मस्वहारिणोयेचसुरापा ब्रह्महारिणः ॥ तेसर्वे० ॥ कुञ्जाश्चब्रधिरायेचपितृमातृकुलोद्भवाः ॥ तेसर्वे० ॥ संसाररहितायेचरौरवादिषुयेगताः ॥ तेसर्वे० ॥ वृक्षयोनिगतायेचतृणगुल्मलतास्थिताः ॥ ते

गये है सो मैं देताहूं नीलपिंड तिसी करके तृप्त होवो। जो ब्राह्मणके धनकी चोरी करी है जो मदिरा पिइ है जो ब्राह्मणपणेकुं खोयदिया होय सो सर्व मैं देता हूं नीलपिंड जिसीसे तृप्त होवो। जन्मे मरे तो नहिं रौरवादि नरकके कुंभोंमें पडे है सो सर्व मैं देता हूं नीलपिंड तिसी करके तृप्त होवो। जो वृक्षयोनिमें प्राप्त है और

तृणवेलकी योनिकुं प्राप्त भये है सो मैं देता हूं नीलपिंड जिसी करके तृप्त होवो देवयोनि मनुष्ययोनि पक्षी जलजीवयोनि प्रेतपिशाचयोनि यो जो योनियोंमें प्राप्त भये जो सो मैं देता हूं नीलपिंड जिसीकरके तृप्त होवो । जो कृमि कीट पतंगकी योनि अपने कर्मोंकरके प्राप्त भये है सो मैं जो देता हूं नीलपिंड तिसीकरके तृप्त

सर्वे० ॥ देवत्वंमानुषत्वंचतिर्य्यक्प्रेतपिशाचकाः ॥ तेसर्वे० ॥ कृमिकीटपतंगत्वंगता येचस्वकर्मणा ॥ तेसर्वे० ॥ रौरवेनरकेयाताः कुंभीपाकेचयेगताः ॥ तेसर्वे० ॥ आसुरीयोनिमुत्पन्नाःपिशाचत्वंगताश्चये ॥ तेसर्वे० ॥ उद्बुदेनरकेजाताऊर्ध्ववक्त्रस्थिताश्चये ॥ तेसर्वे० ॥ महापातकजान्घोरान्नरकान्प्राप्यदारुणान् ॥ तेसर्वे० ॥ महाप्रेतमहाभा

होवो । रौरवनरकमें तथा कुंभीपाकमें जो प्राप्त भया है सो मैं जो देता हूं नीलपिंड तिसी करके तृप्त होवो । आसुरीयोनिमें पैदा जो होगये और पिशाच योनिमें प्राप्त होगये सो मैं जो देता हूं नीलपिंड जिसी करके तृप्त होवो । उद्बुद नरकमें जो प्राप्त होय रहे है और ऊंचेकुं मुख जिनका है सो मैं जो देता हूं नीलपिंड तिसी करके तृप्त होवो । महापापसे घोर नरक प्राप्त होगया होवे जिनोकुं तृप्त होनेके वास्ते मैं जो नीलपिंड

देता हूं जिसींसे तृप्त होवो ह। जो महाप्रेत नाझजिंद वरै झागसे प्राप्त हो गये होय जिनकुं तृप्त करनेके वास्ते मैं नीलपिंड देताहुं सो इससे तृप्त होवो। अगम्य स्त्री स्वकुलकी मातुकुलकी गुरुस्त्री इत्यादिक जिनोंसे पाप दृष्टि करनेवाला और व्रतभंग करनेवाला ऐसा पापी कुयोनिमें पडा होय तिसको मैं जो देताहुं नील-पिंड जिसीकरके तृप्त होवो। जो जल अग्निसे मरा होवे और अघोरकर्म होय और धर्मरहित होय मातृ-

गाप्रेतपूर्वेचसंस्थिताः ॥ तेसर्वें० ॥ अगम्यागमनंचैवव्रतभंगकराश्चये ॥ तेसर्वें० ॥ जलाग्निभिर्मृतायेचअघोराधर्म्मवर्जिताः ॥ तेसर्वें तृप्तिमायांतुनीलपिंडंददाम्यहं ॥ इति श्राद्धविधिः ॥ अथनीलपुच्छतर्पणम् ॥ ततः सव्येनाचमनीयं पूर्वाभिमुखः कुशयवतिल

पितृ कुलके सो मैं जो देताहुं नीलपिंड जिसीकरके तृप्त होवो। इसीतरह बोलके वृषभके अगाडी सताईस पिंड देना ॥ इति एवं पिंडे पाद्य आचमन स्नान चंदन पुष्प धूप दीपं दक्षिणां दद्यात्। इति नीलश्राद्धविधिः॥ अथ नाम अब नीलवृषपुच्छतर्पण कहते हैं। सव्यं कृत्वा आचमन करना पूर्वमुख करना और वृषभके पिछाडी खडा होके वृषकी पुच्छ हाथमें लेके दर्भ यव तिल जल लेना पीछे जल तिल पुच्छपै डालबो

करना और ये मंत्र बोलना ब्रह्मादि सब देवता और ऋषि मुनि नीलकी पुच्छके जलसे तृप्त होवो ॥ १ ॥
और असुर देवस्त्री षोडश तथा सप्त तथा नव मातृका चंडिका देव्यः तृप्त होवो पुच्छके जलसे तृप्त

जलमादाय ॥ ब्रह्माद्या देवताः सर्वा ऋषयोमुनयस्तथा ॥ तेसर्वेंतृप्तिमायांतुनीलपुच्छेषुतर्पिताः॥असुरादेवपत्न्यश्चमातरश्चंडिकास्तथा॥दिक्पालालोकपालाश्चगृहदेवाधिदेवताः ॥ तेसर्वेंतृप्तिमायांतुनीलपुच्छेषुतर्पिताः ॥ विश्वेदेवास्तथादित्याः साध्याश्चैवमरुद्गणाः ॥ तेसर्वें० ॥ क्षेत्रपीठोपपीठादिनदानद्याश्चसागराः ॥ तेसर्वें० ॥ पातालेनागपत्न्यश्चनागाश्चैवसपर्वताः ॥ तेसर्वें० ॥ पृथिव्यापश्चतेजश्चवायुराकाशमेवच ॥ तेसर्वें० ॥

होवो ॥ २ ॥ स्वर्गपाल लोकपाल ग्रहदेव अधिदेवता ये सर्व वृषपुच्छोंके जलसे तृप्त होवो ॥ विश्वेदेवता-आदित्य देवता साध्यदेवता मरुद्गण ये सर्व नीलपुच्छके जलसे तृप्त होवो ॥ ३ ॥ और क्षेत्र पीठ उपपीठसे आदिलेके नद नदी सागर ये सर्व नीलपुच्छके जलसे तृप्त होवो ॥ ४ ॥ पातालमें नागपत्नी और नाग और पर्वत ये सर्व नीलपुच्छके जलसे तृप्त होवो ॥ ५ ॥ और पृथिवी जल अग्नि वायु आकाश ये सर्व नील-

पुच्छके जलसे तृप्त होवो ॥ ६ ॥ जो पिशाच गुह्यक प्रेतगण गंधर्व राक्षस ये सर्व नीलपुच्छके जलसे तृप्त होवो ॥ ७ ॥ स्वर्ग जमीन अंतरिक्षमें जो रहतेहैं और पातालमें बसते हैं सो नीलपुच्छके जलसे तृप्त होवो

पिशाचागुह्यकाःप्रेता गणागंधर्वराक्षसाः ॥ तेसर्वे० ॥ दिविभुव्यंतरिक्षेचयेचपातालवासिनः ॥ तेसर्वे० ॥ शिवः शिवातथाविष्णुः सिद्धिर्लक्ष्मीसरस्वती ॥ तेसर्वे० ॥ तपोधनश्चभगवान्व्यक्ताव्यक्तमहेश्वरः ॥ तेसर्वे० ॥ क्षेत्रौषधिर्लतावृक्षा वनस्पत्याधिदेवताः । तेसर्वे० ॥ कपिलः शेषनागश्चतक्षकोऽनंतएवच ॥ तेसर्वे० ॥ अनेकजलचराजीवा अ

॥ ८ ॥ शिव पार्वती विष्णु सिद्धि लक्ष्मी सरस्वती ये सर्व नीलपुच्छके जलसे तृप्त होवो ॥ ९ ॥ तपोधन भगवान् व्यक्ताव्यक्त महेश्वर भगवान् ये नीलपुच्छके जलसे तृप्त होवो ॥ १० ॥ क्षेत्र औषधि लतावेलडी वृक्ष वनस्पति अधिदेवता ये सर्व नीलपुच्छके जलसे तृप्त होवो ॥ ११ ॥ कपिलमुनि शेषनाग तक्षक अनंत ये जो नागदेव है सो नीलपुच्छके जलसे तृप्त होवो ॥ १२ ॥ अनेक जलके जीव असंख्यारूप सो

नीलपुच्छके जलसे तृप्त होवो ॥ १३ ॥ जो सर्व यक्षराज पशु पक्षि ये सर्व नीलपुच्छके जलसे तृप्त होवो ॥ १४ ॥ पसेवसे पैदा होनेवाले जीव जलसे पैदा होनेवाले जीव अंडसे पैदा होनेवाले जीव जरसे पैदा

संख्यातास्त्वनेकशः ॥ तेसर्वे० ॥ चतुर्दशयमाश्चैवयेचान्येयमकिंकराः ॥ तेसर्वे० ॥ सर्वेचयक्षराजानः पशवःपक्षिणस्तथा ॥ तेसर्वे० ॥ स्वेदजोद्भिज्जजातीयाअंडजाश्चजरायुजाः ॥ शांतिदाःशुभदास्तेस्युर्नीलपुच्छेषुतर्पिताः ॥ ततोऽपसव्यं ॥ दक्षिणाभिमुखः ॥ हस्तेकुशतिलयुतजलमादाय ॥ मातृपक्षाश्चयेकेचिद्येचान्येपितृपक्षकाः॥गुरुश्वशुरबंधूनोये कुलेषुव्यवस्थिताः ॥ तेसर्वेतृप्तिमायांतुनीलपुच्छेषुतर्पिताः॥येचान्येलुप्तपिंडाश्चपुत्रदारविव

होनेवाले जीव शांतिदायक जीव शुभदायक जीव ये सर्व नीलपुच्छके जलसे तृप्त होवो ॥ १५ ॥ ततः पश्चात् अपसव्यं कृत्वा दक्षिणामुखः यजमानः स्वहस्ते कुश तिल जल लेके पितृवत्तर्पण करना ॥ माता-की पक्षवाले पिताकी पक्षवाले गुरु ससुरकी पक्षवाले और बंधुकुलमें जो है सो नीलपुच्छके जलसे तृप्त होवो ॥ १६॥ जो हमारे कुलमें लुप्तपिंडवाले जो पुत्र स्त्री करके रहित थे सो सर्व नीलपुछके जलसे तृप्त

होवो ॥ १७ ॥ ब्रह्मसे लेके आजतक पितृवंशमें मातृवंशमें हुये जो सर्व मेरे वंशवाले और नोकर आश्रित सेवक ये सर्व नीलपुच्छके जलसे तृप्त होवो ॥ १८ ॥ और मित्र शिष्य स्वपशु वृक्ष जो अब दीखते है सो जो स्पर्शकरे है स्वेछासे उपकार करनेवाले और देशांतरमें जो मिल्याभेला रहा जो सो इनकुं स्वधा करके

र्जिताः ॥ तेसर्वे० ॥ आब्रह्मणोयेपितृवंशजातामातुस्तथावंशभवामदीयाः ॥ कुलद्वयेयेमम वंशभूताभृत्यास्तथाचाश्रितसेवकाश्च ॥ तेसर्वेतृप्तिमायांतुनीलपुच्छेषुतर्पिताः ॥ मित्राणिशिष्याःपशवश्चवृक्षा दृष्टाश्चस्पृष्टाश्चकृतोपकाराः ॥ देशांतरेयेममसंगताश्चतेभ्यःस्वधाकृत्य इदं ददामि ॥ तेसर्वे० ॥ येबांधवाऽबांधवावायेन्यजन्मनिबांधवाः ॥ तेसर्वेतृप्तिमायांतुनीलपुच्छेषुतर्पिताः ॥ अकालेपगतायेचयेचांधाःपंगवस्तथा ॥ तेसर्वे० ॥ विरूपाआमगर्भाश्चज्ञाता

देने लायक है सो ये सर्व नीलपुच्छके जलसे तृप्त होवो ॥ १९ ॥ जो हमारा बांधव है जो बांधव नहीं भी है अन्यजन्मके बांधव है सो नीलपुच्छके जलसे तृप्त होवो ॥ २० ॥ और अकाल मृत्युकुं प्राप्त भये है जो अंधा पांगला है सो नीलपुच्छके जलसे तृप्त होवो ॥ २१ ॥ और विरूप जो है गर्भमें विलाय गया है

जो जाननेमें आये हैं अथवा नहीं जानने आये हैं जो मेरे कुलमें नीलपुच्छकी वांच्छा करके आय प्राप्त होये है सो सर्व नीलपुच्छके जलसे तृप्त होवो ॥ २२ ॥ जो वृषयोनिमें जो हमारे कुलके जीव हैं और कीट पतंगकी योनिमें जो हैं सो सर्व नीलपुच्छके जलसे तृप्त होवो ॥ २३ ॥ रौरव नरकमें और कुंभी-पाकमें पडे हैं सो नीलपुच्छके जलसे तृप्त होवो ॥ २४ ॥ और भयंकर यमके लोकमें तप्ततैलनरककु-

ऽज्ञाताःकुलेमम ॥ आमगर्भाश्चयेकेचिदागताःपुच्छगोचरे ॥तेसर्वे०॥ वृषयोनिगतायेचकीटकाश्चपतंगकाः ॥ तेसर्वे०॥ नरकेरौरवेजाताःकुंभीपाकेचयेगताः ॥ तेसर्वे० ॥ तप्ततैलेचक्षीयंतेयमलोकमहालये॥ तेसर्वे०॥ किंकरैःपीडयतेयेचक्षुद्दृढामिक्षुकांडवत्॥तेसर्वे०॥जलेनपीडिताकंपायमदूतैर्महाबलैः॥तेसर्वे०॥यंत्रमध्येप्रपीडयंतेप्रेतपीडाव्यवस्थिताः॥कुष्ठापस्मारलू

कुंड है तिसमें जो पडे हैं सो नीलपुच्छके जलसे तृप्त होवो ॥ २५ ॥ और यमराजके दूतोंकरके पीडित-मान ईखकी माफक होय रहे हैं सो नीलपुच्छके जलसे तृप्त होवो ॥ २६ ॥ जलकरके पीडित कंपायमान हुवा थका महाबली यमके दूतोंकरके दुःखित है ऐसे जो जीव हमारे कुलके हैं सो नीलपुच्छके जलसे तृप्त

होवो ॥२७॥ और यंत्रोंके मध्य पीडितमान होय रहे हैं प्रेतपीडाकरके व्याप्त है और कुष्ठके रोगसे मृगीके रोगसे लूतारोगसे जलंदर भगंदर जो रोग है तिनसे मरे हैं सो इसी नीलपुच्छके जलसे तृप्त होवो ॥ २८ ॥ गंडमाला पांडुरोगसे और षैणकारोग जिसकुं क्षय बोलते हैं इनसे मरे जो मेरे कुलके सो इस नीलपुच्छके जलसे तृप्त होवो ॥ २७ ॥ काल ग्राहकरके जो मृता नाम मर गये और सिंह व्याघ्रके भयसे मरगया है

तादिजलोदरभगंदरैः ॥ तेसर्वे० ॥ गंडमालापांडुरोगैःक्षयव्याधिमृताश्चये ॥ तेसर्वे० ॥ कालग्राहेमृतायेचसिंहव्याघ्रहताश्चये ॥ तेसर्वे० चांडालैर्निहतामार्गेअशौचशयनेमृताः ॥ तेसर्वे० ॥ ब्रह्मस्वहारिणोयेचसुरापाः स्वर्णहारिणः ॥ तेसर्वे० ॥ कुब्जाश्चबधिरायेचपितृमातृकु

सो नीलपुच्छके जलसे तृप्त होवो ॥ ३० ॥ चांडालोंकरके हतन हो गये जो मलीन शय्याके ऊपर मर गये सो नीलपुच्छके जलसे तृप्त होवो ॥ ३१ ॥ जो ब्राह्मणको द्रव्य हरनेवाले तथा मद्यपान करनेवाले तथा स्वर्णकी चोरी करनेवाले जीव नीलपुच्छके जलसे तृप्त होवो ॥ ३२ ॥ जो कुबडे बहरे मातापिताके

कुलमें थे सो नीलपुच्छके जलसे तृप्त होवो॥ ३३॥ जो बोहोत बर्षोंसे रौरवादि नरकोंमें पडे सो नीलपुच्छके जलसे तृप्त होवो ॥ ३४ ॥ जो सर्पकी योनिमें प्राप्त हो गये जो तृण गुल्म लता वेलडीकी योनिमें प्राप्त हो गया सो नीलपुच्छके जलसे तृप्त होवो ॥ ३५ ॥ देवयोनि मानुषयोनि पक्षीजलजीवोंकी योनिमें प्राप्त होय

लोद्भवाः॥ तेसर्वे० ॥ संसाररहितायेचरौरवादिषुये गताः॥ तेसर्वे० ॥ सर्पयोनिगतायेचतृण गुल्मलतास्थिताः॥तेसर्वे०॥ देवत्वंमानुषत्वंचतिर्यक्प्रेतपिशाचकाः॥तेसर्वेतृप्तिमायांतुनी लपुच्छेषुतर्पिताः॥ कृमिकीटपतंगत्वंगतायेचस्वकर्मणा॥ तेसर्वे० ॥ पश्वादियोन्यांयेजातावृ श्चिकादिषुयेगताः ॥ आसुरीयोनिसंप्राप्ताःपिशाचत्वंचयेगताः ॥ तेसर्वे० ॥ उद्बंधनरकेजा

रहेहै सो नीलपुच्छके जलसे तृप्त होवो ॥ ३६ ॥ और कृमी कीट पतंगोंकी योनिमें प्राप्त होय रहेहैं सो अपने कर्मकरके है सो नीलपुच्छके जलसे तृप्त होवो ॥ ३७ ॥ जो पशुयोनि वृश्चिकयोनि जो आसूरी-योनि पिशाचयोनिमें प्राप्त होय रहे हैं सो नीलपुच्छके जलसे तृप्त होवो ॥ ३८ ॥ और उद्बंधनरकमें जो

है ऊपरकुं तिनका सुख है ऐसा जीव है सो नीलपुच्छके जलसे तृप्त होवो ॥ ३९ ॥ महापापोंसे जो नरकधारोंमें पडे हैं ऐसे जो मातृ पितृ कुलके मध्यके है सो नीलपुच्छके जलसे तृप्त होवो ॥ ४० ॥ महाकर्मोंकरके महाप्रेत हो गये है और इसी प्राणिसे पूर्वके जन्मे हुये सो नीलपुच्छके जलसे तृप्त होवो॥४१॥

ताऊर्ध्ववक्त्रास्थिताश्चये॥ तेसर्वे० ॥ महापातकजान्घोरान्नरकांश्चाथदारुणान् ॥ तेसर्वे० ॥ महाप्रेतमहाभागाःप्रेतपूर्वैचयेस्थिताः ॥ तेसर्वे० ॥ अगम्यागमनंचैवव्रतभंगकराश्चये ॥ तेसर्वे० ॥ जलाग्निभिर्मृतायेचअघोराधर्म्मवर्जिताः ॥ तेसर्वे० ॥ इतिनीलश्राद्धतर्पणरुद्रधरप्रेततरंगे ॥ अथपक्षांतरेषट्पुरुषतर्पणम् ॥ ततोऽपसव्येनजलतिलयुतताम्रपात्रस्थजलेन वृष

अगम्यास्त्रीगामी और व्रतभंग करनेवाले ऐसे जो पापी है सो जहां कहां योनिमें पडे है सो नीलपुच्छके जलसे तृप्त होवो ॥ ४२ ॥ जो जलमें डुबके और अग्निसे जलके मर गया होवे सो नीलपुच्छके जलसे तृप्त होवो ॥ ४३ ॥ इसी तरहसे वृषभकी पुच्छके ऊपर जल डालके तर्पण करना यह तर्पण रुद्रधरप्रेततरंग-

शास्त्रमें लिखा है। अब पक्षांतरकरके षट्नाम छः पीढीतकका तर्पण कहते हैं॥ अपसव्य जनेउसे करना। परंतु ताम्रपात्रमें तिल जल दर्भ डालके दक्षिणमुख हुवा थका वृषभकी तथा चारों बछियोंकी पुच्छ पकडके पितृतीर्थकी माफिक जलांजली देना दक्षिणहस्तके अंगुष्ठ नमायके मंत्र बोलके ऐसा कहना असुक गोत्र असुकशर्मा वर्म्मा गुप्तः पिता तव अक्षय्यतृप्तिहेतवे इदं वृषवत्सतरीपुच्छजलं तस्मै स्वधा नमः ३

भंवत्सतरीचतुष्टयसहितं पुच्छमेकीकृत्यद्विगुणकुशत्रयमादायपित्रादिभ्यःपितृतीर्थेन पौराणिकमंत्रस्योदीय्यांजलित्रयेणानेनमंत्रेणतर्पयेत् ॥ स्वधापितृभ्योमातृभ्योबंधुभ्यश्चापितृप्तये॥ मातृपक्षाश्चयेकेचिद्येचान्येपितृपक्षकाः॥ गुरुश्वशुरबंधूनांयेकुलेषुसमुद्भवाः॥येप्रेतभाव

असुकगोत्राय प्रपितामहाय असुकशर्मणे इदं वृषवत्सतरीपुच्छजलं तस्मै स्वधा नमः ३ असुकगोत्र असुकशर्मणेवृद्धप्रपितामहाय इदं वृषवत्सतरीपुच्छजलं तस्मै स्वधा नमः ३ असुकगोत्रायै असुकनामयुतायै मात्रे इदं वृषवत्सतरीपुच्छजलं तस्यै स्वधा नमः ३ एवं पितामही प्रपितामहीकुं देना। पश्चात् बंधुभ्यः स्वधा नमः। परन्तु जो मातृपक्षके हैं जो पितृपक्षके हैं जो गुरुकुलके हैं जो श्वशुरकुलके हैं ये जो प्रेतभा-

वकुं प्राप्त होगये होवें और केचित् श्राद्धरहित हैं सो सर्व वृषोत्सर्गकी पुच्छके जलसे तृप्तिकुं प्राप्त होवो ऐसा बोल बोलके तिलाक्षतयुक्त जल देना पीछे अमुकगोत्रके अमुकप्रेतका प्रेतत्व छुटनेकी वांछा करके यो जो वृषभबाच्छियोंकी पुच्छका जल मैं देताहुं सो तेरेकुं प्राप्त होवो ऐसा बोलना पश्चात् अमुकगोत्रके अमुक-

मापन्नायेचान्येश्राद्धवर्जितः॥वृषोत्सर्गेणतेसर्वेलभंतांतृप्तिमुत्तमां॥ दद्यादनेनमंत्रेणतिलाक्षतयुतंजलं॥ ततोअमुकगोत्रस्यअमुकप्रेतस्यप्रेतत्वविमुक्तिकांक्षया एषवत्सगोपुच्छोदकांजलिर्मयादीयतेतवोपतिष्ठतां॥इत्युक्त्वामुकप्रेतस्यप्रेतत्वविमुक्तयेवृषोऽयंमयोत्सृष्टःइतिसंकल्प्यजलंभूमौनिक्षिपेदित्यंजलित्रयंदत्त्वासव्येनाचम्य।ततोवत्सतरीसहितंवृषभंपुनः संपूज्य वृषभंप्रार्थयेत्। ब्रह्मात्वंवृषरूपेणशिवस्त्वमजरस्तथा॥ धर्मोवैवृषरूपेणप्रेतंवैतारयाऽशु

प्रेतका प्रेतत्व छुटनेके वास्ते वृषोऽयं यो जो वृष मैं छोडता हूं ऐसा संकल्प बोलके जल भूमीपे डालना पीछे अंजलीत्रय देना। पश्चात् सव्य करके आचमन करना पीछे बछियोंसहित वृषभकुं फेर पूजना पीछे प्रार्थना करना हाथ जोडके। तूं ब्रह्म है वृषरूप धारण किया है तूं शिव अविनाशी है तू धर्म्मदेवता है

वृषरूपकरके जलदी इस प्रेतकुं जलदी विघ्नोंसे पार उतार ऐसा बोलके वृषभकुं नमस्कार करना । पीछे वृषभके दक्षिणकर्णमें प्राप्त हुये यह वचन सुनाना । हे वृषभ तूं सहस्त्रों गौवोंमें क्रीडा कर सावधान हुवा थका ॥ एवं नाम ऐसेही बछियोंके कानोंमें वचन सुनाना । हे वत्सतर्य्य तुम बोहोत वर्षोंतक इसीके साथ क्रीडा करो यो जो प्रेत है तिसकुं मोक्ष देवो और सुख करो यह हमारी प्रार्थना है ॥ हे नाथ इस प्रेतके

भादितिवृषभंनत्वाच ॥ ततोवत्सस्यकर्णेउपात्तवाक्यंश्रावयेत् । गोसहस्त्रस्यमध्येतुक्रीडां कृत्वासमाहितः ॥ तथावत्सतरीकर्णेषुश्रावयेत् ॥ अमुकायशाश्वतंमोक्षंदेहिनाथसुखं नय ॥ ततोवारिधारयाक्षीरेणच पंचापिप्रदक्षिणांकृत्वाईशान्यांदिशिचालयेत् ॥ ततोवत्स तरीसहवृषभंत्यजेत् ॥ अद्यातिथौवृषोत्सर्गप्रतिष्ठासंसिद्ध्यर्थंब्राह्मणायहोत्रेचदक्षिणांदातुम

सुख करो ॥ पीछे जलकी धार अथवा दूधकी धार देना पांच परिक्रमा करके वृषभ बछियोंकुं ईशानको-णकी तरफ चलाना पीछे बछियोंसहित वृषभकुं त्यागन करना वृषभकुं तो छोडना और बछियोंकुं ब्राह्मण लेय लेवे पीछे हाथमें जल और दक्षिणा लेके संकल्प बोलके आजकी तिथिमें वृषोत्सर्गकी प्रतिष्ठा

सिद्ध होनेके वास्ते होम करनेवाले ब्राह्मणकुं या दक्षिणा मैं देता हुं ऐसा बोलके ब्राह्मणकुं दक्षिणा देना पीछे लोहारकुं कछु देना अथ नाम याके उपरांत वैतरणीरूप कपिला गौ सर्वसामग्रीसहित देना जो कपिला नहीं मिले तो और गौ देना परंतु पुष्प अक्षत पुष्पमालादि इन्होंकरके गौका पूजन करना परंतु प्रथम गौ लेनेवाले ब्राह्मणका वरण करना हे ब्राह्मण या वैतरणीरूप गौ देनेके वास्ते आपकुं चंदन पुष्प यज्ञोपवीत

हमुत्सृजे ॥ ततोऽलोहकारस्यवेदनंकृत्वा ॥ अथवैतरण्यांसोपकरणयुतांकपिलांदद्यात् ॥ तदलाभेगांचदद्यात् ॥ ततः पुष्पाक्षतैस्तांगांसंपूज्य ॥ प्रथमंगोग्राहकस्यवरणं सोपकरण गवेनमः ब्राह्मणायनमः इतिसंपूज्य ॥ नमोगोभ्यःश्रीमतीभ्यःसौरभेयीभ्यएवच ॥ नमोब्रह्मसुताभ्यश्चपवित्राभ्योनमोनमः ॥ अर्चितासिवसिष्ठेनविश्वामित्रेणपूजिता ॥ सुरभीहरमेपापंय

वस्त्रोंकरके वरताहुं, वृतोस्मि ब्राह्मण बोले सामग्रीसहित गौकुं नमस्कार है और ब्राह्मणकुं नमस्कार है ऐसे पूजन करके । सुरभी श्रीमती गौवोंकुं नमस्कार है एवं नाम निश्चयकरके ब्रह्मसुता गौवोंकुं पवित्ररूप गौवोंकुं नमस्कार है २ वसिष्ठ मुनिने आपकुं पूजी है । मिश्वामित्रने आपकुं पूजी है हे सुरभी जो मैं खोटा खरा

पाप किया है सो मेरा दूर कर इसी मंत्रकरके बच्छे सहित कपिला गौका पूजन करके ये जो मंत्र बोलके हाथमें जल कुश लेके फेर बोलना यमके द्वारपै हमने वैतरणी सुनी है सो वा जो वैतरणी जिसकुं तिरनेके अर्थ या जो गौ मैं देता हुं तुभ्यं नमः तुझे वैतरणीकुं नमस्कार करताहुं। गौ माता मेरे अगाडी सदा रहो

न्मयादुष्कृतंकृतम्॥ अनेनमंत्रेणकपिलांसवत्सांसंपूज्य॥ इममुच्चारयेन्मंत्रंसंगृह्यसजलान्कुशान्॥ यमद्वारेमहाघोरेश्रुत्वावैतरणींनदीम्॥तत्तुंकामोददाम्येतांतुभ्यंवैतरणींनमः॥गावोमेचाग्रतःसंतुगावोमेसंतुपृष्ठतः॥ गावोमेहृदयेसंतुगवांमध्येवसाम्यहं॥ विष्णुरूपद्विजश्रेष्ठमामुद्धरमहीश्वर॥ सदक्षिणामयादत्तातुभ्यंवैतरणीनमः॥ धर्म्मराजंचसर्वेशंवैतरण्याख्यधेनुकं॥ सर्वान्प्रदक्षिणीकृत्य ब्राह्मणायनिवेदयेत्॥ पुच्छंसंगृह्यधेन्वाश्चअग्रेकृत्वातुवैद्विजं। धेनुकेत्वं

गौ माता मेरे पिछाडी सदा रहो गौ माता मेरे हृदयमें वसो और गौवोंके मध्य मेरा वास होवो हे द्विजश्रेष्ठ आप विष्णुरूप हो सो मेरो उद्धार करो आप पृथिवीका देवता हो। दक्षिणासहित गौ वैतरणी आपको दिया है सो आपकुंभी नमस्कार और वैतरणीकुंभी नमस्कार है पीछे धर्म्मराजकी मूर्तिको परिक्रमा करके

कार्पाससहित ब्राह्मणकुं दे देना ॥ पीछे गौका पुच्छ पकडके खडा रह पीछे गौकुं लेके ब्राह्मण चले जब कोई दूर गौका पुच्छ पकडे पकडे जाना ऐसा बोले, हे गौ मेरेकुं यमके द्वारउपर वैतरणी है यमका द्वार भयंकर है सो वहां खडी मेरेकुं अडीकना प्राणीका और मेराभी उद्धार तूं करेगी सो हे देवेशि तुभ्यं नाम तेरेकुं वैतरणीरूप जानके नमस्कार करता हुं गौके पीछे चलना ऐसा बोलना कपिलपूजनप्रार्थनाको पीछे

प्रतीक्षस्वयमद्वारेमहाभये।उत्तारणार्थंदेवेशिवैतरण्येनमोस्तुते। अनुव्रजेतगच्छंतंसर्वमितिप ठित्वा ॥ कपिलापूजनप्रार्थनांते इक्षुदंडमयं सुदृढंलोहदंडसमन्वितं। हेममयंयज्ञपुरुषं। एत त्सर्ववैतरणीसमीपेकृत्वा ॥ ततोवैतरणीनैर्ऋत्यकोणे नौकामाहूय तत्रोपरिकार्पासंधृत्वा सलवणंघृतखांडंतत्रोपरियज्ञपुरुषं स्थापयेत् संकल्पयित्वा उत्तारयेत् ॥ अद्येत्याद्यमुक

इषके दंडसे तू दृढ जो नाव बनाई है सो गौके पीछे चलाना सोनेका यज्ञपुरुष येभी सर्व वैतरणीके पास करके पीछे वैतरणीके नैर्ऋत्यकोणमें नावकुं लाके उसी नावके ऊपर रुई रखना लवण, घृत खांड रखना और इन्होंके ऊपर यज्ञपुरुषकुं रखना पीछे संकल्पकरके उत्तारण करना अद्येत्यादि अमुकगोत्रस्य अमु-

कप्रेतस्य वैतरणी उतरनेके वास्ते श्रीयज्ञपुरुष भगवान् तृप्त होवो पश्चात् हस्ते जल तिल कुश लेके और गौका पुच्छ हाथमें लेके संकल्प करना अद्येत्यादि बोलके जो आज एकादशाहके दिन असुकगोत्र असुकप्रेतको स्वर्ग अखिल प्राप्त होनेकी कामनाकरके या जो कपिला गौ बच्छेसहित स्वर्णशृंगी सोनेके सींग है

गोत्रस्याऽमुकप्रेतस्यवैतरण्युत्तारणार्थंश्रीयज्ञपुरुषत्वंप्रीणीहि ॥ ततोयवतिलजलान्यादाय सकुशंगोपुच्छंगृहीत्वासंकल्पयेत् ॥ अद्येत्याद्यशौचांतद्वितीयेऽह्निअमुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्याक्षयस्वर्गाद्युत्तमलोकप्राप्तिकामः इमांकपिलांगांसवत्सांस्वर्णशृंगींरौप्यखुरांताम्रपृष्ठींकांस्योपदोहनींमुक्तालांगूलभूषितां घंटाचामरयुतांवस्त्रद्वयोपेतां इमांगांरुद्रदैवतांयथालंकारैरलंकृतांयथानामगोत्रायाऽमुकशर्म्मणेब्राह्मणायतुभ्यमहंसंप्रददे ॥ ततोगोऽग्रेयजमानःपृष्ठेनौ

रूपेके खूर है तामेकी पीठ है कांस्यपात्रका दोहनीया है मोतियोंकी माला पुच्छमें लगी है घंटा गलेमें है चंवर लग रहेहै एकवस्त्र गलेमें है एकवस्त्र पीठऊपर हैं। ऐसी जो गउ है जिसीका रुद्र देवता है जैसे अलंकार मिले जिनोंकरके युक्त है ऐसी जो गउ माता है जाकुं असुकशर्मा ब्राह्मणके अर्थ मैं देता हूं ऐसा बोलके

देना पीछे यजमान अगाडी होवे नावकुं पिछाडी लेना गौका पुच्छ पकडके मंडपके ईशानद्वार होके पार जाना पीछे पुच्छ छोडके हाथमें दक्षिणा और जल लेना पीछे बोलना कि किया जो मैं कपिला दान जिसी प्रतिष्ठा सिद्ध होनेके वास्ते सुवर्णदक्षिणा अमुकगोत्राय अमुकशर्मणे ब्राह्मणके अर्थ मैं देताहुं ऐसा बोलके

कांगोपुच्छंगृहीत्वाईशानद्वारेणपारंगच्छेत् । कृतैतत्कपिलादानप्रतिष्ठासंसिद्ध्यर्थंसुवर्णद क्षिणांदद्यात् ॥ पश्चाद्द्रोणशिखरेसप्तधान्यसमन्वितंसकार्पासंचदेयम् ॥ एतत्सर्वंयद्दत्तंतेन विष्णोप्रसीद ततःसचैलस्नानंकृत्वावस्त्रंत्यजेत् ॥ इतिवृषोत्सर्गः ॥ अथोदकुंभदानम् ॥ अ र्वाक्सपिंडीकरणंयस्यसंवत्सराद्भवेत् । तस्याप्यन्नंसोदकुंभंदद्यात्संवत्सरंद्विजे ॥ ततोद्वादश

देना पश्चात् सप्तधानका कुढ लगाके उसीके ऊपर रुई रखके ब्राह्मणकुं देना ये जो इतनी वस्तु दान किया है जिन्होंसे विष्णु भगवान् प्रसन्न होवे। पीछे सर्व वस्त्रोंसाहित स्नान करना नवीन धारना जीर्ण त्यागना इति वृषोत्सर्गः ॥ अथ याके पश्चात् जलके घटदान प्रेतके निमित्त करना जिसी प्राणीकी सपिंडी संवत्सरसे

पहले द्वादशे दिने बारहवें दिन करनी होवे तो उसी प्राणीकुं पिंड घटजलका और अन्न संवत्सरतकका एकादशके दिन देना। अपसव्य करके दक्षिणमुख होके वामा गोडा मोडके हाथमें कुश तिल जल लेके अद्येत्यादि बोलके असुकगोत्र असुकप्रेत यो जो अन्न जलसहित द्वादश घट मैं देताहूं सो तेरेकुं प्राप्त होवो।

सान्नोदककुंभदानं ॥ अपसव्येनदक्षिणामुखः पातितवामजानुः अद्येत्याद्यमुकगोत्रामुकप्रेतोऽयंसान्नोदकद्वादशकुंभामयादीयंतेतवोपतिष्ठन्तां ॥ अथैकादशाहश्राद्धेतिकर्त्तव्यता ॥ ततः श्राद्धारंभः पूर्व्वमेवब्राह्मणंनिमंत्र्य ॥ उक्तंचवाराहपुराणे॥ अस्तंगतेयदादित्येगत्वावि प्रंनिवेशयेत्॥दत्त्वापाद्यंतुविधिवन्नमस्कृत्यद्विजोत्तमं ॥ १ ॥ पादौप्रक्षाल्यतैलेनप्रेतस्यहित

अथ याके अनंतर एकादशेके दिनका कर्त्तव्य कहते हैं एकादशाहश्राद्ध करना जब पूर्वदिन ब्राह्मणके घर जायके ब्राह्मणको निमंत्रण करना ॥ वाराहपुराणमें लिखा है सूर्यअस्त होवे तब पूर्वदिन ब्राह्मणके घर जाना वहां जाके ब्राह्मणके चरणारविंदमें पाद्य देना और हस्तोंमें अर्घ्य देना पीछे ब्राह्मणकुं नमस्कार करना ब्राह्मणका चरणप्रक्षालन करना जलमें तेल डालके प्रेतके अच्छेके वास्ते प्रभात सूर्य नारायण उदय

होवे तब तैलाभ्यंग करके नदी, तडाग, कूपपै स्नान करके श्राद्ध करनेके जगहमें ब्राह्मणोंकुं बुलाना और यजमान दक्षिणदिशाकी तरफ मुख करके बैठे अपसव्य जनेउ रखै आसनके ऊपर बैठके पीछे श्राद्धके वास्ते निमंत्रण किया जो ब्राह्मण तिसके आसनके पास श्राद्ध समाप्त होवे जबतक तेल अथवा घृत डालके

काम्यया ॥२॥ प्रभातसुपतिष्ठेयमुदितेचदिवाकरे ॥ तैलाभ्यंगमतःकृत्वानद्यादौस्नानमाचरेत् ॥३॥ आदिशब्देनतडागेवास्नानंकारयेत् ॥ श्राद्धसमीपेद्विजमाहूय ॥ स्वयंदक्षिणाभिमुखः अपसव्यमासनेउपविश्य ॥ द्विजासनसमीपेश्राद्धसमाप्तिपर्य्यंतंतिलतैलेनघृतेनवाप्रज्वालितंदीपंस्थापयेत् ॥ प्राणायामं विष्णुस्मरणंचविधाय ॥ अपसव्येनयवकुशजलान्यादाय प्रतिज्ञांकुर्यात् अद्येत्यादिअमुकगोत्रस्याऽमुकप्रेतस्यप्रेतत्वविमुक्तिपूर्व्वंकांक्षयास्वर्गाद्यु

दीप करना तिलोंके ऊपर दीपकुं रखना ॥ पश्चात् यजमान प्राणायाम करके विष्णुभगवान्का स्मरण करके अपसव्य होके कुशा, यव, तिल, जल हाथमें लेके प्रतिज्ञा नाम संकल्प करना अद्येत्यादि ऐसा तो सव्यसे

बोलना गोत्र बोलके वखत अपसव्य कर लेना ऐसा बोलना अमुकगोत्र अमुकप्रेतका प्रेतपना छूट-नेकी वांछा करके स्वर्गादि उत्तमलोककी प्राप्ति होनेके अर्थ षोडश श्राद्धोंके अंतर्गत एकादशाहश्राद्ध एके-कोद्दिष्टश्राद्ध ये जो प्राप्त हुई वस्तु तिनोंसे मैं करूंगा ऐसा संकल्प बोलना पीछे ऐसा बोलना कर्म्मपात्र मैं करता हूं ऐसा संकल्प बोलके चूप होना पीछे ब्राह्मण बोले एकादशाह श्राद्ध तू कर और कर्म्मपात्र तूं कर

त्तमलोकप्राप्तिकामः षोडशश्राद्धांतर्गतैकादशाहैकैकोद्दिष्टश्राद्धमेभिरुपनीतद्रव्यैरहंकरिष्ये इतिसंकल्पः ॥ ततःकर्म्मपात्रमहंकारिष्ये । ॐकुरुष्वेत्यनुज्ञानः ॥ कर्म्मपात्रस्यासनं ॥ आसनेपात्रं । पात्रेजलं।शन्नोदेवीतिमंत्रेण पवित्रस्थेतिकुशम् यवोसीतियवान् याःफलिनीति

ऐसी आज्ञा ब्राह्मण करे पीछे यजमान कर्म्मपात्रके वास्ते दर्भाका आसन रखे आसनपै कर्म्मपात्र रखे पात्रमें शन्नोदेवीति मंत्र बोलके जल रखे पवित्रस्थेति मंत्र बोलके कुशाका पवित्रा रखना यवोसि इति मंत्र बोलके यव डालना याःफलिनीति मंत्र बोलके सुपारी रखना श्रीश्चतेति मंत्र बोलके तुलसीपत्र रखना गंधद्वारेति मंत्र

बोलके चंदन रखना । अपसव्य होके । तिलोसीति मंत्र बोलके तिल डालना । पछि सव्य होके ॥ गंगे च यमुने चेति मंत्र बोलके तीर्थाकरको आवाहन करना पछि मोटक हाथमें लेके कर्म्मपात्रके जलसे श्राद्धभू-मिकुं प्रोक्षण करना और अपनी आत्माकुं प्रोक्षण करना और श्राद्धकी सामग्रीका प्रोक्षण करना अपवित्रः

पूगीफलं श्रीश्चतेइतितुलसीदलं गंधद्वारामितिचंदनं ततोऽपसव्यं ॥ तिलोसीतितिलदानं ॥ ततःसव्यं ॥ गंगेचयमुनेचेतितीर्थमावाह्य ॥ तज्जलैः सकुशैःश्राद्धद्रव्याणि भूमिमात्मानं चाभिषिंचेत् ॥ अपवित्रःपवित्रोवेतिमंत्रेण ॥ गायत्रींजपेत् ॥ देवताभ्यश्चेतिपठित्वा ॥ ततोअपसव्येनदिग्बंधनंकुर्य्यात् । तिलयवकुशान्वामकरेधृत्वादक्षिहस्तेनदिशंप्रतिप्रक्षिपे

पवित्रो वेति मंत्र बोलके प्रोक्षण करना ॥ गायत्रीमंत्र त्रय बोलना और देवताभ्यश्चेति मंत्र वारत्रय बोलना पीछे अपसव्य करके दिग्बंधन करना । तिल, यव, कुश ये वाम हाथमें लेके दक्षिणहाथसे मंत्रमंत्रपै पढके

दिग्बंधन करना सो कहते हैं ॥ दक्षिणहस्तसे यव, तिल, कुशा फांकना अग्निष्वात्तादिपितृगण है सो मेरी पूर्वदिशामें रक्षा करो । अपहतासुरेति मंत्र बोलके फांकना पूर्वदिशामें और बर्हिषद पितृगण है सो दक्षिण-दिशामें मेरी रक्षा करो अपहतेति० । आज्यपा पितृगण है सो मेरी पश्चिम दिशामें रक्षा करो । अपह-

त्॥अग्निष्वात्ताःपितृगणाःप्राचींरक्षंतुमेदिशं । अपहतासुरारक्षा ँ सिवेदिषदः॥ तथाबर्हिषदः पांतुयाम्यांयेपितरः स्थिताः । अपहतासुरारक्षा ँ सिवेदिषदः ॥ प्रतीचीमाज्यपाः पांतु अपहतासुरारक्षा ँ सिवेदिषदः ॥ उदीचीमपिसोमपाः अपहतासुरारक्षा ँ सिवेदिषदः ॥ ऊर्द्ध्वपातुमरुद्गणाः अपहतासुरारक्षा ँ सिवेदिषदः ॥ विश्वेदेवाअधः पांतुअपहतासुरारक्षा ँ सिवेदिषदः ॥ ततः सव्येन ॥ रक्षोभूतपिशाचेभ्यः इतिनीवीबंधनं ॥ ततोऽपसव्ये

तेति० । सोमपा पितृगण है सो उत्तर दिशामें मेरी रक्षा करो । अपहतेति० ॥ मरुद्गण जातके देवता है सो मेरी ऊर्ध्व नाम आकाशमें रक्षा करो । अपहतेति० ॥ विश्वेदेवा देवता है सो मेरी अधः नाम जमीनपै

रक्षा करो। अपहतेति० ॥ पश्चात् सव्यं कृत्वा। रक्ष भूत पिशाचोंसे माधव भगवान् रक्षा करो ऐसा बोलके शेष यव,तिल,दर्भा रहे तिससे नीवी नाम धोतीकी मोडीमें बलके साथ बांध लेना पीछे अपसव्य होके प्रेतासन देना। पुनर्जल हाथमें लेके अद्याशौचांत द्वितीयेह्नि अमुकगोत्र अमुकप्रेत तेरेकुं हम बैठनेके वास्ते आसन देते हैं सो तेरेकुं प्राप्त होवो अथ नाम याके पीछे हस्तार्घपात्रकुं कर्मपात्रके जलसे भर लेना

नासनंदद्यात् ॥ अद्याशौचांतद्वितीयेह्नि अमुकगोत्राऽमुकप्रेतेदंकुशासनंमद्दत्तंतवोपतिष्ठताम् ॥ अथहस्तार्घपात्रं ॥ कर्मपात्रजलेनगधंपुष्पपवित्रान्वितंतिलजलैर्हस्तार्घमापूर्य्य ॥ पवित्रंद्विजकरेदत्त्वा। ॐयादिव्याआपः पयसासंबभूवुर्याअंतरिक्षाउतपार्थिवीर्याः॥ हिरण्यव

पीछे हस्तार्घ पात्रमें गंध पुष्प पवित्रा तिल डालके हस्तार्घपात्रकुं वामे हाथमें लेना पीछे अर्घपात्रमें जो पवित्र है सो प्रेतके अगाडी भोजनपात्र है तिसी ऊपर रखना पश्चात् दक्षिण हस्तकी चुलका कर्मपात्रके जलसे भरके यादिव्या मंत्र बोलके प्रेतके भोजनपात्रके ऊपर चुलकका जल डालना पीछे अर्घ अमुकगोत्र

अमुकप्रेत तेरे कुंभमें जो हस्तार्घ देते हैं सो प्राप्त होवो ॥ ऐसे अर्घ देके अर्घपात्रकुं प्रेतरूप द्विजके वामे भागमें रखना ॥ अर्घपात्र रखके पीछे दक्षिणहाथमें उठाके प्रेताय स्वस्थानमसीति बोलके अर्घपात्रकुं वहां-ही न्युब्जी नाम औंधा करदेना उसी अर्घपात्रके ऊपर कुशत्रय रखना पीछे प्रेतरूप ब्राह्मणका चरण प्रक्षा-

णांयज्ञियास्तानआपःशिवास २ स्योनासुहवाभवंतु इतिपठित्वा ॥ अद्याशौचांतद्वितीये ऽह्निअमुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्यप्रेतत्वविमुक्तिपूर्वकांक्षयास्वर्गाद्युत्तमलोकप्राप्तिकामः एषह स्ताघोंमयादीयतेतवोपतिष्ठतांइत्यर्घंदत्त्वा ॥ अर्घपात्रंद्विजवामभागेनिधायप्रेतायस्वस्थान मसीतिन्युब्जीकुर्य्यात् ॥ तदुपरिकुशत्रयंनिदध्यात् ॥ ततोब्राह्मणपादौप्रक्षाल्य गंधपुष्पा क्षतधूपादिभिः संपूज्य ॥ अद्येहाऽमुकगोत्राऽमुकप्रेतअर्चनविधावेतानिगंधाक्षतपुष्पधूप

लन करके गंध मस्तकको लगाना पुष्प मस्तकपै चढाना अक्षत चढाना धूप रालका करना वासावली चढाना ऊर्णासूत्र चढाना दीपक अर्पण करना तांबूल नागरपान अर्पण करना यज्ञोपवीत वस्त्र अर्पण

करना परंतु मोटक तिल जल हाथमें लेके । अद्येहाऽमुत्र तृप्ति प्राप्त होनेके अर्थ अमुकगोत्र अमुकप्रेत तेरी अर्चनाविधिमें ये जो गंध अक्षत पुष्प धूप दीप ऊर्णासूत्र तांबूल यज्ञोपवीत आच्छादनादि ये जो तुमकुं हम देते हैं सो प्राप्त होवो । पश्चात् आचार्य ब्राह्मणकुं प्रेतके भोगे हुये वस्त्र पात्र छत्र उपानह आदि और कोई वस्तु देते हैं सो हे प्रेत तेरेकुं प्राप्त होवो । पीछे सव्य करके आचमन करना पश्चात् गंध अक्षतोंकरके

दीपोर्णासूत्रतांबूलयज्ञोपवीताच्छादनानिमयादीयंतेतवोपतिष्ठंताम् ॥ ततः प्रेतभुक्तवस्त्रपात्रच्छत्रोपानहकादिकंचदद्यात् ॥ ततःसव्येनाचम्य ततोगंधाक्षतेनछत्रंसंपूज्य । छत्रायनमः इतिपूजयेत् ॥ ब्राह्मणायनमः ॥ छत्रंददामीतिद्विजकरेजलदानं ॥ अद्येत्यादिअमुकगोत्रस्याऽमुकप्रेतस्यप्रेतत्वविमुक्तिपूर्वकांक्षयास्वर्गाद्युत्तमलोकप्राप्तिकामः यममार्गेघोरातपघ

छत्रकुं पूजन करके छत्राय नमः ऐसा बोलके पूजन करना ब्राह्मणाय नमः छत्र आपकुं देता हूं ऐसा बोलके ब्राह्मणके हाथमें जल देना पीछे हाथमें मोटक तिल जल लेके अद्येत्यादि बोलके अमुकगोत्र अमुकप्रेतका प्रेतपना हुवा सो दूर होनेके वास्ते अक्षय्यस्वर्ग उत्तमलोक प्राप्त होनेके अर्थ यमराजके मार्गमें घोर

घाम पसीना निवारणके अर्थ यो जो छत्र जिसीका उत्तानांगिरस देवता है सो अमुकगोत्र अमुकशर्मा जो तुम ब्राह्मण हो सो तुमारे अर्थ छत्र मैं देता हूं ऐसा बोलके देना पीछे ब्राह्मण स्वस्तीति प्रतिवचन बोलना परंतु यजमान हाथमें सुवर्णकी दक्षिणा और जल लेके अमुकगोत्र अमुकशर्मा ब्राह्मणकुं छत्रदानप्रतिष्ठाकी सिद्धि होनेके वास्ते यो जो सुवर्ण अग्नि है देवता जिसको तुमारेकुं दक्षिणारूप करके हम देते हैं ब्राह्मण

मंनिवारणार्थं इदंछत्रं उत्तानांगिरसदैवतममुकगोत्रायाऽमुकशर्मणेब्राह्मणायतुभ्यमहंसंप्रददे ॥ स्वस्तीतिप्रतिवचनं ॥ छत्रदानप्रतिष्ठार्थंदक्षिणां हिरण्यमग्निदैवतंअमुकगोत्रायामुकशर्मणेब्राह्मणायतुभ्यमहंसंप्रददे ॥ ब्राह्मणहस्तेछत्रदंडेनधारयेत् ॥ उपानद्दानं ॥ उपानद्भ्यांनमः ॥ ब्राह्मणायनमः ॥ इत्युपानहौसंपूज्य ॥ पूजानंतरंउपानहौददामीतिद्विजक

दक्षिणा लेके छत्रकुं हाथमें धरे । पछि यजमान उपानहका दान करे । उपानद्भ्यां नमः पगरक्षीकुं हाथ जोडे और ब्राह्मणाय नमः ब्राह्मणकुं हाथ जोडे पीछे उपानहकुं गंधपुष्पोंकरके पूजन करके जल हाथमें लेके ब्राह्मणके हाथमें डालना पगरक्षी आपकुं मैं देता हूं ऐसा बोलना ॥ पुनः मोटक तिल जल हाथमें

लेके अद्यामुकगोत्र अमुकप्रेतकुं ऊंचा नीचा तेज किरणोंकरके तपायमान बालुका यमके रस्तेमें और खड्गकी माफक पत्रा जिनोंका ऐसेही वृक्षोंसे दुःख नहीं होनेके अर्थ और कांटोंकी भूमि अच्छीतरह सुखसे जानेके अर्थ इमे नाम ये जो पगरक्षियोंका जोडा एक इसीका उत्तानांगिरसदेवता है सो प्रेतके हितके अर्थ

रेजलदानं ॥ अद्यामुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्योच्चावचखरतरकिरणसंतप्तवालुकाभिरसिपत्रवनोपकंटकितरणदुर्गभूमिसंतरणकामः इमेउपानहौउत्तानांगिरसदैवतेप्रेतहितकामनया अमुकगोत्रायामुकशर्मणेब्राह्मणायतुभ्यमहंसंप्रददे ॥ स्वस्तीतिप्रतिवचनं ॥ अद्यकृतैतदुपानद्दानप्रतिष्ठासंसिद्ध्यर्थंदक्षिणांहिरण्यमग्निदैवतंअमुकगोत्रायामुकशर्मणेब्राह्मणायतुभ्यम

अमुकगोत्र अमुकशर्म्मा ब्राह्मणकुं मैं तेरेकुं देता हूं ऐसा बोलके ब्राह्मणके हाथमें जल डालना। पीछे स्वस्तीति ऐसा वचन ब्राह्मण बोले पश्चात् हाथमें यजमान सुवर्णकी दक्षिणा लेके अमुकगोत्र अमुकशर्मा

ब्राह्मणकुं या जो अग्निदेवता जिसीको ऐसी सुवर्णदक्षिणा तुभ्यं नाम तेरेकुं मैं देता हूं स्वस्तीति ब्राह्मण बोले ॥ अश्वायनमः अश्वकुं नमस्कार करना ब्राह्मणकुं नमस्कार करना ऐसा बोलके घोडेका मुख पूजना गंधाक्षत देना । पीछे कुश तिल जल हाथमें लेना अद्यामुकगोत्र असुकप्रेतको प्रेतयोनि छूटनेके वास्ते और यममार्गमें ऊंची नीची जमीनका दुःख दूर होनेके ताईं भूमिपर सुखसे अश्वारूढ होके चालनेके अर्थ यो

हंसंप्रददे । स्वस्तीतिप्रतिवचनं ॥ अश्वायनमः ॥ ब्राह्मणायनमः ॥ इत्यश्वमुखंसंपूज्य ॥ अद्यामुकगोत्रस्याऽमुकप्रेतस्योच्चावचदुर्गंभूमिसंतरणकामः अमुमश्वंसूर्यदैवतममुकगोत्रा याऽमुकशर्मणेब्राह्मणायतुभ्यमहंसंप्रददे ॥ स्वस्तीतिप्रतिवचनं॥अद्यकृतैतदश्वदानप्रतिष्ठासं

जो अश्व है जिसीका सूर्य देवता है सो अमुकगोत्र अमुकशर्म्मा ब्राह्मण जो तू है सो तेरेकुं मैं यो अश्वदान देता हूं ऐसा बोलके संकल्पका जल ब्राह्मणके हाथमें डालना पीछे स्वस्तीति ब्राह्मण बोले पश्चात् यजमान अपने हाथमें सुवर्णकी दक्षिणा जल लेके ऐसा बोले अद्यकृत यो अश्वदान जिसीकी प्रतिष्ठा संसिद्ध

होनेके वास्ते अमुकगोत्र अमुकशर्मा ब्राह्मणकुं मैं स्वर्णदक्षिणा देता हूं ऐसा बोलके ब्राह्मणके हाथमें दक्षिणा देना परंतु और कुछ प्रेतके भोगे हुये वस्त्र अलंकार कांस्यपात्रादि है सोभी प्रेतके निमित्त देना प्रेतश्राद्धके जिमनेवाले ब्राह्मणकुं ॥ बृहस्पतिजी कहते हैं एकादशकी शय्या और अलंकार वस्त्रादि और पिताका

सिद्ध्यर्थंदक्षिणांहिरण्यमग्निदैवतं अमुकगोत्रायामुकशर्मणेब्राह्मणायतुभ्यमहंसंप्रददे । अन्यदपिप्रेतभुक्तवस्त्रालंकारादिकंकांस्यपात्रादिकंप्रेतश्राद्धभोक्त्रेनिवेदयेत् ॥ तथाचबृहस्पतिः ॥ शय्यालंकारवस्त्राद्यंपितुर्यद्वाहनायुधम् ॥ गंधमाल्यैःसमभ्यर्च्य श्राद्धभोक्त्रेप्रदापयेत् ॥ अथवर्षासनंदद्यात् ॥ अद्येत्यादिअमुकप्रेतअद्यारभ्यमरणदिनपर्यंतंदशदिवसन्यूनसंवत्सर

वाहन और आयुध इनोंकुं गंधादिक करके पूजके पिताके एकादशाहश्राद्धके दिन पितृभोजन करनेवाले ब्राह्मणकुं देना अथ नाम और वर्षासन प्रेतके निमित्त देना । हस्ते मोटक तिल जल लेके अद्येत्यादि बोलके

अमुकगोत्र अमुकप्रेतकुं अद्यारंभ मरणदिनपर्य्यंत दशदिन न्यूनसंवत्सरपर्य्यंत भोगनेके अन्नपानादि व्यंजन तांबूल तथा इनोंके मोलका द्रव्य वर्षासन वर्षपर्य्यंत भोगनेरूप वस्तु अमुकगोत्र अमुक ब्राह्मण तू है सो तेरेकुं मैं देता हूं ऐसा बोलके द्रव्य देना। पीछे दानप्रतिष्ठा सिद्धिकी दक्षिणा देना पीछे प्रेतके निमित्त वर्ष-

भोग्यान्नपानादिव्यंजनताम्बूलतन्मूल्यापकल्पितंद्रव्यंवा वर्षासनत्वेन यथानामगोत्राय ब्राह्मणायदातुमहमुत्सृजे ॥ दक्षिणांच ॥ ततः प्रेतोद्देशेनान्नंदेयं ततः अवमभाजनंभोजनभाजनान्नंपरिवेष्य ॥ कांस्यपात्रताम्रपात्रपित्तलपात्रादिकंचदद्यात् ॥ ततः सव्येनगंधादिनाब्राह्मणमभ्यर्च्य ॥ अद्याशौचांतद्वितीयेऽह्निअमुकगोत्रामुकप्रेतइदमर्चनादिकंमयादीयते

दिनका अन्न ब्राह्मणकुं देना ॥ पश्चात् प्रेतके जीमनके वास्ते भोजनपात्रमें अन्न विशेषताकरके परोसके कांस्यपात्र ताम्रपात्र पित्तलपात्र रजतपात्र स्वर्णपात्र इनोंसे आदि लेके और कोई पात्र देना होवे तो हाथमें कुश तिल जल लेके अद्येत्यादि बोलके अमुकगोत्र अमुकप्रेतकुं वर्षपर्यंत पारलौकिक सुखप्राप्त्यर्थ अमुक-

गोत्र अमुकशर्मा ब्राह्मण जो तू है सो तेरेकुं मैं देता हूं ऐसा बोलके ब्राह्मणकुं देना ब्राह्मण स्वस्तीति वचन बोले पश्चात् सव्य होके गंधादिकोंसे ब्राह्मणकुं पूजके पश्चात् हाथमें जल तिल कुशा लेके अद्येत्यादि बोलके एकादशके दिन अमुकगोत्र अमुकप्रेत तेरेकुं ये जो अर्चनादिक हम देते हैं सो तेरेकुं प्राप्त होवो ये जो देना है सो द्विगुण वल देई हुयोडी दर्भा और जलसे दद्यात् नाम देना। पश्चात् अपसव्य होके दक्षि-

तवोपतिष्ठताम् ॥ द्विगुणभुग्नकुशजलैर्दद्यात् ॥ ततोऽपसव्यं दक्षिणामुखः पातितवामजानुः ॥ अपहतासुरारक्षा ँ सिवेदिषदः इतिवामावर्त्ततिलान्विकीर्य्य ॥ अद्यामुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य प्रेतत्वविमुक्तिकांक्षया एकादशाहश्राद्धे एतानिजलक्षीरदधिघृततंदुलसर्षपकु

णमुख होके वामा गोडा मोडके बैठना पीछे अपहता सुरारक्षा ँ सिवेदिषदः यो मंत्र बोलके वाम हाथकी तरफसे तिल वखेरना पीछे हाथमें कुशा जल तिल लेके अद्यामुकगोत्र अमुकप्रेतका प्रेतपना छूटनेके अर्थ स्वर्गादि उत्तम लोक प्राप्त होनेकी वांच्छा करके एकादशाहश्राद्धे ये जो जल, क्षीर, दधि, घृत, तंदुल, सर्षप कुश पुष्पाणि ये जो मैं तेरेकुं देता हूं सो प्राप्त होवो ऐसा बोलना॥ परंतु ये जो अधिक फल मंत्र

बोलना ॥ हे प्रेत तुम इस लोककुं त्यागके परम गतिकुं प्राप्त हुवा है ऐसा बोलके हाथमें तिल जल कुशा लेके अद्यामुकगोत्र अमुक प्रेतका एकादशाह श्राद्धमें जो ये गंध, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, तांबूल, यज्ञोपवीत, आच्छादनादिक जो है सो मैं देता हूं सो तेरेकुं प्राप्त होवो ऐसा बोलके ब्राह्मणरूप प्रेतके हाथमें

शान्पुष्पाणितेमयादीयंतेतवोपतिष्ठंताम् ॥ एतच्चाधिकफलमंत्रः ॥ इहलोकंपरित्यज्यगतोसिपरमांगतिम् ॥ अमुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्यैकादशाहश्राद्धे एतानिगंधाक्षतपुष्पधूपदीपनैवेद्यताम्बूलयज्ञोपवीताच्छादनानितेमयादीयंतेतवोपंतिष्ठंतां ॥ ततः सव्येनाचम्य प्रश्नंविधायान्नंब्राह्मणायदेयं ॥ ततः पत्रावलींतिक्तमधुराम्लान्नव्यंजनादिहविष्यान्नमधुमयपूर्णांकृ

जल डालना पश्चात् सव्य करना आचमन करना पीछे ब्राह्मणकुं पूछना आपकुं भोजन देता हूं पीछे पत्रावली तिक्त मधुर अम्ल अन्न व्यंजनादि हविष्यान्न मीठा और मीठे पदार्थोंकरके पूर्ण पत्रावली देखके

अपने हाथसे पूर्व करके व्यस्तपाणि नाम वामे हाथके ऊपर दक्षिणहाथ रखना पीछे दोनों हाथोंसे प्रेत-ब्राह्मणकी पत्रावलीके पश्चिमभागके वाम हाथ लगाना और वामे हाथके ऊपर कर दक्षिणहाथसे प्रेतब्राह्म-णकी पत्रावलीकुं पूर्वभागमें स्पर्श रखना पीछे मंत्र ये बोलने । ॐ पृथिवीते पात्रं० ॥ इदं विष्णु० ॥ ये

त्वाऽव्यस्तपाणिरालभ्य ॥ ॐ पृथिवीतेपात्रंद्यौरपिधानंब्राह्मणस्यमुखेअमृतेअमृतंजुहोमि स्वाहा ॥ इदंविष्णुर्विचक्रमेत्रेधानिदधेपदं । समूढमस्यपा ᳪ सुरेस्वाहा ॥ इतिजपन्विचिंत्य ब्राह्मणांगुष्ठंगृहीत्वा ॥ ततोऽपसव्यम् ॥ इदमन्नंइमाआपः इदमाज्यं इदमैक्षवं एतत्सर्वं

मंत्र बोलके वाम हाथ तो पत्रावलीकुं लगाया रखना और दक्षिणहाथ अलग करके अपने दक्षिणहाथसे प्रेतब्राह्मणका दक्षिणहस्तका अंगुष्ठ पकडके पीछे अपसव्य होके बोलना ब्राह्मणका अंगुष्ठ लगाते जाना और ऐसा बोलना इदं अन्नं ऐसा बोलके ब्राह्मणका अंगूठा लगाना अन्नके इमा आपः ऐसा बोलके जलके

देना ये केचित्का मत है परंतु बोहोत ऋषियोंके यों मत है कि सपिंडिके पूर्व विकिर नहीं देना और कात्यायनमुनि कहता है प्रेतश्राद्धमें इतनी वस्तु करना निषेध है एक तो विकिरः १ एक तृप्तिशब्दः २ और शर्म्मा वर्मा गुप्तः ३ आमान्नः ४ विसर्जनं ५ स्वधा ६ ॐकारः ७ ये सप्त वार्त्ता प्रेतश्राद्धमें वर्जित हैं।

इतिकेचित् ॥ बहूनांसंमतंस्थानं यथाहकात्यायनः॥ विकिरस्तृप्तिशब्दश्चशर्मआमविसर्जनं॥ स्वधास्थःप्रणवोजाप्यंप्रेतश्राद्धे विवर्ज्जयेत् ॥ इतिप्रथमषोडशेनिषेधः ॥ नोद्वितीयादौ ॥ ततः सव्यंकृत्वाचम्य हरिंस्मृत्वा ॥ ततोऽपसव्यंकृत्वा ब्राह्मणायजलगंडूषंदत्वा स्वदितिब्राह्मणंपृच्छेत् स्वादूनीतितेनोक्ते पिंडदानमहंकरिष्ये ॥ कुरुष्व ॥ उच्छिष्टसन्निधौहस्ता

इसीवास्ते विकिर नहीं देना विकिर तो पितृगणश्राद्धमें देना प्रथम षोडशी द्वितीयषोडशी तृतीयषोडशीमें विकिर वर्ज्या है सो नहीं करना पश्चात् सव्य करके आचमन करना नारायणका स्मरण करना पुनः फिर अपसव्य होना ब्राह्मणकुं जलका गंडूष नाम कुरला करवाना अच्छी तरह आप जीमे ऐसा ब्राह्मणकुं यजमान

पूछे पीछे ब्राह्मण बोले अच्छी तरह जिमा हुं पीछे यजमान ब्राह्मणकुं पूछे पिंड मैं करता हूं अच्छा कर पितृब्राह्मणकी उच्छिष्टके पास आधे हस्तप्रमाण प्रेतकी वेदी दक्षिणदिशामें कुछ नीची चार अंगुल ऊंची गौरमृत्तिकाकी बनाके हाथमें कुशा लेके अपहता सुरा यो मंत्र बोलके दक्षिणहाथसे दर्भा मूलकनेसे पकडनी वामहस्तसे दर्भा ऊपरसे पकडके वेदीके ऊपर अष्टअंगुलप्रमाण प्रादेशका जिसी मुजब रेखा करना पीछे

घंपरिमितांवेदींदक्षिणप्लवांचतुरंगुलमुच्छ्रितांनिर्माय ॥ वामहस्तेकुशंगृहीत्वा अपहतासुरारक्षांर्ठसिवेदिषदः इतिवेदिकास्थाने रेखांकृत्वारेखोपरि येरूपाणीतिमंत्रेणोल्मुकं भ्रामयित्वारेखायादक्षिणतोनिदध्यात् ॥ च्छिन्नमूलकुशास्तरणंसव्येन देवताभ्यइतिजपः ॥

दर्भाकुं ईशानकोणमें डालना पश्चात् ये रूपाणीति मंत्र बोलके जलता अंगिरा नाम टमीटा भ्रमायके रेखाके चोगद पीछे देवीके दक्षिणभागमें डालना पीछे दर्भाद्वय लेके मूलकी जगहसे छेदन करके दक्षिणमें दर्भाका अग्रभाग करे वेदीकी रेखापे रखना सव्य होके पीछे देवताभ्यः यो मंत्र त्रयः ३ वार जपना । पश्चात्

अपसव्य होना मोटक तिल जल हाथमें लेके अमुकगोत्र अमुकप्रेतका प्रेतत्वभाव छूटनेकी कांक्षा करके एकादशाहश्राद्धमें पिंडासन दर्भाके मध्ये यो जो अवनेजनजल मैं देता हुं सो तेरेकुं प्राप्त होवो ऐसा बोलके अर्घपात्रका जल आधा कुशापे डालना अर्द्धा जल डोनेमें रखना इसी श्राद्धमें शेषान्न है जिसमें व्यंजन तिलजलसहित अन्न सर्व वस्तु मिलायके बेलके फलके प्रमाण पिंड बनाना पीछे हाथमें मोटक तिल जल

ततोऽपसव्यं ॥ अमुकगोत्रस्याऽमुकप्रेतस्यप्रेतत्वविमुक्तिपूर्वकांक्षया एकादशाहश्राद्धेइदं पिंडासनं अवनेजनजलंतेनिक्ष्वतेमयादीयतेतवोपतिष्ठताम्॥ अत्रश्राद्धेशेषान्नंसर्वव्यंजनतिलजलसहितान्नंएकीकृत्यबिल्वोपमंपिंडंनिर्माय॥अद्यामुकगोत्रामुकप्रेतएकादशाहश्राद्धे एष पिंडस्तेमयादीयतेतवोपतिष्ठताम् ॥ आस्तृतदर्भमूलेनकरंप्रोक्ष्य सव्यंकृत्वाचम्य हरिंस्मृ

पिंड लेके ऐसा बोलना अद्यामुकगोत्र अमुकप्रेत एकादशाह श्राद्धमें यो पिंड मैं देता हूं सो तेरेकुं प्राप्त होवो ऐसा बोलके अंगुष्ठद्वारा पिडकुं दर्भाके ऊपर रखना पीछे हाथके जो अन्न लगा रह गया है सो पिंडके नीचे दर्भा है तिससे पूंछना पीछे सव्यं कृत्वा आचमन करके हरिका स्मरण करना पुनः फिर अपसव्य

करना पीछे जल तिल लेके अत्र प्रेतमादयध्वं यहां प्रेत अंगीकार करो ऐसा बोलना पीछे श्राद्धकर्त्ता यजमान उत्तर दिशाकी तरफ मुख करके जरा श्वासकुं बंध करके फिर पीछे दक्षिणकी तरफ मुख करके प्रेतके स्वरूपका ध्यान करके अमीमदंतेति मंत्र बोलके पिंडके ऊपर श्वास छोडके जलाक्षत डालना पीछे

त्वा पुनः अपसव्यं ॥ जलाक्षतंस्पृष्ट्वा अत्रप्रेतमादयध्वं । इतिपठित्वा उदङ्मुखीभूय मनाक्श्वासंनियम्य प्रेतंभास्वरमूर्तिंध्यायेत् अमीमदंतेतिपठित्वा पिंडोपरिजलाक्षतंक्षिप्त्वा ॥ अद्यामुकगोत्रामुकप्रेतइदंप्रत्यवनेजनजलंतेमयादीयतेतवोपतिष्ठताम् ॥ नीवींविस्रंसयेत् एतत्तेप्रेतवासः पिंडार्चनंकारयेत् ॥ नमोवः प्रेतरसायेतिपिंडोपरिसूत्रंदद्यात् ॥ ततस्तू

अर्घपात्र हाथमें लेके अद्यामुकगोत्र अमुकप्रेत यो जो प्रत्यवनेजन जल पिंडके ऊपर मैं देता हूं सो तेरेकुं प्राप्त होवो पश्चात् धोतीकी मोडी ढीली करना जो कुछ तिलाक्षतदर्भा मोडीमें टांगा हो सो सर्व निकालके अलग रखना पीछे यो जो वस्त्र है सो पिंडपै रखना पिंडका पूजन करना नमो वः प्रेतरसा ये मंत्र बोलके पिंडके ऊपर सूत्र देना पश्चात् तूष्णीं होके पिंडपैं गंध, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, तांबूलादिक पिंडके

ऊपर रखना । पीछे हस्ते जल तिल कुशा लेके अद्याशौचांतद्वितीयेह्नि अमुकगोत्र अमुकप्रेत ये जो धूप दीप गंध तांबूलादि मया दीयंते मैं जो देता हूं. सो तेरेकुं प्राप्त होवो पीछे ब्राह्मणके हाथमें जल देना जलमें जो देवता स्थित हैं जो सर्व जलमें स्थित है सो जल ब्राह्मणके हाथमें डाला है सो जल आपके हे प्रेत

च्छींगंधाक्षतपुष्पधूपदीपनैवेद्यतांबूलादिकंपिंडोपरि दद्यात्॥अद्याशौचांतद्वितीयेऽह्निअमुक गोत्रामुकप्रेतएतानिगंधपुष्पधूपदीपादीनितेमयादीयंतेतवोपतिष्ठताम् ॥ ततोब्राह्मणकरे जलदानं ॥ अपांमध्येस्थितादेवाः सर्वमप्सुप्रतिष्ठिताः ॥ ब्राह्मणस्यकरेन्यस्ताः शिवाआपो भवंतुते ॥ लक्ष्मीर्वसतिपुष्पेष्वित्यादिपठित्वा सदास्तुतेनोक्ते ॥ ततोऽक्षय्योदकंच ॥ अद्याशौचांतद्वितीयेह्नि अमुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्यैकादशाहश्राद्धेयद्दत्तमन्नपानादिकंतदक्षय्यम

आनंद करो, लक्ष्मी देवी पुष्पमें बसती है सो तेरेकुं आनंद करो ये यजमानकी उक्ति है पश्चात् प्रेतकुं अक्षय्य उदक देना हस्ते जल लेके अद्याशौचांतद्वितीयेह्नि अमुकगोत्र अमुकप्रेतकुं एकादशके श्राद्धमें जो अन्नपानादिक हमने दिया है सो तेरेकुं अक्षय्य होके प्राप्त होवो पश्चात् ऊर्ज्ज देना पय नाम दुग्ध करके,

ऊर्ध्वं वहंति इति यो मंत्र बोलके पिंडके ऊपर दुग्धकी धारा देनी उत्तरसे लेके दक्षिणतक पश्चात् नीचे होके पिंडकुं सूंघके उठा लेना फिर पीछे रख देना पीछे सव्य होके वेदीके ऊपर शंख, चक्र लिखना पीछे शंख चक्रकी पूजा करनी और वसंतादि षट्ऋतु हैं तिनका पूजन करना पीछे नमस्कार करना पिंडके

स्तुतेमयादीयतेतवोपतिष्ठताम् ॥ ततः ॥ऊर्ध्वंदद्यात्॥ ऊर्ध्वंवहंतीतिमंत्रेण ततोनम्रीभूयापिंडमाघ्रायउत्थाप्य ॥ ततःसव्येनवेदिकायांशंखचक्रमुल्लिख्यतत्पूजनंचकुर्य्यात् ॥ वसंतादिषट्ऋतून्पूजयेन्नमस्करोति ॥ पिंडाधारान्कुशानुल्मुकंचवह्नौ क्षिपेत्॥ अर्घपात्रंउत्तानंकृत्वादक्षिणांदद्यात्॥ अद्यामुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्यकृतैतदेकादशाहश्राद्धप्रतिष्ठार्थं दक्षिणां

नीचे जो द्विगुण दर्भा है सो निकालके साथ उल्मुक लेके अग्निमें डाल देना पीछे अर्घपात्रकुं सीधा करके ब्राह्मणकुं दक्षिणा देना अद्यामुकगोत्र अमुकप्रेतका प्रेतपना दूर होनेके वास्ते किया जो एकादशाहश्राद्ध

तिसकी प्रतिष्ठाकी सिद्धि होनेके अर्थ रजतदक्षिणा चंद्रदैवता अमुकगोत्र अमुकशर्म्मा जो तू ब्राह्मण हैं सो तुझे देता हूं ऐसा बोलके हे प्रेत तेरेकुं प्राप्त होवो दर्भा दक्षिणा ब्राह्मणके हाथमें देना स्वस्तीति पीछे वचन ब्राह्मण बोले पश्चात् श्राद्धकर्त्ता यजमान ब्राह्मणके चरणोंको हाथ लगाके नमस्कार है सो करे पीछे प्रेत·

रजतंचंद्रदैवतं अमुकगोत्रायाऽमुकशर्मणेब्राह्मणायतुभ्यमहंसंप्रददे। स्वस्तीतिप्रतिवचनं ॥ ततःश्राद्धकर्त्ताद्विजचरणौसंपाद्यद्विजनमस्कारंकुर्य्यात् ॥ द्विजंविसृज्यजलपात्रंगृहीत्वा ॥ वाजेवाजेइतिप्रदक्षिणीकृत्य ॥ आमावाजस्येतिविसर्ज्जनं ॥ अष्टौपदान्यनुव्रज्यप्रदक्षिणी कृत्याभिधायप्रणम्य ॥ देवताभ्यःपितृभ्यश्चेतिपठित्वा ॥ पाणिभ्यांश्राद्धीयदीपनिर्वा

ब्राह्मणकुं विसृज्य विसर्जन करनेके वास्ते जलपात्र हाथमें लेके ब्राह्मणके परिक्रमाके माफिक त्रयः ३ वार पानीका चक्र करना चोगडद आमावाजस्य मंत्र बोलके विसर्ज्जन करना अष्टपांवडोंतक ब्राह्मणके लार जाके परिक्रमा करके नमस्कार करना देवताभ्यः पितृभ्यश्चेति मंत्र वारत्रय बोलना पीछे द्विजासनके

पास तिलतैलका दीपक है तिसीकुं दोनों हाथोंसे ऊबका देके बुझा देना पीछे दोनों हाथ पग प्रक्षालन करके आचमन करना पीछे द्विजभोजनके पिछाडी ब्राह्मणकुं शय्याके ऊपर दो घटिका विश्राम करवाना॥ और सर्व अलंकारोंकरके शोभित जो मंडप तिसीकुं संकल्प करके पीछे यजमान द्विज है सो अपने घरकुं

पणं ॥ पाणिद्वयंप्रक्षाल्याचम्य ॥ ततो द्विजभोजनांतेशय्यायांमुहूर्त्तंविश्रमेत् ॥ सकलालंकारैरलंकृतं मंडपंसंकल्पयित्वा गृहंप्रविशेत् ॥ क्षत्रियस्त्वाशौचांतदिनेरौप्यंस्वर्णं महार्हाणिरत्नानिगांवाहनानिदासींदासांश्चसुमहान्तिवेश्मानिश्रेष्ठभूषणानिप्रेतहितमुद्दिश्य गो भूहिरण्यादिकंदद्यात् ॥ पूर्वोक्तवाक्येन ॥ अथदानविधिः ॥ दंतैर्गजंचापितुरंगकेशैर्गांचा

जावे जो क्षत्रिय होवे तो आशौचांतदिने नाम एकादशाहदिनमें रूपा सोना अच्छे अच्छे रत्न और गौ और वाहन दासी दास बडे बडे मकान श्रेष्ठ आभूषण प्रेतके हित करके जमीन गौ कपिला सोना लगा हुवा रत्न ब्राह्मणकुं अपनी श्रद्धा माफक पूर्व कहे जो वचन बोलके देना ॥ अथ नाम याके अनंतर दान कौन विधिसे करने सो कहते हैं हाथीका दान करना होवे तो दांत पकडके करना घोडेका दान करना होवे तो

माथेके केश पकडकर करना गौका दान करना होवे तो पुच्छ पकडके करना महिषी नाम भैंसका दान करना होवे तो दक्षिणशृंग पकडके करना और भेड बकरीका दान करना होवे तो हांचल पकडके करना उष्ट्रका दान करना होवे तो गला पकडके करना और खड्ग नाम तलवारका दान करना होवे तो अणी पकडके करना कौचचक्रका दान करे तो मध्यभाग पकडके करना दासी दान करनी होवे तब दासीके

पिपुच्छैर्महिषींतुशृंगे ॥ अथाविकांचस्तननाभिमध्येउष्ट्रंगलैश्चापिवृषंचअंसैः ॥ खड्गंतु चाग्रैस्तवचक्रमध्यैः केशैस्तुदासीहृदयेनपत्नीं॥ दानस्यप्रोक्ताविधियुक्तिरेषा विद्वज्जनेनैवसुयुक्तिकेन ॥ ब्राह्मणेभ्योऽन्यदपिप्रेतमुद्दिश्यदद्यात् ॥ ततःउदकुंभदानं ॥ कृतापसव्यो

मस्तकके केश पकडके संकल्प बोलके देना और अपनी पत्नी नाम स्त्रीका दान करे तो हृदयको पकडके संकल्प करके देना सो दानकी विधि देनेकी या है सो विद्वान् लोक युक्तिकुं जानते हैं तिसीकुं दान करवानेकी या विधि है दान सुपात्रकुं देना और प्रेतके निमित्त और कुछ देना होवे सो ब्राह्मणोंकुं देना परंतु

अब जलके घटदान कहते हैं। यजमान अपसव्य होके दक्षिणाभिमुख बैठे वामा गोडा मोडके स्वहस्ते मोटक तिल जल लेके बोले अद्यामुकगोत्र अमुकप्रेत तेरी तृप्ति होनेके वास्ते यो प्रशांतोदककुंभ तेरेकुं हम देते हैं तुझे प्राप्त होवो पाठांतरमें लिखा है दशः १० दशः १० द्विक ४० शतत्रयः ३०० सगले ३६०।

दक्षिणाभिमुखःपातितवामजानुः॥ अद्यामुकगोत्रपितरमुकप्रेतइदमासनंते मयादीयतेतवोप तिष्ठतां ॥ अद्यामुकगोत्रामुकप्रेतएषप्रशांतोदकुंभस्तेमयादीयतेतवोपतिष्ठतां ॥ पाठां तरेपि ॥ दशादशाब्दिकश्राद्धशतत्रयकौशिकाभिःसोदकुंभैस्तिलयुतैर्दद्यात् ॥ अद्याशौ चांतद्वितीयेऽह्निअमुकगोत्रस्याऽमुकप्रेतस्याक्षयस्वर्गाद्युत्तमलोकवासकामनया आब्दिकप

कुशासहित जलसहित तिलवस्त्रसहित देना जलतिल हाथमें लेके अद्याशौचतांद्वितीयेह्नि अमुकगोत्र असुकप्रेतकुं अक्षय्यस्वर्ग प्राप्त वांछा करके और उत्तम लोक प्राप्त होनेकी कामना करके वर्षपर्यंत ये

जो तीन सौ साठ घट जल तिल कुशा वस्त्र अक्षतों सहित महान् दुःखशांति होनेके अर्थ मैं जो देता हूं सो तेरेकुं प्राप्त होवो ऐसा बोलके तीनसौ साठ घट आमान्नसहित ब्राह्मणोंकुं देना पीछे श्रद्धामाफक दक्षिणा ब्राह्मणकुं देना घटदानकी प्रतिष्ठा सिद्ध होनेके अर्थ इति । एकादशाहके दिन प्रेतकी मुक्तिके अर्थ नारायणबलीभी करना ॥ इति एकादशाहविधिः समाप्तः ॥ अथ याके अनंतर द्वादशके दिन षोडश मासिक

यंतमिदंषष्ट्यधिकशतत्रयकौशिकघटसहितंजलतिलाक्षतैर्युतंमहादुःखोपशांत्यर्थंतेमयादीयतेतवोपतिष्ठतां ॥ ततोयथाशक्तिदक्षिणांदद्यात् ॥ इति एकादशाहविधिः समाप्तः ॥ अथ मासिकश्राद्धप्रयोगः ॥ सपिंडीकरणसहितं ॥ एवंप्रथममासित्रिपाक्षिकद्विमासिकत्रिमासिक

श्राद्ध करना सपिंडीसे पूर्व मासिक श्राद्ध करना अर्थात् सपिंडी किये पीछे प्रेतशब्द नहीं बोला जाता है इसवास्ते सपिंडीके पूर्व करना श्रेष्ठ है ॥ कदाचित् वर्षदिनसे सपिंडी करेतो पूर्व पूर्व मासिकश्राद्ध अपने अपने कालपै करना अर्थात् सपिंडी या पीछे मासिक नहीं होता है या पक्ष मुख्य है परंतु सपिंडीकरण

सहित षोडश गिनना मासिक त्रिपाक्षिक इत्यादि षोडश श्राद्धपूर्व कहि जो विधि उसी विधिसे ये उत्तम षोडशी श्राद्ध है सो करना पात्रिक करे तब तो प्रत्यक्ष ब्राह्मण श्राद्धमें बैठाने अपात्रिक करे तो दर्भाकी चटरूप ब्राह्मण श्राद्धमें बनाना और द्वादशके दिन षोडश श्राद्ध करना सो देवलमुनि कहते हैं द्वादश १२

चतुर्थमासिक पंचममासिक ऊनषाण्मासिक षाण्मासिक सप्तममासिक अष्टममासिक नवममासिक दशममासिक एकादशमासिक ऊनाब्दिक आब्दिक इत्येतानिद्वादशाहपूर्वकमाब्दिकपर्यंतानि षोडशश्राद्धानि पूर्वोक्तविधिनाकुर्यादेकोद्दिष्टवत् ॥ तथाचदेवलः ॥ द्वादशप्रतिमास्यानिद्वादशाहेसमाचरेत् ॥ त्रिपाक्षिकंचकर्त्तव्यमूनषाण्मासिकंतथा ॥ १ ॥ षाण्मासिकमाब्दिकंचऊनाब्दिकमथापिवा ॥ सपिंडीकरणंचेतिप्रेतश्राद्धानिषोडश॥२॥यद्येक

श्राद्ध तो वर्षदिनका और एकदेढ मासको एक ऊनषाण्मासको तिसकुं छमाइको बोलते हैं एक षाण्मासको एक ऊनवार्षिकको एक बरसीको एक सपिंडी ये षोडश प्रेतका श्राद्ध है जब एक दिनमें षोडश श्राद्ध

करना होवे तब ऐसा वचन बोलना अमुकगोत्र अमुकप्रेतका मासिक एकोद्दिष्ट मैं करूंगा एकोद्दिष्टकी माफिक करना सो याज्ञवल्क्यमुनिने कहा है। एकोद्दिष्टश्राद्धमें विश्वेदेवता नहीं होता है और एक अर्घपात्र होता है एक पवित्रा होता है आवाहन नहीं होता है अग्नौकरण नहीं होता है अपसव्यतुल्य एकोद्दिष्ट

स्मिन्नहनिद्वादशप्रतिमासकल्पनातदैवंवाक्यं ॥ अमुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्यैकोद्दिष्टमहंकारिष्ये ॥ एकोद्दिष्टवत्कर्त्तव्यं ॥ तथाचयाज्ञवल्क्यः एकोद्दिष्टंदैवहीनमेकार्घैकपवित्रकं ॥ आवाहनाग्नौकरणरहितंह्यपसव्यवत् ॥१॥ अथप्रथममासिकश्राद्धं ॥ षोडशश्राद्धानिसपिंडीकरणात्पूर्वमेवकर्त्तव्यानीतिशास्त्रकाराणांवचनम् ॥ अन्यथाकरणेदोषः ॥ तत्रश्राद्धपूर्वदिने

श्राद्ध है। प्रथम मासिकसे आदि लेके षोडश श्राद्ध सपिंडीके प्रथम हैं ये बहोत ऋषियोंका मत है जो कोई शास्त्रविरुद्ध प्रेतश्राद्ध करेगा तो महादोष है। सो सपिंडीसे पूर्वही करना श्रेष्ठ है ॥ अब क्रम कहते हैं श्राद्धके पूर्व दिन आमिषरहित एक वार भोजन करके रात्रिके समयमें ब्राह्मणोंका निमंत्रण करना श्राद्धमें

आनेके वास्ते घरमें गोबरका चौका लगाके वहां दक्षिणदिशाकी प्रवणभूमिमें होय जैसी भूमिपै गोबर लेपके आसन बिछाके ब्राह्मणकुं उत्तरमुख बैठाना और यजमान दक्षिणतरफ मुख करके वामा गोडा मोडके बैठे पश्चात् अपने हाथमें तांबूल तिल कुशा लेके ऐसा बोले या रात्रिमें अमुकगोत्र अमुकप्रेतरूप ब्राह्मण

निरामिषमेकवारं भुक्त्वारात्रौगृहंगोमयोदकेनोपलिप्यदक्षिणप्रवणभूमौब्राह्मणमुदङ्मुखमुपवेश्य कृतापसव्यो दक्षिणाभिमुखः पातितवामजानुस्तांबूलतिलकुशान्यादाय ॥ अस्यांरात्रौअमुकगोत्रामुकप्रेतरूपब्राह्मणंश्वःषोडशश्राद्धांतर्गद्वादशाहे प्रथमादिमासिकश्राद्धेभवंतं ब्राह्मणमभिमंत्रये ॥ आमंत्रितोस्मि ॥ अक्रोधनैरितिपठेत् । तथास्त्वितितेनोक्ते ॥ ततःप्रा

जो आप हो सो प्रातःकाल षोडशश्राद्धांतर्गत प्रथम मासिकश्राद्धके निमित्त आपकुं अभिमंत्रण निमंत्रण करते हैं सो ऐसा बोलके ब्राह्मणके हाथमें तांबूलादि देना पछि आमंत्रितोस्मीति ऐसे ब्राह्मण बोले प्रातःकालका निमंत्रण हम अंगीकार किया है श्राद्धमें आवेंगे पीछे अक्रोधनैः ऐसा बोलना यजमानकुं पीछे ब्राह्मण

बोले क्रोध नहीं करेंगे पवित्र रहेंगे इत्यादि वचन ब्राह्मण बोले जो यजमान कहेगा सो करेंगे ऐसे श्राद्धोंमें जितने ब्राह्मण चाहिये तिनोंका निमंत्रण श्राद्धकी पूर्वरात्रिमें करना पीछे प्रातःकालमें दांतन करके पीछे ताम्रके पात्रमें तिलोंका उबटना है सो करना पछि दिनके मध्यभागमें अच्छे जलसे स्नान करना पीछे श्वेत

तद्दंतधावनादिकंसर्वंकृत्वा ॥ ताम्रपात्रस्थंतिलोद्वर्त्तनंकृत्वामध्याह्नेसुजलेस्नातः शुचिर्भूत्वा शुक्लद्विवासाः । गोमयोपलिप्तायांभूमौपुष्पाक्षतदर्भेषुतिष्ठन् । सुस्वागतमितिपृच्छेत् ॥ सुस्वागतमितितेनोक्ते ॥ प्रमादाद्यदासायंनभवेत् ॥ तदाप्रातरेवकर्त्तव्यमामंत्रणं ॥ पादार्घं

वस्त्रद्वय धोती अंगोछा बांधके श्राद्धकी भूमि गोमयलिप्त है तहां जाना पुष्पाक्षत दर्भाके ऊपर बैठनेके वास्ते जाना तब यजमान हाथ जोडके सुस्वागतं आपका आना श्रेष्ठ है ब्राह्मण बोले हम तो सुखसे आये हैं कदाचित् ब्राह्मणका निमंत्रण कोई कार्य आवश्यकता करके रात्रिमें नहीं होवे तौ प्रातःकाल निमंत्रण

करना पादयोः पाद्यार्घं ब्राह्मणके चरणमें पाद्य जल देना हाथोंमें अर्घ देना। अद्यामुकगोत्र अमुकप्रेत इसी प्रथममासिकश्राद्धमें या जो पादार्घ तेरेकुं मैं देता हुं सो तुमकुं प्राप्त होवो ऐसा बोलके यजमान है सो ब्राह्मणके चरणोंके नीचे दक्षिणमें अग्रभाग जिनोंका ऐसी दर्भा देनी ऊपर आसन देना पीछे ब्राह्मणकुं बैठा

दद्यात् अमुकगोत्रामुकप्रेतप्रथममासिकश्राद्धेएषपादार्घ्यस्तेमयादीयतेतवोपतिष्ठतां ॥ तत्पादयोस्तलेदक्षिणाग्रान्कुशान्दद्यात् ॥आसनसमीपेतिलतैलेनदीपंप्रज्वाल्यश्राद्धसमाप्ति पर्यंतंदद्यात् ॥ सव्येनाचम्य ॥ ॐ हरिःपुनातु ॐ विष्णुःपुनातु ॐ पुण्डरीकाक्षःपुनातुइति

देना ब्राह्मणका अभाव होवे तो दर्भामय ब्राह्मण आसनपै स्थिर करना पश्चात् प्रेतब्राह्मणके आसनके समीप तिलोंके तेलका दीपक करना श्राद्धसमाप्ति होवे जबतक रहे ऐसो दीपक करना पीछे सव्य होके आचमन करना हरिः पुनातु विष्णुः पुनातु ऐसा बोलना और पुंडरीकाक्षः पुनातु ऐसा

बोलके यजमान अपनी आत्माका प्रोक्षण करे पीछे अपसव्य होके संकल्प करना सुधी दर्भा हाथमें लेके अद्यामुकगोत्र असुकप्रेतका प्रेतभाव दूर होनेके वास्ते स्वर्गादि उत्तम लोकोंकी प्राप्तिकी वांछा करके द्वादशाहे षोडश श्राद्धोंके मध्यका प्रथम मासिक श्राद्ध मैं करूंगा ऐसा सर्व श्राद्धोंमें उसी उसीका वचन

सेकः ॥ अपसव्येनप्रतिज्ञांकुर्य्यात् ॥ ऋजुकुशानादाय ॥ अद्यामुकगोत्रस्याऽमुकप्रेतस्य प्रेतत्वविमुक्तिकांक्षयास्वर्गाद्युत्तमलोकप्राप्तिकामःद्वादशाहेषोडशश्राद्धांतर्गतप्रथममासिक श्राद्धमहंकरिष्ये इतिसर्वत्रवाक्यं ॥ द्वादशमासाभ्यंतरेऽधिकमासेषोडशपदस्थानेसप्तदश प्रयोज्यं ॥ सव्येनाचम्य ॥ गायत्रींजप्त्वा ॥ देवताभ्यःपितृभ्यश्चमहायोगिभ्यएवच ॥ नमः

बोलना और मरणदिनसे लेके द्वादशमासके भीतर अधिकमास कदाचित् आय जावे तो ऐसा बोलना सप्तदश श्राद्धांतर्गत असुकश्राद्ध करेंगे परंतु सव्य होके आचमन करना गायत्री जपना देवतोंकुं नमो नमः पित्रेश्वरोंकुं नमो नमः महायोगेश्वरोंकुं नमो नमः ऐसा त्रय वार बोलना पीछे सव्य होके यजमान आचमन

करे पीछे कर्मपात्रकी स्थापना करे पिछाडी कहा है तिसी माफक और कर्मपात्र किये विना कर्म करना नहीं पश्चात् अपसव्य होके दिग्बंधन करना पूर्व लिखे तुल्य ॥ पश्चात् कुश तिल जल हाथमें लेके अद्या-मुकगोत्र अमुकप्रेतका प्रेतभाव छुटनेकी वांछा करिके और अक्षय्यस्वर्गादिलोक प्राप्त होनेकी कामना

स्वाहायैस्वधायैनित्यमेवनमोनमः ॥ सव्येनकर्मपात्रकरणम् ॥ ततोऽपसव्येनदिग्बंधनं ॥ ततः कुशतिलजलान्गृहीत्वा अद्यामुकप्रेतस्यप्रेतत्वविमुक्तिपूर्वकाक्षयस्वर्गप्राप्तिकामः प्रथममासिकश्राद्धेइदमासनंतेमयादीयतेतवोपतिष्ठतां ॥ पूर्ववत्कल्पितासनंदत्त्वा ॥ आयंतुनः पितरः इतिपठित्वा ॥ हस्तार्घपात्रपुटकेनादाय । शन्नोदेवीरभिष्टयऽआपोभवं

करके प्रथम मासिकश्राद्धमें यो दर्भासन देता हुं सो तेरेकुं प्राप्त होवो पूर्व किया उस माफक आसन देना अपहताऽअसुरारक्षा ५ँसि वेदिषद यो मंत्र बोलके श्राद्धभूमिमें वाम तरफसे लेके दक्षिण तरफतक तिल वखेरना पीछे आयंतुनः पितरः यो मंत्र बोलना पश्चात् पुटकना डोनेमें शन्नोदेवी मंत्र बोलके जल

डालना। तिलोसि यो मंत्र बोलके अर्घपात्रमें तिल डालना॥ श्रीश्च ते मंत्र बोलके अर्घपात्रमें पुष्प अक्षत डालना॥ गंधद्वारा मंत्र बोलके गंध डालना। पवित्रस्थो यो मंत्र बोलके पवित्र डालना पीछे यजमान

तुपीतये। शंय्योरभिस्रवंतुनः॥इतिमंत्रेणजलं। तिलोसिसोमदेवत्योगोसवोदेवनिर्मितः। प्रयत्नमद्भिःस्वधयापितॄन्लोकान्पृणाहिनः॥ स्वधाइतितिलान्॥ श्रीश्चतेलक्ष्मीपत्न्यावहोरात्रेपार्श्वेनक्षत्राणिरूपमश्विनोव्यात्तंइष्णन्निषाणमुंमइषाणसर्वलोकंमयिषाण इतिपुष्पाक्षतांक्षिपेत्॥ गंधद्वारांदुराधर्षामितिगंधं॥ ततःवामहस्तेचार्घपात्रमादाय॥ संपन्नंसुसंपन्नमस्तु॥ पवित्रंभोजनपात्रेदत्त्वा नमोनारायणायेति। यादिव्याआपःपयसासंबभूवुर्य्यांतरिक्षाउतपा

अपने वामहस्तमें अर्घपात्रकुं लेके अभी सुसंपन्न है अर्घपात्र पीछे अर्घपात्रमें जो पवित्र डाला है सो दक्षिणहाथमें लेके प्रेतब्राह्मणकी भोजनपत्रावलीमें रखना पीछे कर्मपात्रका जल दक्षिण हाथमें लेके या दिव्या

मंत्र बोलके जल भोजनपात्रके मध्य डालना । पीछे मोटक तिल जल हाथमें लेना पीछे अद्यामुकगोत्राऽमुकप्रेतका प्रेतभाव छुटनेकी वांछा करके और स्वर्गादि उत्तम लोकोंकी प्राप्तिकी कामना करके द्वादशके दिन षोडश श्राद्धोंके मध्यका प्रथम मासिक श्राद्धमें यो जो हस्तार्घ मैं देता हुं सो तेरेकुं प्राप्त होवो ऐसा

थिवीर्य्याः ॥ हिरण्यवर्णायज्ञियास्तानआपःशिवाःसर्ठःस्योनासुहवाभवंत्वितिपठित्वा । अद्यामुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्यप्रेतत्वविमुक्तिपूर्वकाक्षयस्वर्गाद्युत्तमलोकप्राप्तिकामः द्वादशाहेषोडशश्राद्धांतर्गतप्रथममासिकश्राद्धेएपहस्तार्घस्तेमयादीयतेतवोपतिष्ठताम् । ब्राह्मणवामप्रदेशेप्रेतस्थानमसिइत्यधोमुखंसपवित्रकंस्थापयेत् ॥ दक्षिणादानपर्यंतंनचालयेत् । अद्यामुकगोत्रामुकप्रेतप्रथममासिकश्राद्धेएतानिदधिक्षीरघृततंडुलसर्षपकुशपुष्पाणितेमयादीयंतेतवो

बोलके हस्तोंपै अर्घ देना पश्चात् प्रेतब्राह्मणके वामभागमें पवित्रसहित अर्घपात्र प्रेतस्थानमसि ऐसा बोलके उंधा रख देना पीछे इसी अर्घपात्रकुं दक्षिणा दान करे जबतक हलाना चलाना नहीं पीछे प्रेतब्राह्मणकुं

दधि, दूध, घृत, तंदुल, सर्षप, दर्भा, पुष्प, अर्पण करना जूदे जूदे पात्रोंमें पीछे यजमान दर्भा तिल जल हाथमें लेके अद्यामुकगोत्र अमुकप्रेत प्रथम मासिकश्राद्धमें ये जो दधि, क्षीर घृत, तंदुल, सर्षप, कुशा, पुष्पाणि तेरेकुं हम देते हैं सो प्राप्त होवो ये अधिक फलके अर्थ है और वस्त्र, गंध, अक्षत, धूप, दीप,

पतिष्ठंताम् ॥ एतच्चाधिकफलार्थमितिहलायुधः ॥ वस्त्रगंधाक्षतधूपदीपतांबूलयज्ञोपवीताच्छादनानितेमयादीयंतेतवोपतिष्ठंताम् ॥ ततःगौरमृत्तिकामानीयचूर्णीकृत्यजलेनाभ्युक्ष्य ब्राह्मणंवेष्टयित्वा मंडलंकुर्य्यात्। परकीयभूमौश्राद्धकरणपक्षेश्राद्धीयवस्तुषुकिंचित्सव्यंजन मन्नमादाय । इदमन्नंभूस्वामिपितृभ्योनमः ॥ पश्चान्नानापदार्थसहितमन्नंपरिवेषयेत् ॥

तांबूल, यज्ञोपवीत, आछादन ये जो मैं देता हूं सो तेरेकुं प्राप्त होवो पश्चात् गौर मृत्तिका ल्याके जलसे प्रोक्षण करके ब्राह्मणके चोगडदसे लेके मंडल करना पश्चात् दूसरेकी भूमि होवे तो श्राद्धकी वस्तुमें किंचित् व्यंजन अन्न लेके ऐसा बोलना यो अन्न भूस्वामिपितृगणके अर्थ है। पश्चात् नाना प्रकारके अन्नसहित

जो अन्न है सो परोसना और गरम अन्न चांदीके पात्रमें तथा स्वर्णके पात्रमें तथा ताम्रके पात्रमें तथा पित्तलके पात्रमें जो है सो अन्न दोनों हाथोंसे लेके मधुररस मनवांछित व्यंजनादि पिसा हुआ पात्रांतरोंमें जो स्थित घृत ईखका रससहित हविष्यान्न मीठा मिलाया हुवा एक करके प्रेतब्राह्मणके अगाडी पत्रावली

उष्णमन्नंरजतादिपात्रेषुस्थितं कराभ्यामादाय मधुररसंमनसाचिंतितं व्यंजनादिपिष्ट पात्रांतरेण आज्यैक्षवतिलसहितंहविष्यान्नंमधुमयंकृत्वा ॥ व्यस्तसमस्तपाणिभ्यां प्रेतब्राह्मणस्यपत्रावलींस्पृष्ट्वा। मंत्रमुच्चारयेत् पृथिवीतेपात्रंद्यौरपिधानं ब्राह्मणस्यमुखेअमृते अमृतंजुहोमिस्वाहा इदंविष्णुरितिकृष्णकव्यमिदंरक्ष इत्युक्त्वा पात्रब्राह्मणस्यांगुष्ठंगृ

परोसके पीछे पत्रावलीके पश्चिम भागमें तो वामा हाथ लगाना और वामे हाथके ऊपर कर दक्षिणहाथसे पत्रावलीका पूर्वभाग स्पर्श करना पीछे मंत्र बोलने पृथिवीते पात्रं एक मंत्र तो यो और दूजा मंत्र इदं विष्णु यो ये दोन मंत्र पढके कृष्ण कव्यकी रक्षा करो ऐसा वचन बोलना ॥ कव्य नाम श्राद्धमें जो भोजनवस्तु

है जिसका नाम है सो ऐसा वचन बोलके यजमान पत्रावलीके ऊपरसे अपना दक्षिण हाथ उठायके ब्राह्मणके दक्षिण हाथको अंगुष्ठ पकडके अन्नादि पदार्थोंको लगाना यो अन्न है ऐसा बोलना ये जल है यो घृत है यो इक्षुरस है ऐसा जो पदार्थ है जिनोंपै ब्राह्मणका अंगुष्ठ स्पर्श करवाना पीछे यजमान अपने दक्षिण हाथमें तिल लेके अन्नके ऊपर डालना पीछे दक्षिणहाथमें मोटक तिल जल लेके अद्यामुकगोत्र अमुकप्रेत

हीत्वा इदमन्नं इत्यन्ने इमाआपः इतिजले इदमाज्यं इतिघृते इदमैक्षवं इतीक्षुरसे पश्चादन्नोपरितिलान्विकीर्य्य मोटकादीन्यादाय ॥ अद्यामुकगोत्रपितरमुकप्रेतद्वादशाहेषोडशश्राद्धांतर्गतप्रथममासिकश्राद्धे इदमन्नंसोपकरणंसव्यंजनंतेमयादीयतेतवोपतिष्ठताम् ॥ पात्रमध्येजलमुत्सृजेत् ॥ पितृमंत्रान्पुरुषसूक्तंशिवसूक्तंचपठेत् ॥ मधुवाताऋतायतेमधुक्ष

इसी द्वादशके दिन षोडश श्राद्धोंके भीतर जो यो प्रथम मासिकश्राद्ध इसीमें यो अन्न सर्व जीनसों करके सहित और व्यंजन नींबु अद्रकादिकों करके सहित तेरेकुं मैं देता हूं सो तुमको प्राप्त होवो ऐसा बोलके पत्रावलीमें जल छोडना अपना वामा हाथ परे कर लेना पीछे यजमान पितृमंत्रोंको तथा पुरुषसूक्त और

शिवसूक्त इनका पाठ करे वा ब्राह्मण पास करवावे और मधुवाता ऋतायते यो मंत्र पढना और त्रयवार मधु मधु मधु बोलना इसीसे अन्नसंकल्पकी सिद्धि होवो और धीरजसे धीरजसे भोजन करवानां पश्चात् और ल्यो और ल्यो ऐसा कहना पीछे ब्राह्मणकुं तृप्त हुवा जानके प्रेतब्राह्मणकी उच्छिष्टपत्रावलीके दक्षि-

रंतिसिंधवः। माध्वीर्नःसंत्वोषधीः॥ मधुनक्तमुतोषसोमधुमत्पार्थिव ँ रजः। मधुद्यौरस्तुनः पिता॥मधुमान्नोवनस्पतिर्मधुमा ँ अस्तुसूर्यः॥माध्वीर्गावोभवंतुनः॥ मधुमधुमधु अन्नसंकल्पसिद्धिरस्तु॥ ब्राह्मणंमंदंमंदंभोजयेत्॥ ततस्तंतृप्तंज्ञात्वा उच्छिष्टसंनिधौआस्तृतदक्षिणाग्रकुशांभूमिंप्रोक्ष्य स्थापयेत्। ततोविकिराशनंविकिरंचकुर्य्यात्॥ अनग्निदग्धायेजीवे

णतरफ समीपही कुशा त्रय भूमि प्रोक्षण करके बिछा देना। पश्चात् विकराशन ये है और इन कुशोंपे विकर देना। जो मेरे कुलमें नहीं अग्निमें जलाये गये हैं जो अग्निमें जलाये गये हैं क्रिया करके हीन हैं सो

जमीनके ऊपर विकर देनेसे तृप्त होवो और परमगतिकुं प्राप्त होवो ऐसा बोलके दर्भोके ऊपर अन्न डालना अपसव्यसे ॥ और बहोत ऋषियोंके मतमें प्रेतश्राद्धमें विकर नहीं देना योही मत श्रेष्ठ है ॥ और स्मृतियोंमें लिखा है जहां विकर देना सो और नांदीमुखमें उच्छिष्टसे पूर्वतरमें विकर देना और वार्षिकमें अग्निकोणमें देना और पार्वणमें उच्छिष्टसे नैर्ऋत्य कोणमें विकर देना और प्रेतश्राद्धमें दक्षिणदिशामें देना

तिमंत्रंपठेत्तथाचस्मृतिः ॥ आभ्युदयिकेचपूर्वेक्षयाहेअग्निमेवच । नैर्ऋत्येपार्वणेश्राद्धेप्रेतश्राद्धेतुदक्षिणे ॥ १ ॥ ततः सव्यंकृत्वाचम्य ब्राह्मणायजलगंडूषंदद्यात् ॥ ततोऽपसव्यं ॥ दक्षिणाभिमुखः ब्राह्मणंस्वदितिपृच्छेत् ॥ सुस्वदितितेनोक्ते पिंडमहंकरिष्ये । कुरुष्वे

उच्छिष्टसे पीछे सव्य करना आचमन करके जो प्रेतब्राह्मण जिमलिया है तिसीकुं जलके कुरले कराने पीछे यजमान अपसव्य होके दक्षिण मुख करके ब्राह्मणकुं पूछे अच्छीतरह जिमे ब्राह्मण बोले बहोत अच्छीतरह जीमे । पीछे प्रेतरूप ब्राह्मणकुं यजमान पूछे पिंड मै करूं । तब ब्राह्मण बोले कर ॥ ऐसी

आज्ञा ब्राह्मणकी लेना पीछे उच्छिष्टके समीप प्रेतकी वेदी आधे हाथ प्रमाण दक्षिणतरफ कुछ नीची और चार अंगुल ऊंची गौरमृत्तिकाकी बनायके पंचगव्य ऊपर डालना पीछे दर्भोंकी गुछीकुं दक्षिण हाथसे नीचेसे पकडना वामे हाथसे ऊपरसे पकडके अपहता मंत्र बोलके रेखा करनी पीछे ये रूपाणि मंत्र बोलके

त्यनुज्ञातः ॥ ततः उच्छिष्टसन्निधौचतुरस्रांहस्तार्द्धमात्रांदक्षिणप्रवणांचतुरंगुलोछ्रितांवेदीं निर्माय वामदक्षिणहस्तगृहीतकुशेन अपहतेति मंत्रेणरेखाकरणम् ॥ येरूपाणिप्रतिमुंचमा नाअसुरासंतः स्वधयाचरंतीतिज्वलदंगारंभ्रामयित्वा रेखातोदक्षिणतोनिदध्यात् ॥ अयो ध्यामथुरामायेतिसिंचनं ॥ तदुपारिच्छिन्नमूलकुशास्तरणं ॥ सव्यंकृत्वाचम्य । देवताभ्यः

जलत अंगारे भ्रमण करके दक्षिणदिशामें वेदीसे रखना पीछे अयोध्या मथुरा माया यो मंत्र बोलके वेदीको सिंचना पीछे कुशा त्रय लेके मूलकी जगहसे जरासी च्छेदन करके रेखामें दक्षिणमें अग्रभाग रखकर मेल देना पीछे सव्य होके आचमन करके देवताभ्यः यो मंत्र त्रय वार बोलना पीछे अपसव्य करके गंध पुष्प

जलयुत अवनेजन पात्र लेके अद्यामुकगोत्र अमुकप्रेत द्वादशके दिन षोडश श्राद्धोंके श्राद्धमें जो भीतर प्रथम मासिकमें यो पिंडासन अवनेजन जल है सो तुमकुं हम देते हैं सो तेरेकुं प्राप्त होवो। ऐसे बोलके देना पीछे सहत घृत तिल सर्व व्यंजनसहित बेलके फलके समान पिंड बनाना पिंड बनाके पीछे वामा

पितृभ्यश्चेतित्रिर्जपित्वा॥ततोऽपसव्यं। पिंडासनं॥अद्यामुकगोत्रपितरमुकप्रेतद्वादशाहेषोडशश्राद्धांतर्गतप्रथममासिकश्राद्धेइदंपिंडासनं अवनेजनजलंतेमयादीयते तवोपतिष्ठताम् ॥ मध्वाज्यतिलसर्वव्यंजनसहितं पिंडंबिल्वोपमंनिर्माय ॥ अद्यामुकगोत्रपितरमुकप्रेतद्वादशाहेषोडशश्राद्धांर्गतप्रथममासिकश्राद्धेएषपिंडस्तेमयादीयतेतवोपतिष्ठताम् ॥ आस्तृतद

हाथसे दक्षिण हाथमें पिंड मोटक तिल जल लेके अद्यामुकगोत्र अमुकप्रेत द्वादशके दिन षोडश श्राद्धोंके भीतर प्रथम मासिक श्राद्धमें यो पिंड मैं देता हुं सो तेरेकुं प्राप्त होवे ऐसा बोलके वेदीको दर्भाके ऊपर अंगुठ नमाके रखना पीछे जो कछु हाथोंको लगा होवे सो पिंडके नीचे दर्भा है तिससे पूंछ देना पिंडके

ऊपर पीछे सव्य करके आचमन करना हरिका स्मरण करना पीछे हाथमें अक्षत लेके उत्तरमुख होके प्रेतमादयध्वं यो मंत्र बोलके वामें तरफ फीरकर श्वास बंद करकर पिंडके सन्मुख होके श्वास अच्छी तरह लेना इसी वायुसे प्राणी तृप्त होता है पिताकों प्रकाशमूर्ति करके मनमें ध्यान करना अमीमदंत मंत्र बोलके

मंमूलेनपिंडोपरिकरेप्रोक्षणम् । सव्यंकृत्वाचम्यहरिंस्मरेत् ॥ पुनरपसव्यं ॥ अक्षतंगृहीत्वा उदङ्मुखोभूत्वा ॥ प्रेतमादयध्वं इतिपठित्वा वामावर्तेनश्वासंनियम्यआवर्त्तमानः पितरं भास्वरमूर्तिंध्यायेत् ॥ अमीमदंतपितरोयथाभागमावृषाईषत्पिंडोपर्य्यक्षतंदद्यात् ॥ अमुकगोत्राऽमुकप्रेतइदंपिंडप्रत्यवनेजलंतेमयादीयतेतवोपतिष्ठताम् ॥ नीवींविसृज्य ॥

पिंडके ऊपर अक्षत डालना पीछे अवनेजन पात्र हाथमें लेके अमुकगोत्र अमुकप्रेत तेरेकुं पिंडके ऊपर अवनेजनजल मैं देता हूं सो तेरेकुं प्राप्त होवो । जल डाल देना । परंतु धोतीकी मोरी जरा ढीली करना पीछे सव्य होके आचमन करके हरिका स्मरण करना पीछे फिर अपसव्य होके वामे हाथसे दक्षिणहाथमें

सूत्र लेके नमो वः प्रेतरसाय यो मंत्र बोलके पिंडपै सूत्र धरना पीछे पिंडके गंध अक्षतादि करके पूजन करना पीछे हाथमें कर्मपात्रका जल लेके अद्यामुकगोत्राऽमुकप्रेत द्वादशाहे षोडश श्राद्धोंके भीतर जो प्रथम-मासिक श्राद्ध सो इसीमें ये जो गंध, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, तांबूल, यज्ञोपवीत, आच्छादनसहित

सव्येनाचम्यहरिंस्मरेत् ॥ ततोऽपसव्यं ॥ सूत्रदानं ॥ नमोवःप्रेतरसायइतिवासः ॥ ततोगंधाक्षतादिभिरभ्यर्च्यसंकल्पयेत् ॥ अद्यामुकगोत्राऽमुकप्रेतद्वादशाहेषोडशश्राद्धांतर्गतप्रथममासिकश्राद्धेएतानिगंधाक्षतपुष्पधूपदीपनैवेद्यतांबूलयज्ञोपवीताच्छादनानितेमयादीयंतेतवोपतिष्ठंताम् ॥ ततः सव्येनाचम्य । ऋजुयुगकुशंकृत्वाब्राह्मणकरेजलदानं ॥ अपां

मैं देता हूं सो तेरेकुं प्राप्त होवो । पश्चात् सव्य होके आचमन करना पीछे सरल कुशा हाथमें लेके प्रेतब्राह्मणके हाथमें जल डालना । जल कैसा है । जो जलमें देवता है सो जलमात्रमें रहता है सो जल ब्राह्मणके

हाथमें डाला है सो जल मेरे कल्याणरूप होवो ऐसा बोलना परंतु पुष्पोंमें जो लक्ष्मी रहती है जो लक्ष्मी कमलमें रहती है सो लक्ष्मी मेरे घर वास करो और हमारेकुं श्रेष्ठ मनयुक्त करो गौशालाकी लक्ष्मीसहित, ऐसा बोलके ब्राह्मणके हाथमें पुष्प देना ॥ अक्षत ब्राह्मणके हाथमें देनेसे मेरा पुण्य अक्षय रहो । पश्चात्

मध्येस्थितादेवाःसर्वमप्सुप्रतिष्ठितं ॥ ब्राह्मणस्यकरेन्यस्ताःशिवाआपोभवंतुमेइतिपठित्वा ॥ लक्ष्मीर्वसतिपुष्पेषुलक्ष्मीर्वसतिपुष्करे ॥ लक्ष्मीर्वसतिसदागोष्ठेसौमनस्यंसदास्तुमे ॥ इति पुष्पंदद्यात् ॥ अक्षतंचास्तुमेपुण्यंइत्यक्षतंदत्त्वा ॥ हस्तेतिलजलमोटकमादाय ॥ अद्यामुक गोत्रस्याऽमुकप्रेतस्यप्रथममासिकश्राद्धेयद्दत्तंतदन्नपानादिकमक्षय्यं॰ तवोपतिष्ठताम् ॥

हाथमें तिल जल मोटक लेके अद्यामुकगोत्र अमुकप्रेतको प्रथममासिकश्राद्धे जो दिया अन्नपानादिक सो अक्षय्य होके हे प्रेत तुमारेकुं मैं देता हूं सो प्राप्त होवो । ऐसा बोलके ब्राह्मणके हाथमें जल डालना पीछे

जरा खडा होके बैठ ऐसा ब्राह्मण बोले पीछे यजमान हाथमें अर्घपात्र लेके और दक्षिण दिशामें देखके पिंडके ऊपर अघोराः प्रेताः संतु बोलके पूर्वाग्रजलधारा देना पश्चात् यजमान पूर्वकी तरफ मुख करके प्रेतब्राह्मणके पास आशीर्वाद मांगे। हमारा गोत्र बधो ब्राह्मण बोले वर्द्धतु यजमान बोले हमारे दातारी

इति करेजलयुक्तंअक्षय्योदकंदद्यात् ॥ उपतिष्ठतामितितेनोक्ते। अघोराःप्रेताःसंतुइतिपठन्दक्षिणांदिशिपश्यन्पिंडोपरिपूर्वाग्रांजलधारांदद्यात् ॥ गोत्रंनोवर्द्धतां वर्द्धतु दातारोनोभिवर्द्धतां वर्द्धतु, वेदाःसंततिरेवच श्रद्धाचनोमाव्यगमद्बहुदेयंचनोस्तु अन्नंचनोबहुभवेदतिथींश्चलभेमहि याचितारश्चनःसंतुमाचयाचिष्मकंचन इत्युक्त्वाएताएवाशिषःसंतुइतिब्राह्मणः

बधो वर्द्धतु। वेद संतान हमारे बधो वर्द्धतु। हमारी श्रद्धा मत जावो नहीं जायगी, हमारे बहोत देनेकुं होवो होवेगा। हमारे अन्न बहोत होवो होवेगा। हमारे घर अतिथी हमकुं प्राप्त होवो होवेगा। हमारी याचना करो हम किसीकी नहीं करें नहीं करोगे। ये आशीर्वाद मांगते हैं तब ब्राह्मण बोले ये आशीर्वाद

तुमकुं शान्त होवो। पश्चात् अपसव्य होके पवित्रसहित त्रयकुशा पिंडके ऊपर रखना पीछे यजमान ऐसा बोले नमो वाचयिष्ये फिर ब्राह्मण बोले वाच्यतां ऐसे आज्ञा लेकरके पश्चात् द्विज पित्रे नम इत्युच्यतां ऐसा यजमानकुं बोले पश्चात् यजमान बोले अस्तु नमः। पीछे पात्रमें दुग्ध अथवा पानी डालके पिंडके

पठेत् ॥ कृतापसव्यःसपवित्रकुशत्रयंपिंडोपरिदत्त्वानमोवाचयिष्ये वाच्यतामित्यनुज्ञातः पित्रेनमः इत्युच्यतां अस्तुनमस्तेनोक्ते ॥ ऊर्जदानं ॥ ऊर्जंवहंतीरमृतंघृतंपयः कीलालंपरिश्रुतमित्यूर्जंदद्यात् ॥ पिंडोपरिवारिधारांदद्यात् ॥ ततोनम्रीभूयपिंडमुत्थायआघ्राय ॥ ततःसव्येनशंखादिलेखनपूजनंच ॥ अर्घपात्रमुत्तानीकृत्य ॥ ततोऽपसव्येनपिंडमुत्था

ऊपर दक्षिणाभिमुख धारा ऊर्ज वहंती मंत्र बोलके देना पीछे नीचा होके पिंडकुं सूंघना उठाके पश्चात् सव्य होके वेदीके ऊपर शंख, चक्र, गदा, पद्म लिखना। पीछे अर्घपात्रकुं सीधा करना पश्चात् अपसव्य होके पिंड उठाके वेदीके ऊपर रखना पीछे हाथ जोडके मंत्र बोलना अनादिनिधनो० इत्यादि, पीछे सव्य होके

दक्षिणा देना अद्यामुकगोत्र असुकप्रेतका प्रथममासिकश्राद्धकी प्रतिष्ठा सिद्ध होनेके अर्थ या जो रजतद-
क्षिणा चंद्र देवता जिसका अथवा दक्षिणाके मोलका द्रव्य असुकगोत्र अमुकर्मा ब्राह्मण जो तू है सो तेरेकुं

प्यवेद्यांस्थापयेत् ॥ अनादिनिधनोदेवशंखचक्रगदाधर ॥ अक्षय्यपुंडरीकाक्षप्रेतमोक्षप्रदो
भवइतिमंत्रपाठः ॥ सव्येनदक्षिणांदद्यात् अद्यामुकगोत्रपितरमुकप्रेतप्रथममासिकश्राद्धप्र
तिष्ठार्थंइदंरजतंचंद्रदैवतंतन्मूल्योपकल्पितंद्रव्यंवाअमुकगोत्रायऽमुकशर्म्मणेब्राह्मणायतुभ्य
महंसंप्रददे ॥ स्वस्तीतिप्रतिवचनं ॥ कर्म्मपात्रजलंगृहीत्वावाजेवाजेतिविसर्ज्जनं ॥ आमा
वाजस्यप्रसवोजगम्यादमे० द्यावापृथिवीविश्वरूपे० आमागंतांपितरोमातरोचामासोमोमृत
त्वेनगम्यात् ॥ इतिप्रदक्षणीकुर्वन् त्रिवारिधारयाब्राह्मणंवेष्टयेत् ॥ सव्यंकृत्वाचम्य ॥ दे

मैं देता हूं ऐसा बोलके देना । पश्चात् ब्राह्मण स्वस्तीति पीछे वचन बोले यजमान कर्मपात्रका
जल हाथमें लेके वाजे वाजे ऐसा मंत्र समस्त बोलके विसर्ज्जन करे पीछे जलसे ब्राह्मणके चोगडद त्रयःधारा

देना परिक्रमाकी माफक पीछे सव्य होके आचमन करना पीछे अपने दोनों हाथोंसे पिताके आसनके पासका रक्षादीपक है तिसीकुं बुझाय देना पीछे हाथ पग प्रक्षालन करके आचमन करके यजमान अपने स्थानमें जावे इसी माफक सर्व षोडशमासिक श्राद्ध करना या बृहत् विधि है।द्वादशीके दिन मासिक करना

वताऽभ्यइतित्रिर्जपित्वा ॥ ततः श्राद्धीयदीपनिर्वापणंकृत्वा पाणिद्वयंप्रक्षाल्याचम्य ॥ गृहंप्र विशेत् ॥ इतिबृहत्प्रक्रिया ॥ एवंसार्द्धमासिकादिश्राद्धानिद्वादशाहेकर्त्तव्यानि सापिंडीतः पूर्वपूर्वयावत्प्रेतसंज्ञा तावत्कर्त्तव्यानिइतिसिद्धांतः । पद्धत्यंतरेलघुप्रकारमाह ॥ इत्येतानि द्वादशाहपूर्वकमाब्दिकपर्य्यंतानिषोडशश्राद्धानिपूर्वोक्तविधिनाकुर्यादेकोद्दिष्टवत् ॥ अद्या

श्रेष्ठ है कारण सपिंडी किया पीछे प्रेतशब्द नहीं बोला जाता है ये वार्त्ता सिद्धांत है। परंतु और पद्धतियोंमें लघुप्रकार लिखा है ये जो सपिंडी आदि लेके षोडश श्राद्ध हैं सो एकोद्दिष्टवत् करना। और सर्व मासिक श्राद्धोंमें अद्यामुकगोत्र असुकप्रेतका प्रेतभाव छुटनेके वास्ते स्वर्गादिक उत्तमलोक प्राप्त होनेके वास्ते

षोडशश्राद्धांतर्गत अमुक श्राद्ध मैं करूंगा इसी माफक संकल्प बोलना सर्व श्राद्धोंमें येही वाक्य बोलना।
ये प्रथम मासिकश्राद्धका विधि है ॥ ऐसेही सर्व मासिकश्राद्ध करना सर्व सार्द्धमासिक द्विमासिकादि सर्व

मुकगोत्रस्याऽमुकप्रेतस्यप्रेतत्वविमुक्तिपूर्वकाक्षयस्वर्गाद्युत्तमलोकप्राप्तिकामःद्वादशाहेषोड
शश्राद्धांगंतप्रथममासिकश्राद्धमेभिर्द्रव्यैरहंकरिष्ये ॥ सर्वमासिकेष्वेतदेववाक्यं ॥ इतिप्रथ
ममासिकश्राद्धप्रयोगःएवंत्रैपाक्षिकःद्विमासिकस्तृतीयमासिकः चतुर्थमासिकः पंचममासि
कः ऊनषाण्मासिकःषाण्मासिकः सप्तममासिकः अष्टममासिकः नवममासिकः दशममासि
कःएकादशमासिकः न्यूनाब्दिकः वार्षिकः येनविधिनाप्रथममासिकः कृतस्तेनैवान्येपिज्ञे
याःअनेनोत्तममध्यमप्रकारेणसर्वमासिकश्राद्धंबोद्धव्यम् ॥ अथसपिंडीश्राद्धप्रयोगः॥ मध्या

विधि करना। प्रेतकर्माणि श्रद्धापूर्वक करना विधिहीन करनेसे सर्व कर्म मिथ्या हो जाता है। सपिंडी
करनेका काल दिनका मध्यभागमें है पूर्वपंक्ति पश्चिमपंक्ति रचकर करना विश्वेदेवाके पूर्वतरफमें प्रेतासन

प्र. स.
द्वि. अ.
तृ. न.
च. द.
पं. ए.
ष. द्वा.
व.
वर्द्धनी पात्र.
ये द्वादशघटानि ॥
अ. द. नै.
दी. वृद्धप्रपि तामह. दी. प्रपिता मह. पिता मह. प्रेतासन.
दीपक तिलतेलका.
पात्राव. पात्रावली. पात्राव. पात्राव.
पितामहादिवेदी.
वृ.प्र.पि. ० ०दी.
प्र.पि.०गो. ०दी.
पि.०गोत्रा. ०दी.
दर्भा
प्रेतवेदी.
०पा. ०
दर्भा
। हवनस्थान.
दी. विश्वेदेवा.
(पात्रावली.)
ई. पू. पूर्व. प.
यजमानासनं.
॥ सपिंडीश्राद्धवेदी ॥
। श्राद्धभूमि । श्राद्धसामग्री ।
पा. पा. पा. पा. पा.
(।) | (।) (।) (।) (।)
व्यंजन पाक.
कर्म. पात्रं.
यजमानासनं.
ई. उ. मूर्ति. वा.

प्रेतवेदी करना प्रेतसे पूर्व पितामहका आसन पितामहसे पूर्वकी तरफ प्रपितामहका आसन प्रपितामहसे पूर्वमें वृद्धप्रपितामहका आसन ऐसे सर्वका आसन स्थापन करना पूर्वकी तरफमें विश्वेदेवाका मुख करना और उत्तरकी तरफ प्रेतका मुख करनी और उत्तरदिशाकी तरफ पित्रेश्वरोंका मुख करना विश्वेदेवतोंकी

ह्णएवात्रकालः ॥ पूर्व्वपश्चिमपंक्तयाकर्त्तव्यः ॥ पूर्व्वस्थांप्रेतपिंडवेदींप्रकल्प्य तत्पश्चिमेविश्वे देवास्तत्पश्चिमेपितरःस्थानंप्रकल्पयेत् ॥ यस्यजीवंतिपितरः पुत्रस्तुम्रियतेयदि ॥ सपिंडी करणेश्राद्धेतस्यापिंडस्यकागतिः १ पितातस्यवसुर्नामरुद्रस्तस्यपितामहः ॥ प्रपितामहोदि

विधिमें यजमान उत्तराभिमुख बैठे और प्रेत पित्रेश्वरोंकी विधिमें दक्षिणाभिमुख यजमान बैठे और कोई पुरुष मर गया हो और उसीका पिता प्रपिता वृद्धप्रपिता जीता होवे तो जब उसका पिंड किसीमें मिलावे सो कहते हैं वसु रुद्र आदित्यके पिंडोंमें मिलावे । और दर्भाके बीचमें गर्भदर्भा होती है सो गर्भकी दर्भा

नहीं निकालना गर्भसहित दर्भा देवयज्ञमें और होममें और तर्पणमें विवाहमें चकारात् श्राद्धकर्ममें लेना कदाचित् कोई मनुष्य अज्ञातपनमें गर्भ निकालके दर्भा वर्त्ते तो उसी मनुष्यके पुत्र स्त्री धनका नाश होवे इसीवास्ते दर्भा गर्भसहित रखना और श्राद्धकरके पीछे सूर्य अस्त हुया जो ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य भोजन

तिर्नामतस्यपिंडस्ययागतिः २ होमतर्पणकालेचविवाहेयज्ञकर्म्मणि॥ गर्भहीनंकुशंकृत्वापुत्रदारधनक्षयः ३ श्राद्धंकृत्वातुयोभुंक्तेरवावस्तंगतेद्विजः॥यातुधानैस्तुतद्भुक्तंकृतमप्यकृतंभवेत् ४ नाशिषंप्रतिगृह्णीयान्नापिविकिरणंस्वधा॥विकिरेणविनाकुर्यात्प्रेतश्राद्धानिषोडश॥ विकिरेणविनान्यत्रतद्व्यर्थंमनुरब्रवीत्॥ प्रेतश्राद्धानिपितृशब्दस्वधानमस्काराणि॥ प्रार्थना

करे तो उसी भोजनको यातुधानजातके राक्षस भोगते हैं किया जो कर्म्म सो अकर्म्म हो जाता है ॥ ४ ॥ मनुभगवानूने कहा है प्रेतश्राद्धमें आशिषा नहीं लेना और विकिरभी नहीं देना, और श्राद्धोंमें आशिषा और विकिर नहीं करे तो सर्व वृथा हो जाता है प्रेतश्राद्धमें पितृशब्द नहीं बोलना स्वधा नहीं बोलना

ॐकार प्रार्थना नहीं बोलना स्वधाके स्थानमें तवोपतिष्ठतां बोलना प्रेतश्राद्धमें भोजनपात्रके अंगुष्ठ ब्राह्मणको नहीं लगाना उल्मुक धारण नहीं करना रेखा लेखन नहीं करना । तृप्ति प्रश्न और आपोशान शेषमन्नं और प्रदक्षिण विसर्ग सीमांतगमन ये अष्टादश पदार्थ प्रेतश्राद्धमें वर्जा है । अब श्राद्धकी कर्त्तव्यता कहते हैं । पूर्वदिशामें विश्वेदेवतोंसे प्रेतब्राह्मणका स्थापन करना और प्रेतब्राह्मणसे पश्चिमदिशामें विश्वेदेव

भिरम्यतांविकिरप्रणवरहितानिभवंति ॥ स्वधास्थानेतवोपतिष्ठतामितिकर्त्तव्यम् ॥ पात्रांगुष्ठावगाहश्चउल्मुकोल्लेखनादिकं ॥ तृप्तप्रश्नमपोशानंशेषमन्नंतथैवच ॥ प्रदक्षिणाविसर्गश्च सीमांतंगमनंतथा ॥ अष्टादशपदार्थानिप्रेतश्राद्धेविवर्ज्जयेत् ॥ ॥ अथश्राद्धप्रक्रिया ॥ पूर्व्वं दिश्युदङ्मुखंप्रेतब्राह्मणंसंस्थाप्य ॥तत्पश्चिमेव्यवहितेदेशेपूर्व्वाभिमुखंदेवब्राह्मणंसंस्थाप्य॥

स्थापन करना पूर्वाभिमुख प्रेत ब्राह्मण है पश्चिमभागमें तिनसे ऐसे पितामहादि त्रयकों स्थापन करना श्राद्धविवेकमें लिखा है सर्वपूर्व वृद्धप्रपितामह इसीका ये अर्थ है सर्वस्मात् पूर्व सर्वसे पूर्वमें वृद्ध प्रपितामहकुं स्थापन करना एवं स्थापन करके सव्य करके आचमन करके । आत्माकुं तथा श्राद्धवस्तुकुं सेचन करना

अपवित्र है सो पवित्र होता है सर्व अवस्थामें सर्व काममें मलिन होवे सो पवित्र होता है जो पुंडरीकाक्षका स्मरण करेगा सो पवित्र हो जाता है ऐसे बोलके प्रोक्षण करना पीछे यव कुशा पूगीफल तांबूल हाथमें लेके उपवीत जो देवब्राह्मण है जिसीका दक्षिण गोडेके हाथ लगाके अद्यामुकगोत्र अमुकप्रेतका करण योग

तत्पश्चिमव्यवहितेदेशेपितामहादिब्राह्मणानुसंस्थाप्य ॥ सव्येनाचम्य सेचनं । अपवित्रः पवित्रोवासर्वावस्थांगतोपिवा ॥ यःस्मरेत्पुंडरीकाक्षंसबाह्याभ्यंतरंशुचिः॥ इतिमंत्रेणश्राद्धद्रव्याणिआत्मानंच सिंचयेत् । यवकुशपूगीफलतांबूलमादाय ॥ उपवीतंदेवब्राह्मणदक्षिण जानुंस्पृष्ट्वा ॥ अद्यामुकगोत्रस्याऽमुकप्रेतस्यकर्त्तव्यसपिंडीकरणश्राद्धार्थेअस्यांरात्रौश्वः कर्त्तव्यपितृप्रेतसपिंडननिमित्तकं पितामहादित्रयश्राद्धसंबंधिनोविश्वेदेवाःकालकामसंज्ञकाः

जो सपिंडीकरण श्राद्धके अर्थ इसी रात्रिसे परभात करेंगे जो प्रेतसपिंडन उसीके निमित्त पितामहादि जो त्रय जिनोंका श्राद्धसंबंधि जो विश्वेदेवा कालकामसंज्ञका सो देवरूप जो आप ब्राह्मण हो सो आपकुं सपिं-

डनश्राद्ध करनेके अर्थ मैं निमंत्रण करता हूं पीछे ब्राह्मण बोले अहं आमंत्रितोऽस्मि पीछे यजमान ब्राह्म-
णोंकुं अक्रोधन सुनाना । क्रोध नहीं करना पवित्र रहना वेदपठन करना जो आपके पास श्राद्धमें हम काम

सपिंडनश्राद्धकरणायदेवब्राह्मणमामंत्रये ॥ आमंत्रितोस्मीतितेनोक्ते ॥ अक्रोधनैरितिश्राव
येत्कृतापसव्योदक्षिणाभिमुखःपातितवामजानुःकुशतिलतांबूलमादाय ॥ अद्यामुकगो
त्रस्याऽमुकप्रेतस्यषोडशश्राद्धांतर्गतसपिंडीकरणश्राद्धे अनेनतांबूलाद्येनप्रेतब्राह्मणकृत्ये
भवान्मयानिमंत्रितः ॥ आमंत्रितोस्मीतिप्रतिवचनं इतिप्रेतब्राह्मणंनिमंत्र्य ॥ अक्रोधनै
रित्यादिश्लोकद्वयंश्रावयेत् ॥ ततःसव्येनाचम्य हरिस्मरणम् ॥ पुनरपसव्येनदक्षिणाभि
मुखः पातितवामजानुः ॥ पितृब्राह्मणजानूस्पृष्ट्वाकुशतिलतांबूलमादाय ॥ अद्यामुकगो

लेवे सो देवो और आलस्य नहीं रखना काम दमन करना ॥ अपसव्य होके दक्षिणदिशामें मुख करना
वामा गोडा मोडके बैठना पीछे हाथमें कुशा तिल तांबूल लेके अमुकगोत्र अमुकप्रेतका षोडश श्राद्धोंके

अंतर्गत सपिंडीकरण श्राद्धमें यो जो तांबूल है जिसी करके प्रेतब्राह्मणके काममें आपकुं निमंत्रण किया है पीछे आमंत्रितोस्मीति ब्राह्मण बोले ऐसे प्रेतब्राह्मणका निमंत्रण किये पीछे यजमान हाथ जोडके ब्राह्मणकुं बोले क्रोध कामका त्याग रखना पवित्र रहना वेद पठन करना और परिश्रम नहीं करना इसी श्राद्धकर्ममें हुस्यार रहना ऐसा ब्राह्मणकुं सुनाके पीछे यजमान सव्य करके आचमन करना हरिका स्मरण करना फिर

त्रस्याऽमुकप्रेतस्य सपिंडीकरणश्राद्धनिमित्तकममुकगोत्रस्याऽमुकशर्मणः पितामहस्यतांबूलाद्येनश्राद्धकरणायभवंतंपितृब्राह्मणमामंत्रये। आमंत्रितोस्मीतिप्रतिवचनं ॥ प्रपितामह वृद्धप्रपितामहयोरेवंवाक्यं अद्यामुकगोत्रस्याऽमुकप्रेतस्यसपिंडीकरणश्राद्धनिमित्तकममुक

अपसव्य होके दक्षिणमुख करना वामा गोडा मोडना पीछे पितृरूप ब्राह्मणका दक्षिण गोडेके हाथ लगाके हाथमें कुश तिल तांबूल लेना पीछे अद्यामुकगोत्र असुकप्रेतका सपिंडीकरण श्राद्धके निमित्त असुकगोत्र असुकशर्म्मा जो पितामहरूप ब्राह्मणको निमंत्रण मैं किया है पीछे आमंत्रितोस्मीति पितृब्राह्मण बोले इसी

माफक प्रपितामह वृद्धप्रपितामहरूप ब्राह्मणोंका निमंत्रण करना सो कहते हैं निमंत्रणमें तांबूल ब्राह्मणके हाथमें देना पीछे और तांबूल हाथमें लेके यजमान बोले अद्यामुकगोत्र असुकप्रेतका सपिंडीकरण श्राद्धके निमित्त असुकगोत्र अस्मत् प्रपितामह असुकशर्मा तिस रूप प्रपितामहरूप ब्राह्मणका मैं निमंत्रण करता हूं ऐसा बोलके तांबूल ब्राह्मणके हाथमें देना पीछे ब्राह्मण आमंत्रितोस्मीति बोले॥ पीछे यजमान स्वहस्तमें

गोत्रस्याऽमुकशर्म्मणःप्रपितामहस्यतांबूलाद्येनश्राद्धकरणायभवंतंप्रपितामहब्राह्मणमामंत्रये आमंत्रितोस्मीतिप्रतिवचनं। अद्यामुकगोत्रस्याऽमुकप्रेतस्यसपिंडीकरणश्राद्धनिमित्तकम मुकगोत्रस्यामुकशर्म्मणःवृद्धप्रपितामहस्य तांबूलाद्येनश्राद्धकरणायभवंतंवृद्धप्रपितामहब्रा

कुश तिल तांबूल लेके ब्राह्मणका दक्षिण गोडा स्पर्श करके बोले अद्यासुकगोत्र अमुकप्रेतका सपिंडीकरण श्राद्धके निमित्त अमुकगोत्र अमुकशर्म्मा वृद्धप्रपितामहरूप ब्राह्मणकुं मैं निमंत्रण करता हूं ऐसा बोलके तांबूल वृद्धप्रपितामहरूप ब्राह्मणके हाथमें देना पीछे आमंत्रितोस्मीति ब्राह्मण बोले। पीछे यजमान ऐसा

बोले काम क्रोधका त्याग करना पवित्र रहना वेदका पाठ करना और परिश्रम करना नहीं । श्राद्धके काममें तुमारा निमंत्रण किया है सो करो हमारी तो यह प्रार्थना है परंतु ये जो ब्राह्मणोंको निमंत्रण पूर्व दिनमें करना कहा है परंतु पूर्व दिनमें किसी कामके सबबसे निमंत्रण नहीं होवे तो श्राद्धके दिन प्रातःकाल नि-

ह्मणमामंत्रये ॥ आमंत्रितोस्मीतिप्रतिवचनं ॥अक्रोधनैरिति श्रावयेत् ॥ अक्रोधनेनशौचपरेणं सततंब्रह्मवादिना ॥ भवितव्यंभवताचमयाचश्राद्धकारिणा ॥ यदासायंनभवतिप्रमादात्तदाप्रा तरेवकर्त्तव्यमामंत्रणं ॥ अथपादार्घः सव्येनपादार्घपात्रंसंपाद्यऋजुकुशयवजलान्यादाय ॥ अद्यामुकगोत्रस्याऽमुकप्रेतस्यसपिंडीकरणनिमित्तकंपितामहादित्रयश्राद्धसंबंधिनोविश्वेदेवाः

मंत्रण करना ॥ जब प्रमादसे सायंकालमें निमंत्रण नहीं होय सके तौ प्रातःकाल निमंत्रण करना अब पादार्घ करना सव्य होके अर्घपात्रमें दर्भा यव जल लेके अद्यामुकगोत्र अमुकप्रेतका सपिंडी करण निमित्त पिता-महादित्रयश्राद्धसंबंधी कालकामसंज्ञाके विश्वेदेवतारूप ब्राह्मण जो तुम हो सो यो जो पादार्घ है सो तुमारेकुं

हम देते हैं और नमस्कार है पीछे अपसव्य होके सूधी कुश तिल जल हाथमें लेके अद्यामुकगोत्र अमुक-
प्रेतका सपिंडीकरण श्राद्ध हे प्रेत या जो पादार्घ है सो मैं देता हूं सो तेरेकुं प्राप्त होवो ऐसा बोलके प्रेतब्रा-
ह्मणके चरणोंमें अर्घ डालना ऐसे सर्वत्र पादार्घ चरणोंमें डालना॥ पश्चात् सव्य होके आचमन करके वि-

कालकामसंज्ञकाः एषपादार्घोवोनमः ॥ ततोऽपसव्येनऋजुकुशतिलजलान्यादाय अद्या
मुकगोत्रस्याऽमुकप्रेतस्यसपिंडीकरणश्राद्धएषपादार्घस्तेमयादीयतेतवोपतिष्ठताम् ॥ ततः
सव्येनाचम्यविष्णुंस्मृत्वा ॥ पुनःअपसव्यं ॥ अद्यामुकगोत्राअस्मत्पितामहप्रपितामहवृद्धप्र
पितामहाअमुकाऽमुकशर्म्माणःअमुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्यसपिंडीकरणश्राद्धनिमित्तकंएषपा

ष्णुका स्मरण करना पीछे फेर अपसव्य होना पीछे जल तिल हाथमें लेके अद्यामुकगोत्र अस्मत् नाम
हमारा जो पितामह प्रपितामह वृद्धप्रपितामह अमुकामुकशर्माणः अमुकअमुकनाम अमुकगोत्र अमुकप्रेतका

सपिंडी श्राद्धनिमित्तक एषः नाम था जो पादार्घ है सो तेभ्यः स्वधा सव्य करके आचमन करवाना पश्चात् प्रेत पादार्घपात्र पितामहादि पादार्घके मध्य योजन करना ये समाना मंत्र बोलके यो केचित् ऋषिका मत है ॥ पीछे यजमान हाथ पैर प्रक्षालन करे आचमन करके सव्यसे आवो महाराज तुम, जब ब्राह्मण बोले

दार्घस्तेभ्यःस्वधा ॥ सव्येनाचमनीयंदद्यात् प्रेतपादार्घं पितामहादिपादार्घेनियोजयेत् ॥ ये
समानाइतिमंत्रेणकेषांचिन्मते ॥ पादौप्रक्षाल्याचम्यसव्येन ॥ आगतंवः सुस्वागताःस्मइदमा
सनमास्यतांअहमास्ये । ततोऽपसव्येन ॥ आगतंतेसुस्वागतमिदमासनमास्यतामहमास्ये
इतिप्रेतब्राह्मणायआसनंदत्वा । पुनःसव्येनाचम्यपुनरपसव्येन ॥ आगतायूयं सुस्वागता

आये आनंदसे यजमान बोले इसी आसनपै बैठो तब ब्राह्मण बोले हां मैं बैठता हूं ऐसे विश्वेदेव ब्राह्मणकुं आसनपै बैठाना पीछे यजमान अपसव्य होके प्रेतब्राह्मणकुं बोले आवो ब्राह्मण बोले सुखसे आये हैं यज

मान बोले आसनपै बैठो हों मैं बैठता हूं इसी माफक प्रेतब्राह्मणकुं आसनपै बैठाना पीछे सव्य होके आच-
मन करके फिर अपसव्य होके यजमान तीन ब्राह्मणोंकुं बोले आप आये महाराज तब ब्राह्मण बोले
सुखसे हम आये हैं यजमान बोले ये पितामहादिकोंके आसनत्रय हैं जिनुपै बैठो तब ब्राह्मण बोले बैठते

वयं इदमासनमास्यतामहमास्ये इतिपितामहादिब्राह्मणाय सव्येनकर्म्मपात्रंपूरयेत्।कर्मपात्र
महंकरिष्येकुरुष्व । कर्मपात्रस्यासनंआसनेपात्रं ॥ पात्रेपवित्रकं । पवित्रेस्थोवैष्णव्याःवि
तिपवित्रकं॥ शन्नोदेवीतिजलं। यवोसीतियवान्। गंधपुष्पादिकंतूष्णींदद्यात्। अपसव्येन।

हैं ऐसे पितामह प्रपितामह वृद्धप्रपितामह ये तीनोंके ब्राह्मण तीन हैं तिनकुं आसनोंपै बैठाना पश्चात् सव्य
होके कर्मपात्रकुं स्थापन करना जल लेके बोले कर्म्मपात्र मैं करता हूं तब ब्राह्मण बोले कर। कर्मपात्रके
नीचे दर्भाका आसन रखना। पवित्रस्थो मंत्र बोलके कर्मपात्रमें पवित्र डालना। शन्नोदेवी मंत्र बोलके

कर्म्मपात्रमें जल भरना। यवोसीति मंत्र बोलके यव डालना और गंध पुष्प चूप होके डालना अपसव्य होके तिलोसीति मंत्र बोलके तिल डालना सव्य होके ऐसा बोलना कर्म्मपात्र शुद्ध सर्ववस्तुयुक्त अपसव्य होके सर्ववस्तुयुक्त होवो ऐसा बोलना सव्य होके आचमन करके दो कुशा हाथमें स्वागतं ऐसा बोलके दर्भा विश्वेदेवतोंके आसनपै मेलना विश्वेदेवरूप दो ब्राह्मण पूर्वाभिमुख बैठाना अथवा एकही बैठाना पितृ-

तिलोसीतितिलं। सव्येनकर्म्मपात्रंसंपन्नं अपसव्येनसुसंपन्नमस्तु ॥ सव्येनाचम्यपूर्वोक्ते स्वागतंइतिवाक्यंकुशद्वयेन दैवेब्राह्मणद्वयंप्राङ्मुखं। पितृब्राह्मणान् त्रीनुत्तराभिमुखानुप वेश्य। पितामहादित्रयासनसमीपेब्राह्मणदक्षिणवामेवाप्राङ्मुखंघृताक्तदीपंदद्यात् ॥ पितृब्राह्म

ब्राह्मण तीन उत्तराभिमुख आसनोंपै बैठाना स्वागतं स्वागतं बोलके दो दो दर्भा आसनोंपै रखना प्रेतब्राह्म-णकुंभी उत्तराभिमुख बैठाना पीछे विश्वेदेवतोंके दक्षिणपसवाडे घृतका दीप रखना पूर्वाभिमुख और प्रेत-ब्राह्मणके वामे पसवाडे तिलोंके तेलका दीपक रक्षादीप है सो दक्षिणाभिमुख रखना और पितामहादित्रय

हैं जिनके दक्षिण पसवाडे दक्षिणाभिमुख घृतका दीपक रखना और पीछे अपवित्र मंत्र बोलके आत्माकुं तथा श्राद्धवस्तुकुं प्रोक्षण करना मोटकसे। पश्चात् अपसव्य होके हाथमें तिल कुशा लेके अग्निष्वात्ता मंत्र बोलके दिग्बंधन करना पश्चात् सव्य होके आचमन करना पीछे जल यव कुशा हाथमें लेके संकल्प

णवामभागेतिलतैलेनदीपंदद्यात्। अपवित्रःपवित्रोवेतिश्राद्धद्रव्यंआत्मानंचप्रोक्षयेत्। ततोऽपसव्येनतिलकुशान्गृहीत्वा अग्निष्वात्ताः पितृगणेतिमंत्रेणदिग्बंधनंकुर्यात् ततःसव्ये नाचम्यजलयवकुशमादायप्रतिज्ञांकुर्यात्॥ अद्यामुकगोत्रस्याऽमुकप्रेतस्यप्रेतत्वविमुक्ति पूर्व्वकाक्षयस्वर्गाद्युत्तमलोकप्राप्तिकामः तथाचामुकगोत्राणांपितामहप्रपितामहवृद्धप्रपिताम हानाममुकाऽमुकशर्मणां पितामहादित्रयश्राद्धसंबंधिकालकामविश्वेदेवपूर्व्वकाणांषोडशश्रा

करना अद्याऽमुकगोत्र अमुकप्रेतका प्रेतत्व दूर होनेके वास्ते स्वर्गादि उत्तम लोक प्राप्त होनेकी वांछा करके अमुकगोत्र पितामह प्रपितामह वृद्धप्रपितामहादि त्रय श्राद्धसंबंधि कालकाम विश्वेदेवोंका पूजनपूर्वक षोड-

श्राद्धांतर्गत सपिंडीकरण श्राद्ध मैं करूंगा कुरुष्व नाम कर ऐसा ब्राह्मण बोले पश्चात् गायत्रीका जप करना और देवताभ्य यो मंत्र बोलना पश्चात्सव्य होके यव कुश जल हाथमें लेके। अद्येह प्रेतके पितामहादि त्रयका श्राद्धसंबंधि विश्वेदेवाः कालकामसंज्ञावालोंकुं यो कुशासन है कुशाका आसन देके नमस्कार कर-

द्धांतर्गतसपिंडीकरणश्राद्धमहंकरिष्ये ॥ कुरुष्वेत्यनुज्ञातः गायत्रींजपेत् ॥ देवताभ्यःपितृभ्यश्चेत्यादिपठेत्। ततः सव्येनयवकुशजलान्यादाय॥ अद्येहप्रेतपितामहादित्रयश्राद्धसंबंधिनोविश्वेदेवाःकालकामसंज्ञकाः इदंकौशासनंवोनमः। अथयवमादायविश्वेदेवावाहनं। विश्वान्देवानावाहयिष्ये ॐआवाहय इत्यनुज्ञातः ॥ विश्वेदेवासआगतविश्वेदेवाःशृणुतेम७ंहवये

ना। और हाथमें यव लेके विश्वेदेवतोंका आवाहन करना विश्वान् देवान् अहं आवाहयिष्ये पीछे ब्राह्मण बोले आवाहय इस ब्राह्मणकी आज्ञा लेके मंत्र बोलके आवाहन करना विश्वेदेवा स आगतः यो मंत्र बो-

लके आवाहन करना पीछे ब्राह्मणके पाससे आज्ञा लेना पहला ऐसा बोलना विश्वेदेवोंका अर्घपात्र मैं करता हूं ब्राह्मण बोले कर ॥ पात्रके नीचे दर्भाका आसन देना पीछे पात्रमें पवित्रा डालना पवित्रस्थो इति मंत्र बोलके । शन्नो देवी मंत्र बोलके पात्रमें जल डालना । यवोसीति मंत्र बोलके यव डालना । गंधद्वारा

मेअंतरिक्षेइत्यादिपठित्वा ॥ विश्वेदेवहस्तार्घपात्रमहंकरिष्ये । कुरुष्व ॥हस्तार्घपात्रस्यासनं आसनेपात्रं पात्रेपवित्रकं । पवित्रेस्थोवैष्णव्याविति । शन्नोदेवीतिजलं । यवोसीतियवान् । गंधद्वारामितिचन्दनं ॥ श्रीश्चतेलक्ष्मीश्चेतितुलसीदलंपुष्पञ्च । सव्येनदेवहस्तार्घपात्रंसम्पन्नं सुसम्पन्नमस्तु ॥ अर्घपात्रं वामहस्तेकृत्वा ॐनमोनारायणायेतिपठित्वा पवित्रंभोजनपात्रो

मंत्र बोलके पात्रमें चंदन डालना । श्रीश्च ते मंत्र बोलके तुलसीपत्र और पुष्प डालना देवार्घ पात्र संपन्न सर्व वस्तुकरके सुसंपन्न होवो ऐसा बोलके अर्घपात्रकुं वामे हाथमें लेके ॐ नमो नारायणायेति मंत्र बोलके

पवित्रा भोजनपात्रपै रख देना ॥ पीछे दक्षिणहाथमें और जल लेना पश्चात् या दिव्या आपः यो मंत्र बोलके ब्राह्मणके हाथमें जल डालना पवित्रा धरना अपात्रिकश्राद्ध करे तो भोजनपात्रके ऊपर जल डालना । पीछे पितामहादि श्राद्धसंबंधी जो तुम विश्वेदेवता हो सो अमुकप्रेतका सपिंडीकरण श्राद्धमें या जो

परिधृत्वा उदकान्तरंगृहीत्वा ॐ यादिव्याआपः पयसासंबभूवुर्य्याअंतरिक्षाउतपार्थिवीर्य्याः ॥ हिरण्यवर्णायज्ञियास्तानापःशिवाःसꣳस्योनासुहवाभवन्तु ॥ इतिपठित्वा ब्राह्मणहस्तेजलंपवित्रकंचदत्त्वा पितामहादित्रयश्राद्धसम्बंधिनोविश्वेदेवाः कालकामसंज्ञकाः अमुकप्रेतस्यसपिंडीकरणश्राद्धेएषहस्तार्घोवोनमः ॥ तच्चक्षुर्देवहितंपुरस्तादित्यादिपठित्वाऽर्घपात्रं विश्वेभ्योदेवेभ्यःस्थानमसीतिअर्घपात्रंउत्तानमेवदक्षिणपार्श्वेसंस्थापयेत् तद्दक्षिणादानपर्य्यं

हस्तार्घ है सो तुमारेकुं है ऐसा देके नमस्कार करना पश्चात् तच्चक्षुर्देवहितं यो मंत्र बोलके अर्घपात्रकुं विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्थानमसीति बोलके विश्वेदेवतोंके दक्षिण पसवाडेमें सूधा रखना पीछे इसी अर्घपात्रकुं

दक्षिणादान अगाडी आवेगा जहांतक हलाना चलाना नहीं अथ विश्वेदेवरूपी ब्राह्मणका पूजन करना वस्त्र, गंध, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, तांबूल, पूगीफल ये पूजनमें अर्पण करना। पूजन नमोस्तु अनंता-येति मंत्र बोलके पूजन करना पीछे यजमान हाथमें दर्भा यव जल लेके अद्येहामुकप्रेतका सपिंडीकरण

तंनोद्धरेन्नचालयेत् ॥ विश्वेदेवब्राह्मणंसंपूज्य ॥ वस्त्रगन्धाक्षतपुष्पधूपदीपनैवेद्यादिभिः ॥ नमोस्त्वनन्तायेत्यादिमंत्रेणपूजयेत्। हस्तेकुशयवजलमादाय अद्येहामुकप्रेतपितामहादित्रय संबंधिनोविश्वेदेवाःकालकामसंज्ञकाः एतान्यर्चनानि गंधाक्षतपुष्पधूपदीपनैवेद्यतांबूलपूगी फलदक्षिणायज्ञोपवीतवासांसिवोनमः ॥ अर्चनविधौसर्वैपरिपूर्णमस्तु ॥ सव्यापसव्याभ्यां

श्राद्धसंबंधिनो कालकाम नामके विश्वेदेवोंकुं ये जो अर्चन गंधाक्षत पुष्प धूप दीप नैवेद्य तांबूल पूगीफल दक्षिणा यज्ञोपवीत वस्त्र तुमारे अर्पण है और नमस्कार है ॥ पूजनकी विधि सर्व परिपूर्ण होवो सव्य अथवा अपसव्य होके जलसे मंडल करना ॥ ब्राह्मणके और भोजनपात्रके चोगड जलकी मंडल कर देनी। अग्नौ-

करणमहं करिष्ये करो ऐसा ब्राह्मण बोले अग्नौकरण नाम जलमें आहुति देनेका है। सव्य होके पुटक-जलमें पायसः नाम दुग्धमें पकाये हुये चावलोंकी आहुति देना। ॐअग्नये इति मंत्र करके और ॐसोमाय इति मंत्र करके आहुति जलमें विश्वेदेवतोंके सन्मुख देना। और कव्यवाहनाय वैवस्वताय चुप कही मनमें

जलेनमंडलंकृत्वा ॥ अग्नौकरणमहंकरिष्ये कुरुष्व ॥ सव्येनैवपुटकजले पायसेनजुहुयात् ॥ अनेनमंत्रेण ॥ ॐअग्नयेकव्यवाहनायस्वाहा ॥ इदमग्नयेकव्यवाहनाय ॥ ॐसोमायपितृमते स्वाहा ॥ इदंसोमायपितृमते । कव्यवाहनायवैवस्वतायतूष्णीं ॥ शेषमन्नंपितृपात्रेणमेलयेत् । अपसव्येन ॥ इदमन्नंभूस्वामिपितृभ्योनमः ॥ ततः सव्यंकृत्वाचम्य ॥ ततोऽन्नसंकल्पः म

बोलके ये दो आहुति देना ॥ आहुति देके शेष अन्न बचे सो पितृपात्रमें अन्न है तिसीमें मिलाय देना ॥ पुनः अपसव्य होके यो जो अन्न भूमिका स्वामी जाकी जमिन होवे जिसीकुं देना ऐसा बोलके इदमन्नं भूस्वामिपितृभ्योनमः ॥ पश्चात् सव्यं कृत्वाचम्य ॥ पश्चात् अन्नका संकल्प करना यो जो अन्न हम देव-

तोकुं और पितृगणोंकुं देते हैं ऐसा संकल्पमें बोले पीछे सहत मिलाया हुआ जो अन्न सो विश्वेदेवतोंकी पत्रावलीमें परोसना पीछे पत्रावलीकुं दोनों सीधे हाथोंसे स्पर्श करके बोले ॐ पृथिवी ते पात्रं० इति इदं विष्णु० इति ये दो मंत्र बोलके पीछे कृष्ण इसी हव्यकी रक्षा करो पीछे अपना दक्षिणहाथ तो पत्राव-

घुमयान्नंविश्वेदेवपात्रेपरिविष्य ॥ पात्रमालभ्यउत्तानव्यस्तपाणिभ्यां ॥ पृथिवीतेपात्रंद्यौरपिधानमिति० इदंविष्णुरिति० कृष्णहव्यमिदंरक्ष ॥ हस्तेयवकुशानादाय ब्राह्मणस्यदक्षिणहस्तांगुष्ठंगृहीत्वा । इदमन्नंइत्यन्ने इमाआपः इतिजले इदमाज्यमितिघृते इदंहविरितिपुनरन्ने इदमैक्षवं इतिइक्षुरसे । अंगुष्ठंत्यक्त्वा । जलयवकुशानादायअद्यामुकगोत्रस्यपितु

लीपैसे उठायके देवरूप ब्राह्मणके दक्षिणहाथका अंगुष्ठ पकडके सर्व वस्तुओंको लगावे इदमन्नं ऐसा बोलके अन्नके अंगूठा लगाना इमा आपः जलके लगाना इदमाज्यं यो घृत है इदं हवि ये सर्व हविवस्तु है इदमैक्षवं यो ईखका रस है ऐसे सर्व व्यंजनोंको अंगुष्ठ लगाना कदाचित् अपात्रिक श्राद्ध करे ब्राह्मणोंकी जगह

दर्भाकी चट बनायके रखे तो अन्नादिकोंके चटकुं लगाना यजमान अपना अंगूठा अन्नादिकोंको नहीं लगावे अंगुष्ठ छोडके अपने हाथमें दर्भा यव जल लेके ऐसा बोले अद्यामुकगोत्र अमुकप्रेतके सपिंडीकरणश्राद्धमें असुकगोत्र पितामह प्रपितामह वृद्धप्रपितामहादि त्रयके श्राद्धसंबंधी जो विश्वेदेवता कालकामसंज्ञकाः यो जो अन्न जल और सामग्रीसहित तुमारे अर्पण है और नमस्कार है । ऐसा विश्वेदेवतोंको सर्व

रमुकप्रेतस्य सापिंडीकरणश्राद्धे अमुकगोत्राःपितामहप्रपितामहवृद्धप्रपितामहादित्रयश्राद्ध संबंधिनोविश्वेदेवाःकालकामसंज्ञकाःइदमन्नं सोदकंसोपकरणंवोनमः ॥ इत्यर्पणंकृत्वा ॥ इतिदेवकार्य्यंनिर्वर्त्य ॥ ततोऽपसव्यं ॥ हस्तेकुशद्वयमादाय । अद्यामुकगोत्राऽमुकप्रेत इदंकुशासनंतेमयादीयतेतवोपतिष्ठताम् ॥ सव्यंकृत्वाचम्य हस्तौपादौप्रक्षाल्य प्रेतकार्यं

अन्नादि वस्तु अर्पण करके निवर्त्त होना । पश्चात् अपसव्य होके दक्षिणमुख दूसरे आसनपै बैठके यजमान अपने हाथमें कुशाद्वय लेके अद्यामुकगोत्र अमुकप्रेत तेरेकुं यो जो कुशासन देते हैं तेरेकुं प्राप्त होवो॥ सव्य करके हाथ पग धोके आचमन करना प्रेतकार्य करके आचमन सर्व जगह करना पश्चात् अपसव्य

होके हाथमें मोटक तिल जल लेके अद्यामुकगोत्राऽमुकपितामहप्रपितामहवृद्धप्रपितामह अमुकशर्मा अमुकशर्माणः तीनोंके जुदे नाम उच्चार करना अमुक प्रेतकी सपिंडीकरण श्राद्धमें ये जो दर्भासन है जिसी जिसीके वास्ते त्रय विभाग करके तुमकुं हम देते हैं सो युष्मभ्यं तुमारेकुं स्वधा है ऐसा बोलके प्रेतके विना

कृत्वा सर्वत्राचम्य ॥ पुनरपसव्येन मोटककुशत्रयमादाय ॥ अद्यामुकगोत्राऽमुकपितामहप्रपितामहवृद्धप्रपितामहा अमुकाऽमुकशर्म्माणःअमुकप्रेतस्यसपिंडीकरणश्राद्धेइदंकुशासनंत्रेधाविभज्ययुष्मभ्यंस्वधा ॥ प्रेतंवर्ज्जयित्वापितामहादीनामावाहनं ॥ ततःहस्तेतिलमादाय अद्यामुकगोत्रानमुकपितामहप्रपितामहवृद्धप्रपितामहान् अमुकाऽमुकशर्मणःआवाहयिष्ये० ॐआवाहयेत्यनुज्ञातः॥ ॐउशंतस्त्वानिधीमहीउशंतःसमिधीमहि । उशंनुशत

पितामहादिकोंकुं देना दर्भाका आसन पश्चात् हाथमें तिल लेकें अद्यामुकगोत्र अमुकामुकशर्म्माको मैं आवाहन करता हूं तब ब्राह्मण बोले आवाहन कर ॥ ऐसी आज्ञा ब्राह्मण देवे ॥ पीछे ॐ उशंतस्त्वानि०

मंत्र बोलके आवाहन करना ऐसा बोलता जाना अपने हाथसे आसनोंपै तिल डालना पीछे आयंतु नः पितरः यो दूसरा मंत्र आवाहनको बोलके यजमान अपने हाथसे आसनोंपै तिल डाले पश्चात् आवाहनके प्रेतार्घपात्र करना देना आसनपै पात्रमें ले दर्भाको तृणको अर्घपात्रके नीचे रखे पीछे शन्नोदेवी मंत्र बोलके

आवाहपितॄन्हविषेअत्तवेति तिलानवकीर्य ॥ आयंतुनःपितरःसोम्यासोऽग्निष्वात्ताःपथिभिर्देवयानैः।अस्मिन्यज्ञेस्वधयाधिब्रुवंतुतेवन्त्वस्मात्॥इतिपठित्वातिलानवकीर्य ततःप्रेतार्घं दद्यात् ॥ कर्म्मपात्रजलेनशन्नोदेवीत्यादिसमस्तमंत्रैः प्रेतहस्तार्घंसंपाद्य ॥ प्रेतार्घपात्रमादायवामहस्तेकृत्वा तूष्णींपवित्रादिकंप्रेतब्राह्मणकरेदत्त्वा० दक्षिणहस्तेउदकान्तरंधृत्वा यादि

प्रेतार्घपात्रमें जल डालना और तिलोसीति मंत्रसे तिल डालना और गंध पुष्प चूप होके डालना पवित्रस्थो मंत्र बोलके पवित्रा डालना पश्चात् प्रेतार्घ पात्र अपने वाम हाथमें लेके चूपके पवित्रा प्रेतब्राह्मणके हाथमें डाले और पात्रांतरका जल अपने दक्षिण हाथमें लेके या दिव्येति मंत्र बोलके प्रेतब्राह्मणके हाथमें पवि-

त्रेके पास डालना पीछे दोनों हाथ अर्घपात्रको लगायके अद्यामुकगोत्रके अमुकप्रेतके सपिंडीकरणश्राद्धमें या जो हस्तार्घ हम देते हैं सो हे प्रेत तेरेकुं प्राप्त होवो ऐसा बोलके जल प्रेतकी पत्रावलीके ऊपर डालना थोडा जल पात्रमें रखना पीछे अर्घपात्रकुं प्रेतके आसनके दहनी ओरमें रखना पीछे सव्य होके हाथ पांव

व्येतिमंत्रंपठित्वा प्रेतब्राह्मणकरेजलंपवित्रकंचदत्त्वापश्चात् अद्यामुकगोत्रस्यपितुरमुकप्रेत स्यसापिंडीकरणश्राद्धेएषहस्तार्घपात्रस्तेमयादीयतेतवोपतिष्ठताम् ॥ पात्रजलंअन्नपात्रोपरि दत्त्वापात्रंभूमौनिधाय ॥ सव्यंकृत्त्वा हस्तौपादौप्रक्षाल्याचम्य ॥ पुनरपसव्यं ॥ ततःपि तामहादिहस्तार्घपात्रत्रयंपृथक्पृथक्स्थापनं पश्चात्कर्म्मपात्रजलेनपूरयेत् शन्नोदेवीतिज लं। तिलोसीतितिलं पवित्रस्थो० इतिपवित्रं । गंधपुष्पंतूष्णींप्रक्षेप० ॥ ततःप्रेतार्घपात्रं

धोना आचमन करना फिर अपसव्य करना पश्चात् पितामह प्रपितामह वृद्धप्रपितामहका अर्घपात्र जुदा२ रखना कर्मपात्रका जल शन्नोदेवीति मंत्र बोलके भरना और तिलोसीति मंत्र बोलके तिल डालना पवित्र-

स्थो० मंत्र बोलके अर्घपात्रमें पवित्रा डालना गंध पुष्प धूप होके डालना ॥ पीछे पितामहार्घपात्रं स्ववाम-
हस्ते कृत्वा पवित्रा ब्राह्मणके हाथमें देना अथवा भोजनपात्रके ऊपर रखना पीछे उसी पवित्रके ऊपर और
अपने दक्षिणहाथसे दूसरा जल लेके या दिव्या मंत्र बोलके डालना पीछे दोनों हाथोंसे अर्घपात्र पकडके

भिन्नपितामहपात्रंवामहस्तेकृत्वा । पवित्रंब्राह्मणकरेवाभोजनपात्रेधृत्वा तदुपरिकिंचिदुद
कांतरं यादिव्येतिमंत्रेणदत्त्वा पश्चात् अद्यामुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्यसपिंडीकरणश्राद्धेअमु
कगोत्राऽस्मत्पितामहामुकशर्म्मा वा वर्म्मा वा गुप्तः एषहस्तार्घस्तेस्वधा इतिपितामहरू
पब्राह्मणस्यकरेजलंदत्त्वा पात्रंभूमौत्यजेत् ततः प्रपितामहपात्रंवामहस्तेकृत्वा पवित्रंब्राह्मण

पीछे अद्यामुकगोत्र अमुकप्रेतके सपिंडीकरणश्राद्धमें अमुकगोत्र अस्मत्पितामहामुक शर्मा ब्राह्मणकुं बोल-
ना वर्मा क्षत्रियकुं बोलना गुप्त वैश्यकुं बोलना ऐसा बोलके जो तुम हो सो तुमारेकुं या जो हस्तार्घ है सो
ते स्वधा और जो वो पितामहरूप पात्रब्राह्मणके हाथमें जल डालना कुछ बाकीभी रखना पीछे अर्घपात्रकुं

पात्रब्राह्मणके दक्षिण भागमें रखना पश्चात् प्रपितामहपात्र वाम हस्तमें करके पवित्रा ब्राह्मणके हस्तमें रखना अपात्रिक करे तो भोजनपात्रपै रखना पीछे दक्षिण हाथमें और जल लेके या दिव्या मंत्र बोलके दक्षिण हाथका जल पात्रब्राह्मणके हाथमें डालना पीछे दोनों हाथोंसे अर्घपात्रकुं पकडके अद्यामुकगोत्रके अमुकप्रेतके सपिंडीकरणश्राद्धमें अमुकगोत्र अस्मत्प्रपितामह अमुकशर्मा एष ते हस्तार्घः स्वधा ऐसा बोलके

करेदत्त्वा यादिव्येतिमंत्रेणकिंचिदुदकांतरंब्राह्मणकरेदत्त्वा पश्चात् अद्यामुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्यसपिंडीकरणश्राद्धेअमुकगोत्रास्मत्प्रपितामहामुकशर्म्मा एषतेहस्तार्घःस्वधा। इतिप्रपितामहब्राह्मणकरेजलंदत्त्वाअंगुष्ठद्वारा परंतुपात्रंभूमौत्यजेत्॥ ततः वृद्धप्रपितामहपात्रंवाम हस्तेकृत्वापवित्रंब्राह्मणकरेवाभोजनपात्रेधृत्वा तदुपरिकिंचिदुदकान्तरंयादिव्येतिमंत्रेणब्रा

प्रपितामहरूपी पात्रब्राह्मणके हाथमें अर्घपात्रका जल डालना किंचित् बाकी रखना अर्घपात्रका जल देना हो सो दक्षिण हाथके अंगूठेके द्वारा देना पीछे अर्घपात्रकुं पात्रब्राह्मण दहने भागमें रखना। पश्चात् वृद्धप्रपितामहका पात्र वाम हाथमें लेना पीछे पवित्रा पात्रब्राह्मणके हाथमें डालना पीछे यजमान अपने हाथसे

और जलकी चुल्लू भरके या दिव्या मंत्र बोलके जल ब्राह्मणके हाथमें डालना पीछे दोनों हाथोंसे अर्घ-पात्रकुं पकडके अद्यामुकगोत्र अमुकप्रेतके सपिंडीकरणश्राद्धमें अमुकगोत्र अमुकशर्म्मा वृद्धप्रपितामह एषते हस्तार्घः स्वधा ऐसा बोलके अंगुष्ठद्वारा अर्घपात्रका जल ब्राह्मणके हाथमें डालना किंचित् जल अर्घ-पात्रमें रखना पीछे अर्घपात्र पात्रब्राह्मणके आसनसे दहने भागमें भूमिपै रखना ऐसे सर्व अर्घपात्र रखना।

ह्मणकरेदत्त्वा पश्चात् अद्यामुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्यसपिंडीकरणश्राद्धेअमुकगोत्रास्मद्वृद्ध प्रपितामहामुकशर्म्माएषतेहस्तार्घःस्वधा इतिवृद्धप्रपितामहरूपब्राह्मणस्यकरेजलंदत्त्वा पात्रंभूमौत्यजेत् ॥ ततः प्रेतार्घपात्रावशिष्टजलंभागत्रयंकृत्वापितामहादिपात्रत्रयेपृथक्पृथक्

पश्चात् प्रेतार्घपात्रमें जो शेष जल है सो जल तृतीयभागको पितामहके अर्घपात्रमें डालना पीछे एक पांतिको प्रपितामहके अर्घपात्रमें डालना पीछे एक पांतिको जल वृद्धप्रपितामहके अर्घपात्रमें डालना अर्घ-पात्रोंमें प्रेतार्घपात्रको जल डाले जब ये समानाः येक तो यो मंत्र बोलना पीछे ये समानाः समनसो जीवा

यो मंत्र बोलना पीछे समानाहृदा मंत्र बोलना ये तीन मंत्र बोलके एक [illegible] णमें जल डालना तृतीय भागका पीछे ये समानाः मंत्रयय बोलके पीछे एष वोनुगतः प्रेतः यो बोलके संसृजंतु० पुनर्येस-

मेलयेत् ॥ तत्रमन्त्राः ॥ येसमानाःसमनसः पितरोयमराज्येतेषांल्लोकः स्वधानमोयज्ञोदेवेषुक ल्पतां ॥ येसमानाः समनसोजीवेषुमामकास्तेषांश्रीर्मयिकल्पतां ॥ अस्मिँल्लोकेशत ँ समाः संसृजंत्वापपृथिवीवायुरग्निःप्रजापतिःसंसृजध्वंपूर्वाभिःपितृभ्यःसहसमानीवाकूतिः ॥ समानाहृदासमानमस्तुयोमनोयथावःपितृभिःसहासति॥संगच्छध्वंसंवदध्वंसोवामनसिजा नतां ॥ दिवाभागंयथासर्वेसंजानतामुपासते । अनेनमंत्रेणपितामहपात्रेतृतीयभागंजलंक्षिपे त् ॥ एषवोनुगतःप्रेतोयेपितरस्त्वंददामिवः ॥ शिवमस्त्वितिशेषाणांजायतांचिरंजीविनः ॥ संसृजंतु० पुनर्येसमानाइतिमंत्रेणद्वितीयभागंजलंप्रपितामहपात्रेक्षिपेत् ॥ पुनःयेसमानेति

माना ये मंत्र बोलके द्वितीय भागको जल प्रपितामहके अर्घपात्रमें डालना पश्चात् ये समानेति मंत्र बोले

और संसृजंत्वापेति एषवोनुगत इति मंत्र बोलके प्रेतार्घपात्रका जल तृतीय भागका जल वृद्धप्रपितामहके अर्घपात्रमें डालना पश्चात् सव्य होके आचमन करके फिर अपसव्य होके यजमान प्रेतार्घपात्र उठाके प्रेत-ब्राह्मणके वाम पसवाडेमें प्रेताय स्थानमसीति बोलके पात्रकुं न्युब्जी नाम अधोमुख करके रख देना पीछे

संसृजंत्वापेति एषवोनुगतइति मन्त्राणिपठित्वा। प्रेतार्घपात्रस्थतृतीयभागंजलंवृद्धप्रपिता महपात्रेक्षिपेत् ॥ सव्येनाचम्य। ततोपसव्यं ॥ प्रेतहस्तार्घपात्रंप्रेतब्राह्मणवामपार्श्वे प्रेताय स्थानमसीतिपठित्वा न्युब्जीकुर्यात् तदुपरिपवित्रंनिक्षिप्य दक्षिणादानपर्य्यंतंतत्पात्रंनोद्ध रेन्नचालयेत् अथजलक्षीरदधिघृततंदुलतिलसर्षपकुशत्रयाणिपुष्पाणिदीपनैवेद्यतांबूलपूगी फलवस्त्रादिभिःप्रेतब्राह्मणंपूजयेत् नमोस्त्वनन्तायेतिमंत्रेण पश्चाद्धस्तेजलमादाय अद्यामु

अर्घपात्रके ऊपर पवित्रा जो पात्रब्राह्मणके हाथमें डाला था सो रख देना। पीछे इसी पात्रकुं दक्षिणादान करे तहांतक हलाना चलाना नहीं परंतु पीछे प्रेतब्राह्मणका पूजन इन जिनसोंसे करना जल, क्षीर, दधि, घृत, चावल, तिल, सर्षप, कुशात्रय, पुष्पाणि, दीप, नैवेद्य, तांबूल, पूगीफल, वस्त्रादि नमोस्त्वनंताय मंत्र

बोलके पीछे यजमान अपने हाथमें जल लेके अद्यामुकगोत्रके अमुक प्रेतके सपिंडीकरणश्राद्धमें जल, गंध, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्यादीनि इदं नाम यो जो अर्चन तेरेकुं हम देते हैं सो तेरेकुं प्राप्त होवो । सव्य होके हस्त पग धोके पीछे अपसव्य करके यजमान है सो वृद्धप्रपितामहके अर्घपात्रमें स्थित जो

कगोत्रस्याऽमुकप्रेतस्यसपिंडीकरणश्राद्धे जलगंधाक्षतपुष्पधूपदीपनैवेद्यादीनीदमर्चनंतेम
यादीयतेतवोपतिष्ठताम् सव्यंआचम्य ॥ हस्तोपादौप्रक्षाल्य । ततोपसव्यं ॥ वृद्धप्रपिताम
हार्घपात्रस्थंजलादि प्रपितामहपात्रेस्थापयेत् । ततः प्रपितामहपात्रस्थजलादिपितामहार्घ
पात्रेक्षिपेत् पश्चात्पितामहार्घपात्रंउत्तानं प्रपितामहपात्रेस्थापयेत् ततःपितामहप्रपितामह

जलादि प्रपितामहके अर्घपात्रमें रखना पश्चात् प्रपितामहके अर्घपात्रमें स्थित जो जलादि सो पितामहके अर्घपात्रमें रखना पश्चात् पितामहका अर्घपात्र सूधाका सूधा प्रपितामहके पात्रमें रखना पीछे पितामहप्र-

पितामहके दोनों पात्र सूधेके सूधे वृद्धप्रपितामहके पात्रमें रखना पश्चात् तीनों पात्रोंकुं उठाके पितृभ्यः स्थानमसीति ऐसा बोलके पितामहके आसनके वाम भागमें अधोमुख स्थापन करना ॥ पीछे इसी पात्रकुं दक्षिणादानपर्यंत हलाना चलाना नहीं ततः पश्चात् पितामहादिक जो पात्रब्राह्मणत्रय है तिनोंका पूजन

योरर्घपात्रद्वयंउत्तानंवृद्धप्रपितामहपात्रेस्थापयेत्। पश्चात् पात्रत्रयं पितृभ्यःस्थानमसीतिप ठित्वा पितामहासनवामपार्श्वेन्युब्जीकृत्वास्थापयेत् दक्षिणादानपर्य्यंतंनोद्धरेन्नचालयेत् । ततः पितामहादिब्राह्मणान् गन्धादिभिःपूजयेत् नमोस्त्वनन्तायेतिमंत्रेण । ततः मोटकति लजलमादाय अद्यामुकगोत्रस्याऽमुकप्रेतस्यसपिंडीकरणश्राद्धेअमुकगोत्राःपितामहप्रपिता महवृद्धप्रपितामहाअमुकामुकशर्माणः इदमर्च्चनं० एतानि अत्रपत्राक्षतगंधपुष्पधूपदीपनैवे

करना नमोस्त्वनंतायेति मंत्र बोलके पश्चात् मोटक तिल जल हाथमें लेके अद्याऽमुकगोत्रस्याऽमुकप्रेतस्य सपिंडीकरणश्राद्धमें अमुकगोत्राः पितामहप्रपितामहवृद्धप्रपितामहाऽमुकाऽमुकशर्माणः जिनकुं यो जो अर्चन

है जिसी इतनी वस्तु पत्र, अक्षत, गंध, पुष्प, धुप, दीप, नैवेद्यादीनि यथाभाग वासांसि तुमारी अक्षय तृप्तिके निमित्त त्रय विभाग करके तेभ्यः स्वधा ऐसा बोलके पितामहादिकोंके अर्पणका जल छोडना ॥ पश्चात् सहत डाला हुवा अन्न जिसी पात्रमें होवे उसीके मध्यसे अन्न लेके प्रेतकी पत्तलमें देना पन प्रथम

द्यादीनियथाभागंवासांसिअथाक्षयतृप्तिहेतोस्त्रेधाविभज्ययुष्मभ्यंस्वधा ततोमधुमयान्नंपात्रं आलभ्य ॥ प्रेतायान्नंदद्यात् ॥ ततःपात्रब्राह्मणप्रेतरूपस्यचतुर्दिशंचतुष्कोणंजलेनमंडलं कुर्यात् अपरंपितामहादित्रयरूपपात्रब्राह्मणानांचतुर्दिशंचतुष्कोणजलमण्डलानिकृत्वा तदुपरिपात्रावलींदत्त्वाऽन्नंपरिविष्य पश्चात् प्रेतब्राह्मणस्यभोजनपात्रेघृतंजलंअन्नंइक्षुरसंपात्रांतरोदुत्थाप्य पश्चात् प्रेतब्राह्मणभोजनपात्रं व्यस्ताभ्यांन्युब्जाभ्यांहस्ताभ्यांस्पृष्ट्वा पृथिवीते

प्रेतपात्रब्राह्मणके चोगडद जलका मंडल करना पत्रावली बीचमें लेना परंतु ऐसेही पितामहादि पात्र ब्राह्मणोंके चोगडद जलका मंडल कर पत्रावलीसहित पश्चात् पत्रावलीमें अन्न परोसना पीछे प्रेतब्राह्मणके भोजनपात्रमें घृत, जल और अन्न, इक्षुरस पात्रोंमें स्थापन करके रखना पश्चात् प्रेतब्राह्मणके पत्रावलीके पूर्व-

पश्चिमभागमें ऊंधे हाथ पूर्वभागमें दक्षिणहाथसे स्पर्श रखना पश्चिम भागमें वाम हाथसे स्पर्श रखना वाम हाथके ऊपर कर हाथ लगाना पछि पृथिवी ते पात्रं० यो मंत्र बोलके इदं विष्णु० मंत्र बोलके पीछे कृष्ण-कव्यमिदं रक्ष ऐसा बोलके पश्चात् प्रेतपात्रब्राह्मणका अंगुष्ठ पकडके इदमन्नं ऐसा बोलके अन्नपै रखना

पात्रंइतिमंत्रंपठेत् इदंविष्णुरितिमन्त्रद्वयंपठित्वा कृष्णकव्यमिदंरक्षइतिपठित्वा स्वदक्षिण हस्तेनप्रेतब्राह्मणस्यदक्षिणहस्तांगुष्ठंधृत्वा इदमन्नं इतिअन्ने इमाआपः इतिजले इदमाज्यं इतिघृते। इदंसर्वंहविःइतिपुनरन्ने इदंऐक्षवं इतिइक्षुरसे एवमंगुष्ठावगाहनंकृत्वाअपहतासुरा० तिलान्अन्नोपरिक्षिपेत् दक्षिणहस्तेमोटकतिलजलमादाय। अद्यामुकगोत्रामुकप्रेतइदमन्नंसो

इमा आपः यो जल है इदमाज्यं यो घृत है इदं हवि ये सर्व अन्न हवि है। इदं ऐक्षवं यो ईखका रस है ऐसे अंगुष्ठावगाहन करवाना पीछे अपहतेति मंत्र बोलके भोजनपै तिल डालना पीछे हाथमें मोटक तिल जल

लेके यजमान बोले अद्यामुकगोत्र अमुकप्रेत इदं अन्नं यो जो अन्न सोपकरण मैं देता हूं सो तेरेकुं प्राप्त होवो । ऐसा बोलके जल ब्राह्मणके हाथमें डालना । पीछे सव्य होके हाथ पग धोके आचमन करना हरिका स्मरण करना पुनः अपसव्य होना पीछे पितामहादिकोंके पत्रावलियोंमें अन्न परोसना पीछे जल-

पकरणंमयादीयतेतवोपतिष्ठतां । सव्येनहस्तौपादौप्रक्षाल्याचम्य । हरिंस्मरेत् । ततोऽपसव्यं पितामहादिपात्रेअन्नंपरिविष्य जलघृतहविरिक्षुरसंदत्त्वापश्चात्पृथिवीतेपात्रमितिमंत्रंपठेत्पुनः इदंविष्णुरितिमंत्रंजपेत् कृष्णकव्यमिदंरक्षइतिपठित्वा पितामहरूपपात्रब्राह्मणस्यांगुष्ठंस्वहस्ते नधृत्वा इदमन्नं इत्यन्ने इमाआपः इतिजले इदमाज्यं इतिघृते इदंसर्वंहविः इतिपुनरन्ने इदमै

पात्र, घृतपात्र, हविपात्र, इक्षुरसपात्र रखके पितामहकी पत्रावलीकुं ऊंधे हाथ विपरीत धरके । ॐ पृथिवी ते पात्रं० यो मंत्र बोलके इदं विष्णु० मंत्र बोलके कृष्णकव्यमिदं रक्ष बोलके अपना दहना हाथ उठाके पीछे पितामहरूप पात्रब्राह्मणका अंगुष्ठ पकडके इदमन्नं ये बोलके अन्नपै रखना इमा आपः यो जल है

इदमाज्यं यो घृत है इदं सर्वं हविः यो सर्व अन्न हविरूप है इदमैक्षवं यो ईखका रस है ऐसे अंगुष्ठसे अव-
गाहन करवाके अंगुठा छोडना पन अपना वाम हाथ पत्तलपैसे नहीं उठाना पछि अपने दक्षिण हाथमें तिल

क्षवं इति इक्षुरसे इत्यवगाहनंकृत्वा अपहतेतिअन्नोपरितिलान्दत्त्वा पश्चात् यजमानःस्वद
क्षिणहस्ते मोटकतिलजलमादाय। अद्यामुकगोत्रस्याऽमुकप्रेतस्यसपिंडीकरणश्राद्धेअमुक
गोत्रपितामहामुकशर्मणे इदमन्नंसोपकरणंतेस्वधा । ततःप्रपितामहपात्रंव्यस्ताभ्यांन्युब्जा
भ्यांहस्ताभ्यांस्पृष्ट्वा ततःपृथिवीतेपात्रं इतिमंत्रंपठेत् इदंविष्णुरितिमंत्रंपठेत् कृष्णकव्यमिदं
रक्षेतिपठेत् वामहस्तादत्यजन्पात्रावलीस्वदक्षिणहस्तेन प्रपितामहरूपपात्रब्राह्मणस्यांगुष्ठं

लेके अपहता सुरा यो मंत्र बोलके तिल अन्नके ऊपर डालना पश्चात् यजमान मोटक तिल जल लेके अ-
द्यामुकगोत्रस्याऽमुकप्रेतका सपिंडीकरण श्राद्धमें असुकगोत्र पितामह असुकशर्म्मणे इदं अन्नं सोपकरणं ते

स्वधा ॥ पश्चात् प्रपितामहके पात्रकुं ऊंधे हाथोंसे विपरीत स्पर्श करना दक्षिण हाथसे पत्रावलीका पूर्वभाग स्पर्श रखना और वाम हाथसे पत्रावलीका पश्चिमभाग स्पर्श रखना पीछे पृथिवी ते पात्रं० यो मंत्र बोलना पीछे इदं विष्णु० यो मंत्र बोलना । कृष्णकव्यमिदं रक्ष यो बोलके पीछे यजमान वाम हाथ तो पत्राव-लीके लगाय रखे और दक्षिण हाथ उठाके प्रपितामहरूप पात्रब्राह्मणका अंगुष्ठ पकडके इदमन्नं यो अन्न

गृहीत्वा इदमन्नं इत्यन्ने इमाआपः इतिजले इदंसर्वंहविः इतिपुनरन्ने इदमैक्षवं इतिइक्षुर से हस्तेतिलमादाय अपहतेति अन्नोपरितिलान्विकीर्य मोटकतिलजलान्यादाय अद्यामुक गोत्रस्यामुकप्रेतस्यसपिंडीकरणश्राद्धे अमुकगोत्रास्मत्प्रपितामहामुकशर्म्मणे इदमन्नंसोप

है इमा आपः यो जल है इदं हविः यो सर्व अन्न हविरूप है इदमाज्यं यो घृत है इदमैक्षवं यो ईखका रस है । ऐसे अंगुष्ठसे अवगाहन करवाके पीछे यजमानः हाथमें तिल लेके अपहतेति मंत्र बोलके तिल भोज-नके अन्नपै डालना पीछे मोटक तिल जल हाथमें लेके अद्यामुकगोत्रके अमुकप्रेतके सपिंडीकरणश्राद्धमें

असुकगोत्र प्रपितामह असुकशर्माकुं यो अन्नं सोपकरणं ते स्वधा। ऐसा बोलके जल तिल पात्रब्राह्मणके हाथमें डालना कदाचित् अपात्रिकश्राद्ध करे तो चटरूप ब्राह्मणके ऊपर जल तिल डालना। परंतु ऐसेही वृद्धप्रपितामहके भोजनपात्रकुं ऊंधे हाथोंसे स्पर्श करके पूर्ववत् ॐ पृथिवीते पात्रं० यो मंत्र बोलके और

करणंतेस्वधा एवंवृद्धप्रपितामहस्य भोजनपात्रं व्यस्ताभ्यांसमस्ताभ्यांपाणिभ्यांस्पृष्ट्वा पृथिवीतेपात्रं इतिमंत्रंपठित्वा इदंविष्णुरितिपठित्वा कृष्णकव्यमिदंरक्षेतिपठित्वा पात्रब्राह्मणस्यदक्षिणहस्तांगुष्ठंस्वहस्तेधृत्वा इदमन्नं इत्यन्ने इमाआपः इतिजले इदमाज्यं इतिघृते इदंहविः इतिपुनरन्ने इदमैक्षवं इत्यैक्षवे पात्रब्राह्मणांगुष्ठावगाहनंकृत्वा अपहतासुरा

इदं विष्णु यो मंत्र बोलके और कृष्णकव्यमिदं रक्ष यो बोलके वाम हाथसे पत्रावली स्पर्श रखना और दक्षिणहाथसे पात्रब्राह्मणका अंगुष्ठ पकडके इदमन्नं यो अन्न है इमा आपः यो जल है इदमाज्यं यो घृत है इदं हविः यो सर्व अन्न हविरूप है इदमैक्षवं यो ईखका रस है ऐसे पात्रब्राह्मणको अंगुष्ठावगाहन करवाके

यजमान मोटक तिल जल दक्षिणहाथमें लेके अद्याऽमुकगोत्र अमुकप्रेतका सपिंडीकरणश्राद्धे अमुकगोत्र अमुकशर्म्मा वृद्धप्रपितामह इदं अन्नं सोपकरणं ते स्वधा ऐसे बोलके तिल जल पात्रब्राह्मणके हाथमें डालना

रक्षाꣳसि इतिभोजनान्नोपरितिलान्निक्षिपेत् ॥ ततःमोटकतिलजलान्यादाय अद्याऽमुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्यसपिंडीकरणश्राद्धेअमुकगोत्रवृद्धप्रपितामहामुकशर्म्मा इदमन्नंसोपकरणं तेस्वधा इदंतेप्रत्यापोशानं यथासुखं जुषध्वंआपोशानंदद्यात् ॥ ततः सव्येन मधुवातादिपठनं ॥ ॐमधुवाताऋतायतेमधुक्षरंतिसिंधवः ॥ माध्वीर्नःसंत्वोषधीः ॥ मधुनक्तमुतोषसोमधुमत्पार्थिवꣳरजः॥मधुद्यौरस्तुनःपिता ॥ मधुमान्नोवनस्पतिर्मधुमा ꣳ अस्तुसूर्यः ॥ माध्वीर्गा

पश्चात् प्रेतपात्रब्राह्मणकुं आपोशान देना पितामहकुं प्रपितामहकुं वृद्धप्रपितामहकुं इदं ते प्रति आपोशानं यथा-सुखं जुषध्वं ऐसे आपोशान देना पश्चात् सव्य होके मधुवातादि ऋचोंका पाठ करना मधुशब्द वारत्रय उच्चार

करना पुरुषसूक्तका पाठ करना और पुराणस्तोत्रादिकोंका पाठ करना पश्चात् अपसव्य होके प्रेतपात्रब्राह्म- णकी भोजनपत्रावलीसे दक्षिणदिशामें विकिर देना विकिरासन देनेका प्रमाण बृहस्पति कहता है आभ्युदयि- कश्राद्धमें पूर्वदिशामें विकिर देना पार्वणश्राद्धमें पश्चिमदिशामें विकिर देना तीर्थश्राद्धमें उत्तरदिशामें विकिर

वोभवंतुनः ॥ मधुर्मधुर्मधुरितित्रिःपठित्वा । सहस्रशीर्षापठनं अन्येपुराणस्तोत्राणिपठित्वा । ततःअपसव्येनदक्षिणस्यांदिशिविकिरासनंदद्यात् ॥ तथाचबृहस्पतिः ॥ आभ्युदयिकेपूर्व्वेस्यात्पार्व्वणेपश्चिमेभवेत् ॥ तीर्थादावुत्तरेकुर्य्यात्प्रेतश्राद्धेतुदक्षिणं ॥ जलसहितकुशत्रयासनंविकिरार्थं तत्रअसंस्कृतप्रमीतानामित्यासनं ॥ अग्निदग्धाश्चयेजीवाइत्यादिविकि

देना प्रेतश्राद्धमें दक्षिणमें विकिर देना जलसे जमीन प्रोक्षण करके दर्भा त्रय विकिरासनकी रखना रखते वखत, असंस्कृतप्रमीतानां त्यागिनां कुलभागिनां । उच्छिष्टभागदेयानां दर्भेषु विकिरासनं ॥ यो मंत्र बोलके आसन देना ॥ अग्निदग्धा वा अनग्निदग्धा ये जीवा ये प्रदग्धाः कुले मम । भूमौ दत्तेन तृप्यंतु तृता यांतु परां

गतिं ॥ यो मंत्र बोलके विकिर देना पीछे सव्य होके हाथ पाव धोना आचमन करना हरिका स्मरण करना पीछे पुनः अपसव्य होना पीछे प्रेतब्राह्मणकुं पूछके कुरले करनेके वास्ते जल देना पीछे स्वदित-मिति पृच्छेत् ब्राह्मणवाक्य स्वदितमिति पश्चात् पितामहादिरूप पात्रब्राह्मणोंकुं जल देना पीछे पूछना तृप्त हुये जब ब्राह्मण बोले तृप्त हो गये फिर यजमान ब्राह्मणोंकुं पूछे शेष अन्नका मैं क्या करूं तब ब्राह्मण

रंदद्यात् ॥ सव्येनहस्तौपादौप्रक्षाल्यद्विराचम्य ॥ हरिंस्मृत्वा ॥ पुनःअपसव्यं प्रेतब्राह्मणायपृष्ट्वागंडूषजलंदद्यात् ॥ स्वदितमितिपृच्छेत् ॥ स्वदितमिति । ततःपितामहादिद्विजान् प्रतिजलदानम् । तृप्ताःस्थेतिपृच्छेत् ॥ तृप्ताःशेषमन्नंकिंक्रियताम् ॥ इष्टैःसहभुज्यतां पिंडमहंकरिष्ये कुरुष्वेत्यनुज्ञातः स्थानद्वयेपूर्व्वंपरेवेदीद्वयंकृत्वा विश्वेदेवेभ्यः पूर्व्वंदक्षिणो

बोले तुमारे प्यारे हैं तिनकुं साथ लेके जीम लेना । पीछे यजमानः बोले पिंड मैं करूं अच्छा कर या आज्ञा ब्राह्मण देवे दो जगह द्वे वेदी बनावे विश्वेदेवतोंसे पूर्वकी तरफ प्रेतवेदी बनाना । दक्षिणउत्तरकी तरफ लंबी पूर्वपश्चिमकी तरफ अर्द्ध हाथ चौडी और प्रेतकी वेदीसे पूर्वकी तरफ पित्रेश्वरकी वेदी एक हस्त

प्रमाण चौडी लंबी चतुर अंगुल ऊंची दक्षिण भाग नीची किंचित् करना पश्चात् वेदीके ऊपर पंचगव्य डालना अयोध्या मथुरा माया० यो मंत्र बोलके वेदी दोनोंके ऊपर जल छिडकना पीछे हाथमें दर्भपिंजुली एक लेके नीचेसे दक्षिणहाथसे पकडना ऊपरसे वामे हाथसे पकडके प्रादेशमात्र क्या अष्ट नव अंगुल

त्तरायतांप्रेतवेदीं तत्पूर्व्वे पूर्वापरायतां पितामहादिवेदींकृत्वा ॥ ततःपंचगव्येनजलेनवा भ्युक्ष्य हस्तेदर्भपिंजुलीमादाय अधोभागेधृतदक्षिणहस्तेनोर्ध्वभागेधृतवामहस्तेन अपहता सुरारक्षा २ सिवेदिषदः इतिमंत्रेणवेद्यांरेखाकरणंप्रादेशमात्रे । अन्यदर्भेणअन्यवेद्यांरेखा करणंदर्भपिंजुलींउत्तरस्यांक्षिपेत् ॥ उभयोपर्य्यंगारंभ्रामयित्वा ॥ येरूपाणिप्रतिमुंचमा

प्रमाण वेदीके ऊपर रेखा करना अपहता० मंत्र बोलके पीछे दर्भाकी गुच्छीकुं उत्तरदिशाकी तरफ डालना पीछे दूसरी दर्भपिंजुली और लेना पूर्वकी तरह हाथोंसे पकडके प्रादेशमात्र अष्ट नव अंगुलप्रमाण अपहता सुरा० मंत्र बोलके रेखा करनी दर्भाकी गुच्छी उत्तरदिशामें डालनी पीछे रेखाके ऊपर ये रूपाणि प्रति०

यो मंत्र बोलके उल्मुकः नाम जगतोटमीदो रेखापै भ्रमाके वेदीके दक्षिणदिशामें डालना और इस माफक दूसरी वेदीके ऊपर भ्रमाना ॥ पीछे अयोध्या मथुरा माया० मंत्र बोलके दोनों वेदियोंके ऊपर जल डालना पीछे दर्भा एक लेके उसीको मूलकी जगहसे तोडके बाकी रहे सो दर्भा प्रेतकी वेदीरेखामें लंबी रखना पी-

नाऽसुराःसंतःस्वधयाचरंतिपुरापुरोनिपुरोयेभरंत्यग्निष्टाँऽल्लोकान्प्रणुदास्मच इत्युल्मुकभ्रामणम् ॥ अयोध्यामथुरामायेतिवेदिकासेचनं ॥ छिन्नमूलकुशास्तरणंतत्र ॥ सव्यमाचम्य ॥ देवताभ्य इतित्रिर्जपित्वा ॥ ततोऽपसव्येनप्रेतपिंडासनावनेजलंदद्यात् ॥ चतुःपात्रेजलतिलगंधपुष्पाणिक्षिप्त्वाएकंपात्रंवामहस्तेधृत्वादक्षिणेनमोटकतिलजलान्यादाय॥अद्यामुकगो

छे दर्भा त्रय लेके मूलकी जगहसे जरा तोडके दर्भा त्रय पित्रेश्वरोंकी वेदीकी रेखामें दक्षिणाग्रभाग करके लंबी रखना । पश्चात् सव्य होके आचमन करके देवताभ्यः० यो मंत्र त्रय वार बोलना पीछे अपसव्य होके चार अर्घपात्र बनाना पात्रोंमें मंत्रोंसे जल तिल दर्भाका पवित्रा गंध पुष्प डालके प्रथम एक प्रेतपात्र

वाम हाथमें लेना दक्षिण हाथमें मोटक तिल जल लेके अद्यामुकगोत्र पितरमुकप्रेतका प्रेतपना निवृत्त होनेके अर्थ और स्वर्गादि उत्तमलोककी प्राप्तिकी कामना करके यो जो अर्घपात्रमें जल है सो तेरे पिंडके आसनकी रेखामें दर्भा है तिसीपै मैं डालता हूं सो तेरेकुं प्राप्त होवो ऐसा बोलके किंचित् जल अर्घपात्र-

त्रपितरमुकप्रेतप्रेतत्वविमुक्तिकांक्षयास्वर्गाद्युत्तमलोकप्राप्तिकामः इदंपिंडासनावनेजनजलंते मयादीयतेतवोपतिष्ठताम् ॥ इतिप्रथमप्रेतवेद्यांच्छिन्नमूलकुशोपरिअवनेजनजलंदद्यात् ॥ सव्येनहस्तौपादौप्रक्षाल्याचम्य ॥ पुनः अपसव्यंकृत्वा द्वितीयंअर्घपात्रंवामहस्तेधृत्वा दक्षिणहस्तेनमोटकतिलजलान्यादाय अद्यामुकगोत्रस्यपितुरमुकप्रेतस्य सपिंडीकरणनिमित्तकश्राद्धपिंडस्थानेऽमुकगोत्रपितामहामुकशर्म्मन्नत्राऽवनेनिक्ष्वतेस्वधा इतिद्वितीयवेद्यां

मेंसे डालके अंगुष्ठके रस्तेसे पीछे किंचित् शेष जल रखके अर्घपात्र वेदीकी पूर्व तरफमें रखना पीछे सव्य होके हाथ पांव धोके आचमन करके पीछे फिर अपसव्य होके द्वितीय अर्घपात्रकुं वाम हाथमें लेना दक्षिण हाथमें मोटक तिल लेके अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतका सपिंडीकरणनिमित्तक श्राद्धके पिंडस्थानमें

अमुकगोत्र पितामहामुक शर्म्मन् यहां पिंडस्थामें अवनेजनजल देते हैं सो ते स्वधा ऐसा बोलके दूसरे पित्रेश्वरोंकी वेदी है तिसीपै दर्भाके मूलपै अर्घपात्रका किंचित् जल डालना दक्षिणहाथके अंगुष्ठद्वारा और किंचित् जल रखके वेदीसे पूर्वकी तरफ अर्घपात्र रखना ऐसेही पितामहकुं ॥ तीसरा अर्घपात्र वाम हाथमें

आस्तृतकुशमूलसन्निधानेपितामहायाऽवनेजनजलंदद्यात् ॥ किंचित्जलसहितंअर्घपात्रंवे दीवामभागेस्थापयेत् ॥ एवंप्रपितामहस्य ॥ तृतीयंपात्रंवामहस्तेकृत्वा दक्षिणहस्तेनमोट कतिलजलान्यादाय अद्याऽमुकगोत्रस्याऽमुकप्रेतस्यपितुःसापिंडीकरणनिमित्तकश्राद्धपिंड स्थानेअमुकगोत्रप्रपितामहामुकशर्म्मन्नत्राऽवनेनिक्ष्वतेस्वधा इतिद्वितीयवेद्यां आस्तृतकुश मध्येप्रपितामहायाऽवनेजनजलंदद्यात् किंचित्जलयुतंअवनेजनपात्रंवेदीवामभागेस्थाप

लेना दक्षिणहाथमें मोटक तिल जल लेके अद्याऽमुकगोत्रस्यामुकप्रेतका सपिंडीकरणनिमित्तक श्राद्धमें अमुकगोत्र प्रपितामह अमुकशर्म्मन् यहां पिंडस्थानमें अवनेजनजल देते हैं सो ते स्वधा सो आपकुं प्राप्त होवो ऐसा बोलके द्वितीय वेदीके ऊपर रेखामें जो दर्भा है उसी दर्भाके मध्यभागमें अर्घपात्रका किंचित्

जल डालना अंगूठे होके और किंचित् जलसहित अर्घपात्रकुं वेदीके पूर्वभागमें रखना। ऐसाही वृद्धप्रपि-
तामह० ॥ चतुर्थ अर्घपात्रं वाम हाथमें लेके दक्षिण हाथमें मोटक तिल जल लेके अद्याऽमुकगोत्रस्याऽमुक-
प्रेतका सपिंडीकरणनिमित्तक श्राद्धमें अमुकगोत्र वृद्धप्रपितामह अमुकशर्मन् यहां पिंडस्थानमें अवनेजनजल मैं

येत् ॥ एवंवृद्धप्रपितामहाय ॥ चतुर्थपात्रंवामहस्तेकृत्वा दक्षिणेनमोटकतिलजलान्यादाय
अद्याऽमुकगोत्रस्याऽमुकप्रेतस्यसपिंडीकरणनिमित्तकपिंडस्थाने अमुकगोत्रवृद्धप्रपिताम
हामुकशर्म्मन्नत्रावनेनिक्ष्वतेस्वधा इतिद्वितीयवेद्यांआस्तृतकुशाग्रभागेवृद्धप्रपितामहायाऽ
वनेजनजलंदद्यात् पात्रंकिंचिज्जलयुतंवेदीवामभागेस्थापयेत् ततःसर्व्वंव्यंजनतिलजलम

देता हूं सो ते स्वधा आपकुं प्राप्त होवो ऐसा बोलके अर्घपात्रका किंचित् जल अंगुष्ठद्वारा दर्भाके अग्रभागके
समीप देना नाम डालना और किंचित् जलसहित अर्घपात्रकुं वेदीके पूर्वभागमें रखना मूले वेदीवामभागे
स्थापयेत् ऐसा लिखा है परंतु इसीका अर्थ ये है कि यजमानके आसनसे वामभागमें रखना इसवास्ते
वेदीका पूर्वभाग आवता है ॥ पश्चात् सर्व व्यंजन मिलाके और तिल जल मिलाके सहत घृत मिलाके

पाकान्न प्रेतका है तिसीका एक पिंड प्रेतका बनावे और सर्व व्यंजन तिल जल सहत घृत मिलाके और जलमें जो आहुति दिया था तिसमेंका शेषान्न मिलाके पितामहादिकोंका त्रयः ३ पिंड बनाना पीछे चारों ४ पिंडोंकुं सहत घृतमें लपेटना पीछे प्रथम प्रेतके पिंडकुं यजमान है सो अपने वाम हाथकुं दक्षिण

ध्वाज्यसहितान्नेनप्रेतपिंडंविधाय । सर्वव्यंजनजलमध्वाज्यतिलहुतशेषान्नेन पितामहादीनां पिंडत्रयंनिर्माय । चतुःपिंडान्मधुघृताभ्यामभिघार्य । प्रथमंप्रेतपिंडं सव्योपगृहीतमोटक तिलजलसहितदक्षिणहस्तेचादाय । अद्यामुकगोत्रपितरमुकप्रेतसापिंडीकरणश्राद्धे एषपिंड स्तेमयादीयतेतवोपतिष्ठताम् इतिप्रेतवेद्यांकुशोपरिप्रेतपिंडंदद्यात् । ततः लेपभागादिकं करप्रोक्षणंदद्यात्॥ सव्येनआचमनं॥ पुनरपसव्यम्॥ अक्षतंगृहीत्वाउदङ्मुखीभूयभास्वर

हाथको चिपाके दक्षिण हाथसे पिंड उठाके कर्मपात्रके जलके साथ लेके अद्याऽमुकगोत्राऽमुकप्रेत सपिंडी-करणश्राद्धमें यो जो एक पिंड तेरेकुं हम देते हैं सो तेरेकुं प्राप्त होवो ऐसा बोलके प्रेतकी वेदीपे कुशा रखी है वहां अंगूठा होके रखना । पीछे दर्भा पिंडके नीचे जो है जहां हाथके लगा हुवा अन्न पूंछ डालना

इसीसे लेपभागके भोगनेवाले जीव हैं सो तृप्त होते हैं। पीछे सव्य होके आचमन करना फेर पीछे अपसव्य होके हाथमें अक्षत लेके उत्तरकी तरफ मुख करके भास्वरमूर्ति पिताका ध्यान करना अत्र प्रेतमादयध्वं यथाभागमावृषायिषत् यो मंत्र बोलके पिंडके ऊपर अक्षत डालने पीछे किंचित् शेष जलयुत प्रेतपात्रं हस्ते गृहीत्वा वामे हाथमें लेके दक्षिण हाथमें मोटक तिल जल लेके अद्यामुकगोत्र अमुकप्रेत यो जो

मूर्तिंपितरंध्यायेत् ॥ अत्रप्रेतमादयध्वंयथाभागमावृषायिषत् ॥ इतिमंत्रेणपिंडोपरिअक्षतं दद्यात् ततः किंचित्शेषजलयुतंप्रेतार्घपात्रंहस्तेगृहीत्वा अद्यामुकगोत्राऽमुकप्रेतइदंपिंडे प्रत्यवनेजनजलंतेमयादीयतेतवोपतिष्ठताम्। पात्रंतत्रैवस्थाप्यं। सव्येनहस्तौपादौप्रक्षाल्य आचम्य॥ पुनरपसव्यंकृत्वा॥ पुनर्मोटकादिसव्योपगृहीतदक्षिणहस्तेनापिंडत्रयमध्यतःएकं

पिंडके ऊपर हम अवनेजनजल देते हैं सो तेरेकुं प्राप्त होवो ऐसा बोलके पिंडके ऊपर अंगुष्ठमार्ग जल डालना अर्घपात्र जहांसे उठाया तहां रखना पश्चात् सव्य होके हाथ पांव धोके आचमन करना फिर पीछे अपसव्य होना ॥ पीछे सव्योपगृहीतः नाम मोटक तिल जलसहित जो दक्षिणहस्त है तिसके वामा हाथ

चिपाके दक्षिणहस्तसे पितामहादिकोंके पिंडत्रय है तिनके मध्यसे एक पिंड उठाके अद्यामुकगोत्रका अमु-
कप्रेतका सपिंडीकरणनिमित्तक अमुकगोत्र पितामहामुकशर्म्मन् यो जो पिंड हम देते हैं सो ते स्वधा आपके
अर्थ है ऐसा बोलके द्वितीय वेदीके ऊपर रेखामें दर्भा रखी है जहां दर्भाके मूलपै प्रथम अवनेजन किया

पिंडंचादाय अद्यामुकगोत्रस्याऽमुकप्रेतस्यसपिंडीकरणनिमित्तश्राद्धे अमुकगोत्रपितामहा
ऽमुकशर्म्मन् एष पिंडस्तेस्वधा इतिद्वितीयवेद्यांकुशमूलेपितामहायपिंडंदद्यात्॥ ततः मो
टकतिलजलसहितंसव्योपगृहीतदक्षिणहस्तेनपिंडमादाय । अद्याऽमुकगोत्रस्याऽमुकप्रेत
स्यसपिंडीकरणनिमित्तकश्राद्धे अमुकगोत्रप्रपितामहामुकशर्म्मन्एषपिंडोऽमृतस्वरूपअक्ष
य्यतृप्तिहेतोस्तेस्वधा इतिद्वितीयवेद्यांअवनेजनस्थाने दर्भमध्येप्रपितामहायपिंडंदद्यात्॥ततः

था तहां पिंड देना अंगुष्ठके मार्ग ततः पश्चात् पूर्ववत् पिंड दक्षिणहाथमें लेके मोटक तिल जलसहित पीछे
अद्यामुकगोत्रस्य अमुकप्रेतका सपिंडीकरणनिमित्तक श्राद्धमें अमुकगोत्र प्रपितामह अमुकशर्म्मन् यो जो
अमृतरूप अक्षयतृप्तिका कारण पिंड ते स्वधा ऐसा बोलके द्वितीय वेदीमें दर्भाके मध्यभागमें जहां अवने-

जन जल दिया है तहां पिंड रखना एवं वृद्धप्रपितामहकुं पिंड देना ततः पश्चात् मोटक तिल जलसहित पूर्ववत् पिंडकुं दक्षिण हाथमें लेके अद्यामुकगोत्रस्य अमुकप्रेतका सपिंडीकरणनिमित्तक श्राद्धमें अमुकगोत्रवृद्धप्रपितामह अमुकशर्म्मन् एष नाम यो जो अमृतरूप अक्षयतृप्तिको हेतु पिंडः ते स्वधा ऐसा बोलना पीछे द्वितीयवेदीके ऊपर दर्भाके अग्रभागपै जहां अवनेजनजल दिया है तहां पिंड रखना अंगुष्ठमार्गकरके

मोटकतिलजलसहितंसव्योपगृहीतदक्षिणहस्तेन तृतीयंपिंडमादाय अद्यामुकगोत्रस्याऽमुकप्रेतस्यसपिंडीकरणनिमित्तकश्राद्धेऽमुकगोत्रवृद्धप्रपितामहाऽमुकशर्म्मन् एषपिंडोऽमृतस्वरूपअक्षय्यतृप्तिहेतोस्तेस्वधा। इतिद्वितीयवेद्यांअवनेजनस्थानेकुशाग्रसमीपेपिंडंदद्यात् ॥

मूलपुरुषेभ्योनमः अग्रविभागे इत्यादिलेपभागभुजस्तृप्यंतु इतिदर्भमूलेकरप्रोक्षणम् ॥

पीछे मूलपुरुषेभ्यो नमः अग्रविभागेभ्यो नमः ऐसा बोलके जो हाथोंके अन्न लगा है सो पिंडोंके नीचे दर्भा है पूछना धोना ऐसा बोलना लेपभागभुजस्तृप्यतुं जो हाथके लगे अन्नका भागी पित्रेश्वर हैं सो तृप्त होवो ऐसा बोलके दर्भाके मूलके ऊपर हाथ धोना। पश्चात् सव्य होके आचमन करना पीछे हाथमें अक्षत

लेके उत्तरमुख होके अपने श्वासकुं जरा बंध करके पितरेश्वरोंका ध्यान करना अत्र नाम यहां पितरो माद-
यध्वं यथाभागमावृषायिषत् ऐसा बोलना पीछे अपसव्य होके दक्षिणदिशामें मुख करके अमीमदंत पितरो
यथाभागमावृषायिषत् ऐसा यो मंत्र बोलके अक्षत पिंडोंके ऊपर रखना पीछे किंचित् जलयुत पितामहका
अवनेजनपात्र हाथमें लेके और दक्षिणहाथमें मोटक तिल जल लेके अद्यामुकगोत्र पितामहाऽमुकशर्म्मन्

सव्येनाचम्य ॥ अक्षतंगृहीत्वोदङ्मुखीभूयश्वासंनियम्यपितरंध्यायेत् ॥ अत्रपितरोमादयध्वं
यथाभागमावृषायिषत् ॥ अपसव्येनदक्षिणाभिमुखोभूत्वा ॥ अमीमदंतपितरोयथाभागमा
वृषायिषत् । इत्यक्षतंपिंडोपरिदद्यात् ॥ ततः किंचिज्जलयुतंपितामहाऽवनेजनपात्रंआदा

यो जो पिंडप्रत्यवनेजनजलं ते स्वधा ऐसे बोलके पिंडके ऊपर जल डालके अवनेजनपात्र जहां था तहांही
रख देना ॥ पश्चात् प्रपितामहके अवनेजनपात्रकुं वाम हाथमें लेके दक्षिणहाथमें मोटक तिल जल लेके
अद्यामुकगोत्र प्रपितामह अमुकशर्म्मन् यो जो पिंडप्रत्यवनेजनजल ते स्वधा आपके अर्पण है ऐसा बोलके

प्रपितामहके पिंडके ऊपर अवनेजनजल डालना पीछे अवनेजनपात्र जहांसे उठाया था तहां रख देना ततः पश्चात् वृद्धप्रपितामहका अवनेजनपात्रकुं वाम हाथमें लेना दक्षिण हाथमें मोटक तिल जल लेके अद्याऽमुकगोत्र वृद्धप्रपितामह अमुकशर्म्मन् इदं नाम यो जो पिंडप्रत्यवनेजनजल है सो ते स्वधा आपके अर्पण है ऐसा बोलके जहां अवनेजनजल पिंडपै स्वदक्षिणहस्तके अंगूठेके द्वारा डालना पीछे अवनेजन-

य ॥ अद्याऽमुकगोत्रपितामहाऽमुकशर्म्मन् इदंपिंडप्रत्यवनेजनजलंतेस्वधा ॥ एवंप्रपितामहवृद्धप्रपितामहयोरप्यवनेजनजलंदद्यात् ॥ ततोनीवीविस्रंसनं ॥ ततः प्रेतपिंडार्चनं ॥ अथसूत्रदानं ॥ नमस्तेप्रेतरसायप्रेतोवासः कुमारः पुष्करस्रजंयथाहपुरुषोऽशयेत् ॥ इतिसूत्रदानं ॥

पात्र जहां पडा था वहांही रख देना पश्चात् नीवी नाम धोतीकी मोडी ढीली करना पश्चात् प्रेतपिंडकी पूजा करना प्रथम सूत्र पिंडपै रखके नमस्ते प्रेतरसाय० यो मंत्र बोलके वाम हाथसे सूत्र दक्षिण हाथमें लेके पिंडपै सूत्र रखना पीछे गंध अक्षत पुष्प राल धूप दीप ऊर्णसूत्र भृंगराज पुष्प उसीर आदि लेके वस्त्र-तक ततः पश्चात् अपसव्य होके पितामहादिपिंडोंका गंधादि करके पूजन करना अथ पिंडोंपै सूत्र चढाना

वामहाथसे दक्षिणहाथमें सूत्र लेके नमो वः पितरो रसायेति मंत्र बोलके सूत्र रखना पीछे गंधादिकोंकरके पूजन करना कहा है पीछे हाथमें मोटक तिल जल लेके अद्याऽमुकगोत्र अमुकप्रेतका प्रेतभावनिवृत्तिके

प्रेतपिंडंगंधादिभिःसंपूज्य मोटकादीन्यादाय । अद्यामुकगोत्रस्यपितुरमुकप्रेतस्यसपिंडीकरणश्राद्धे इदंपिंडार्च्चनं । अत्रगंधाक्षतपुष्पधूपदीपनैवेद्यादीनिवासांसितेमयादीयंतेतवोपतिष्ठंताम् ॥ ततःदुग्धेनोर्ज्जंदद्यात् ॥ सव्यंहस्तौपादौप्रक्षाल्याचम्य ॥ ततोऽपसव्येनपितामहादिपिंडार्च्चनंगंधादिभिः ॥ अथ सूत्रदानं॥ नमोवः पितरोरसायेतिपठित्वापिंडोपरिसूत्रंदत्त्वा गंधाद्यैः संपूज्य। मोटकादीन्यादाय॥अद्यामुकगोत्रस्यपितुरमुकप्रेतस्यप्रेतत्वविमुक्तिपूर्वकाक्षयस्वर्गाद्युत्तमलोकप्राप्तिकामः सपिंडीकरणश्राद्धे अद्यामुकगोत्राः पितामहप्रपितामहवृद्धप्रपितामहा अमुकाऽमुकशर्म्माणः इदंपिडार्च्चनं अत्रगंधाक्षतपुष्पधूपदीपनैवेद्यादीनि

अर्थ स्वर्गादिउत्तमलोकोंकी प्राप्तिकी कामना करके सपिंडीकरणश्राद्धमें अमुकगोत्राः पितामहप्रपितामहवृद्ध-प्रपितामहाअमुकामुकशर्माणः जो ये हैं इनकुं इदं नाम यो जो पिंडार्चन है सो इसीसे गंध, अक्षत, पुष्प,

धूप, दीप, नैवेद्यादीनि और वस्त्रत्रय विभाग करके देते हैं सो युष्मभ्यं स्वधा। अथ यार्क पश्चात् प्रेतपिं-
डका त्रय विभाग करना सोनेकी शीकसे अथवा चांदीकी शीकसे अथवा दर्भाके तृणसे पीछे ये समाना०
ये जो द्वय मंत्र है सो बोलने परंतु पिंडका प्रथम कडका हाथमें लेके पितामहके पिंडमें मेलन करना और

वासांसित्रेधाविभज्ययुष्मभ्यंस्वधा॥ अथाद्यं प्रेतस्यपिंडंत्रिधाकृत्वास्वर्णशलाकयावार
जतशलाकयावाकुशैः। येसमाना०इतिद्वाभ्यांमंत्राभ्यांपिंडंकल्पयित्वा प्रथमखंडंपिता
महपिंडेयोजयेत् द्वितीयंखंडंप्रपितामहपिंडेयोजयेत्॥ तृतीयंखंडंवृद्धप्रपितामहपिंडेयोज
येत्॥ ततःपितामहादिपिंडत्रयं प्रेतपिंडभागेनवर्त्तुलं कृत्वामंत्रयेत्॥ तत्रमंत्रः॥ ॐयेसमा
नाः सुमनसः पितरोममराज्येतेषांलोकःस्वधानमोयज्ञोदेवेषुकल्पतां॥ येसमानाः सुमनसो

द्वितीय खंड प्रपितामहके पिंडमें मेलन करना और तृतीय खंड वृद्धप्रपितामहके पिंडमें मेलन करना पीछे
ये समाना० इत्यादि मंत्रद्वयं वारत्रयं बोलके वर्त्तुल नाम गोल बनावै ॐ ये समानाः सुमनस० एक तो ये
मंत्र है और ये समाना० ॥ पितामहादिकपिंडत्रयकुं प्रेतपिंडका भाग मिलाके गोल पिंड करना सल निका-

लके पीछे ये समाना० ये जो मंत्रद्वय है अथवा त्रय है तिनकरके बोलबोलेक पिंड सम वर्त्तुल करना गोल अच्छा बेलके फलसदृश गोल करना पीछे जुदे जुदे अर्घ आचमनीयादि करके नमोस्त्वनंताय०

जीवाजीवेषुमामकास्तेषांश्रीर्मयिकल्पितास्मिँल्लोकेशतꣳसमाः॥ संसृजतुत्वापृथिवीवायुरग्निः प्रजापतिः संसृजध्वंपूर्वेभिस्त्रिभिश्चपितृभिःसह ॥ समानानीवआकूतिःसमानाहृदयानिवः समानमस्तुमनोवायथावः सुवहासतिः । संगच्छध्वंसंवदध्वंसंवोमनांसिहायतां ॥देवाभाजंयथापूर्वंसंजानानाउपासते॥एषवोनुगतःप्रेतःपितरंत्वांददामिवः॥शिवमस्त्वतिलोकानांजायतांचिरजीविनां ॥ इतिमंत्रद्वयेनत्रयेणवा प्रत्येकंप्रेतपिंडभागेनपितामहादिपिंडंसमवर्तुलंकुर्यात् ॥ प्रत्येकमर्घादिभिरभ्यर्च्य नमोस्त्वनंतायेति गंधादिभिःसंपूज्य॥सव्येनाचम्य॥विश्वे

यो मंत्र बोलके पूजन करना सर्वसामग्रीसे विधिसे ॥ पीछे नमोस्त्वनंतायेति मंत्रसे पाद्यार्घ आचमन गंधादिकसे पूजके सव्य होके आचमन करना पीछे विश्वेदेवारूपी ब्राह्मणोंके हाथोंमें दर्भा त्रय देके सुप्रोक्षितं

अस्तु जल देके शिवा आपः संतु पुष्पसहित मन प्रसन्न होके सौमनस्यं अस्तु अक्षत देके अक्षतं चारिष्टं चास्तु फिर अपसव्य होके पितामहादिरूप पात्रब्राह्मणोंके प्रति सुप्रोक्षितमस्तु ऐसा बोलना पार्वणश्राद्धमें कहा तिसी मुजब पीछे जल मस्तकपै अभिषेक करना हमारे कुलमें दीर्घायु मनुष्योंकी होवो शांति रहो

देवादिब्राह्मणकरेषु कुशत्रयंदत्त्वा । सुप्रोक्षितमस्तु शिवाआपःसंतु सौमनस्यमस्तु अक्षतं चारिष्टंचास्तु । पुनरपसव्येन पितामहादिकब्राह्मणंप्रतिसुप्रोक्षितमस्तु उक्तपार्वणवत् ॥ तेजोमूर्द्धाभिषेकः ॥ अस्मत्कुलेदीर्घमायुरस्तुशांतिरस्तु पुष्टिरस्तु वृद्धिरस्त्वितिकुशोद कसहितेनमूर्द्धानमभिषिंचेत् ॥ सव्यंकृत्वा ॥ अपांमध्येस्थितादेवाःसर्वमप्सुप्रतिष्ठितं ब्राह्म

पुष्टि होवो वृद्धि कुलकी होवो ऐसा बोलके कुशासे पात्रब्राह्मणोंके मस्तकोंपै अभिषेक करना पीछे सव्य होके बोले जो जलमें देवता हैं सो सर्वही जलमें जल कैसा शुद्ध लेना अशुद्ध जलमें देवतोंका निवास नहीं है । सो शुद्ध जल ब्राह्मणोंके हाथोंमें डालनेसे हमारे कल्याणरूपी वह जल होवो। और ब्राह्मणोंके हाथोंमें

पुष्प देना पन ~~...~~ पास पुष्पोंमें है और कमलमें लक्ष्मी है । सा लक्ष्मी नित्य मेरे बसो और मेरे मनमें सदा आनंद रहो । अब अक्षय्यउदकदान पितृरूप ब्राह्मणोंकुं देना अद्याऽमुकगोत्र पितामहकुं अमुकशर्माकुं दिया जो एतत् अन्न पानादिक इसी श्राद्धमें सो आपकुं अक्षयरूप प्राप्त होवो ॥ अद्याऽमुकगोत्र अमुक-

णस्यकरेन्यस्ताः शिवाआपोभवंतुमे ॥ लक्ष्मीर्वसतिपुष्पेषु लक्ष्मीर्वसतिपुष्करे ॥ लक्ष्मी र्वसतिमेनित्यंसौमनस्यंसदास्तुमे ॥ अथाक्षय्योदकदानं॥ अमुकगोत्रस्यपितुरमुकशर्म्मणः दत्तैतदन्नपानादिकं यद्दीयमानमुदकंतदक्षय्यमस्तु ॥ अद्याऽमुकगोत्रस्यपितामहस्यामुकश र्म्मणः अत्रश्राद्धेदत्तैतदन्नपानादिकं यद्दीयमानमुदकं तदक्षय्यमस्तु ॥ एवंप्रपितामहवृद्धप्रपि तामहयोः षष्ठचेकवचनेनाक्षय्योदकंदद्यात् ॥ ततः सव्यंकृत्वा ॥ ॐअघोराः पितरः संतु

शर्मा प्रपितामहकुं दिया जो अन्नपानादिक और दीयमान जो उदक सो अक्षयरूप होके प्राप्त होवो । अद्यामुकगोत्र वृद्धप्रपितामहअमुकशर्माकुं दिया जो अन्नपानादिक और दीयमान जो उदक सो अक्षयरूप होके प्राप्त होवो । पीछे सव्य होके जलका अर्घपात्र हाथमें लेके अघोराः पितरः संतु यो मंत्र बोलके

पितामहादिकोंके पिंडत्रयके ऊपर पश्चिमसे लेके पूर्वकी तरफ पिंडोंके ऊपर जलधारा देना। पीछे पूर्वाभिमुख होके पित्रेश्वरोंके पास आशीर्वाद मांगे। गोत्र हमारा बधो वेदाः संतति बधो श्रद्धा धर्ममें बनी रहो बहोत देनेकुं हमारे हो अन्न हमारे बहुत होवो अतिथी हमारेकुं प्राप्त होवो हमारी कोई याचना करो हम

इतिपितामहादिपिंडत्रयोपरिपूर्वाग्रां जलधारांदद्यात् आशिषःप्रार्थयेत् पूर्वाभिमुखोभूत्वा ॥ गोत्रंनोवर्द्धतां वेदाः संततिरेवच। श्रद्धाचनोमाव्यगमत् बहुदेयंचनोस्तु । अन्नंचनोबहुभवेत् अतिथींश्चलभेमहि। याचितारश्चनः संतु मास्मयाचिष्मकंचन इत्येवाशिषःसंतु ॥ ततोऽपसव्यंकृत्वा पिंडोपरिसपवित्रं कुशत्रयं दक्षिणाग्रामस्तीर्य स्वधावाचनम् ॥ पुटकमध्ये तिलजलपवित्रकं गृहीत्वा स्वधांवाचयिष्ये वाच्यताम् ॥ अमुकगोत्रायाऽमुकशर्मणेपि

किसीकी नहीं करें यो आशीर्वाद हमकुं दो तब पात्रब्राह्मण बोले ये जो आशीर्वाद तुमकुं प्राप्त होवो पीछे अपसव्य होके पिंडोंके ऊपर पवित्रसहित त्रय दर्भा रखना पीछे स्वधावाचन मैं करूंगा तब ब्राह्मण बोले कर पुटकके [illegible] तिल जल लेके और पवित्र १ लेके पात्रब्राह्मणोंकुं बोले स्वधां वाचयिष्ये वाच्य-

ताम् । असुकगोत्राय अमुकशर्मणे पित्रे स्वधा कहो होवो स्वधा अद्यामुकगोत्राय अमुकशर्मणे पितामहाय स्वधा कहो होवो स्वधा । अद्यामुकगोत्रायाऽमुकशर्मणे वृद्धप्रपितामहाय स्वधा कहो होवो स्वधा पश्चात् ऊर्ज देना ॥ जल दुग्धयुक्त पात्र हाथमें लेके ॐ ऊर्ज्जं वहंतीति मंत्र बोलके दक्षिणाग्रजलधारा पिंडोंके

त्रेस्वधोच्यतामस्तुस्वधा ॥ अद्यामुकगोत्रायाऽमुकशर्मणेपितामहायस्वधोच्यतामस्तुस्वधा एवंप्रपितामहवृद्धप्रपितामहाभ्यां दद्यात्॥ ततोर्ज्जदानं ततोवामहस्तोद्धृतंजलपात्रं दुग्धयुक्तं दक्षिणेनादायॐऊर्ज्जंवहंतीरमृतंघृतंपयः कीलालंपरिस्रुतंस्वधास्थतर्प्पयतमेपितॄन्नित्यूर्ज्जंद त्त्वापित्रादीनुद्दिश्य सपवित्रकुशोपरि दक्षिणाग्रां जलधारांदद्यात् ॥ पिंडाः संपन्नाःसुसंपन्ना भवंतु॥पिंडमुत्थापयामि पिंडानुत्थापय आघ्राय चालयेत् ॥ सव्येनवेद्यांशंखचक्रलिखित्वा पूजनंचविधाय॥तदुपरिगयायांपितृरूपेणेतिस्थापयेत् ॥ ततःसव्यंकृत्वा ॥ प्राङ्मुखः॥देवा

ऊपर देना पीछे कहना पिंड संपन्न है सो सुसंपन्न होवो पिंडोंकुं उठाके और सूंघके उसी वखत एक पत्रके ऊपर क्रमसे रखके वेदीपे शंख चक्र लिखके पूजन करके पीछे शंखचक्रोंके ऊपर पिंड रखके गयामें

पितृरूप करके स्थापन किया है ऐसा बोलके सव्य करना पूर्वमुख करके देवार्घपात्रकुं वहांसे उठाके अलग रखना पीछे स्वर्णदक्षिणा जलसहित हाथमें लेके अद्य कृतैतत्सपिंडीकरणश्राद्धांगभूत पितामहादित्रयश्राद्ध-संबंधि कालकामसंज्ञाके विश्वेदेवतोंके श्राद्धप्रतिष्ठा सिद्ध होनेके अर्थ स्वर्णदक्षिणा अग्नि है देवता जिसीका

ऽर्घपात्रंस्पृष्ट्वासंचालयेत् हस्तेस्वर्णदक्षिणामादाय अद्येहकृतैतत्सपिंडीकरणश्राद्धांगभूतपितामहादित्रयश्राद्धसंबंधिकालकामसंज्ञकविश्वेदेवश्राद्धप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं दक्षिणांहिरण्यमग्निदैवतं वा तन्मूल्योकल्पितंद्रव्यं अमुकगोत्रायऽमुकशर्म्मणेब्राह्मणायतुभ्यमहंसंप्रददे इति।

ततोऽपसव्यंकृत्वा दक्षिणमुखःपातितवामजानुः मोटकतिलजलसहितांदक्षिणामादाय॥

पित्राद्यर्घपात्राणिउत्तानीकृत्य अद्यामुकगोत्रस्यपितुरमुकप्रेतस्य कृतैतत्सपिंडीकरणश्रा

अथवा स्वर्णके मोलका द्रव्य अमुकगोत्रवाले अमुकशर्मा ब्राह्मण जो तू है सो तेरे अर्थ मैं देता हूं ऐसा बोलके ब्राह्मणकुं दक्षिणा देना पीछे ब्राह्मण स्वस्तीति प्रतिवचन बोले॥ पश्चात् अपसव्य होके दक्षिणमुख वामा गोडा मोडके बैठे पीछे मोटक तिल जल हाथमें लेके पीछे पिताका तथा प्रपितामहादिकोंका अर्घपात्र

सीधा करके दक्षिणा हाथमें लेके बोले अद्यामुकगोत्रस्य असुकप्रेतस्य पितुः कृतैतत्सपिंडीकरणश्राद्धप्र-तिष्ठार्थं इदं रजतं चंद्रदैवतं असुकगोत्रका असुकशर्मा ब्राह्मणकुं दक्षिणा मैं देता हूं ऐसा बोलके पितृपात्र-ब्राह्मणकुं दक्षिणा देना कदाचित् अपात्रिक श्राद्ध करे तो चटरूप ब्राह्मणके ऊपर रखना स्वस्तीति प्रति-

द्धप्रतिष्ठार्थं इदंरजतंचंद्रदैवतममुकगोत्रायामुकशर्मणेब्राह्मणाय दक्षिणांतुभ्यमहंसंप्रददे इति दक्षिणांपितृब्राह्मणकरेदद्यात् यदिअपात्रिकश्राद्धंतर्हि चटरूपब्राह्मणसमीपेक्षिपेत् ॥ स्वस्तीतिप्रतिवचनं ॥ पुनस्तथैवदक्षिणाद्रव्यादिकमादाय ॐ अद्यामुकगोत्रस्यपितुरमुक शर्मणः सापिंडीकरणनिमित्तकश्राद्धे कृतैतदमुकगोत्रपितामहामुकशर्मश्राद्धप्रतिष्ठार्थमिदं रजतंचंद्रदैवतं यथानामगोत्रायब्राह्मणाय दक्षिणांदातुमहमुत्सृजे इतिपितामहश्राद्धदक्षिणां

वचन ब्राह्मण बोले पुनः दक्षिणा मोटक तिल जल हाथमें लेके अद्यामुकगोत्रका असुकशर्मा जो पिता तिसके सपिंडीकरणश्राद्धमें कृतैतत् असुकगोत्रपितामह अमुकशर्माके श्राद्धप्रतिष्ठा सिद्ध होनेके अर्थ या जो दक्षिणा असुकगोत्र अमुकशर्मा जो तुम ब्राह्मण हैं सो तेरेकुं मैं देता हूं ऐसा बोलके ब्राह्मणके हाथमें

दक्षिणा देना स्वस्तीति प्रतिवचन ब्राह्मण बोले। फिर मोटक तिल जलसहित दक्षिणा हाथमें लेके अद्या-मुकगोत्रस्यामुकशर्मणः पिताका सपिंडीकरणनिमित्त श्राद्धमें ये जो क्रिया कर्म अमुकगोत्र प्रपितामह अमुकशर्म्मन् श्राद्धप्रतिष्ठा संसिद्ध होनेके अर्थ अमुकगोत्र अमुकशर्म्मा ब्राह्मणकुं या जो दक्षिणा मैं देता हूं सो

दद्यात् पुनः दक्षिणाद्रव्यादिकमादाय । ॐअद्यामुकगोत्रस्यपितुरमुकशर्मणः सपिंडीकरण निमित्तकश्राद्धे कृतैतदमुकगोत्रप्रपितामहामुकशर्मणः श्राद्धप्रतिष्ठार्थमिदंरजतंचंद्रदैवतं यथानामगोत्रायब्राह्मणाय दक्षिणांदातुमहमुत्सृजे इतिप्रपितामहश्राद्धदक्षिणांदद्यात् पुनर्द क्षिणाद्रव्यादिकमादाय ॐअद्यामुकगोत्रस्यपितुरमुकशर्म्मणः सपिंडीकरणनिमित्तकश्रा द्धेकृतैतदमुकगोत्रवृद्धप्रपितामहामुकशर्मश्राद्धप्रतिष्ठार्थमिदंरजतंचंद्रदैवतं यथानामगोत्राय

लेवो ऐसा बोलके प्रपितामहरूप पात्रब्राह्मणके हाथमें देना ॥ पुनः मोटक तिल जलसहित दक्षिणा हाथमें लेना पीछे अद्याऽमुकगोत्रस्य पितुरमुकशर्म्मणः सपिंडीकरणनिमित्तकश्राद्धमें क्रिया जो ये कर्म अमुकगोत्र वृद्धप्रपितामह अमुकशर्माके श्राद्धप्रतिष्ठा संसिद्ध होनेके अर्थ अमुकगोत्र अमुकशर्म्मा ब्राह्मणकुं या जो

दक्षिणा मैं देता हूं सो लीजिये ऐसा बोलके वृद्धप्रपितामहरूप पात्रब्राह्मणके हाथमें देना पात्रिकश्राद्ध नहीं होवे तो चटपै रखना ॥ ततः पश्चात् सव्यं कृत्वा देवविसर्जन करना ॐ वाजे वाजे वत० यो मंत्र बोलके विश्वेदेवोंका विसर्जन ॐ विश्वेदेवाः प्रीयंतां ऐसा बोलके करना ॥ पीछे अपसव्य होके पित्रेश्वरोंका विस-

ब्राह्मणाय दक्षिणांदातुमहमुत्सृजे इतिवृद्धप्रपितामहश्राद्धदक्षिणांदद्यात् ॥ ततः सव्यंकृत्वा ॐवाजेवाजेवतवाजिनोधनेषुविप्राअमृताऋतज्ञाः। अस्यमध्वःपिबतमादयध्वंतृप्तायातपथिभिर्देवयानैः इति। ॐविश्वेदेवाः प्रीयंतामितिदेवविसर्ज्जनं ॥ अपसव्यंकृत्वा ॥ ॐआमावाजस्यप्रसवोजगम्यादेमेद्यावापृथिवीविश्वरूपे। आमागंतांपितरामातराचामासोमोअमृतत्वेनगम्यात्। इतिप्रदक्षिणीकुर्वन् पूर्ववदुदकधारयात्रिर्वेष्टयेत् ततःप्रणम्य अष्टौपादाननुव्रज्य प्रदक्षिणीकृत्याभिवादयेत् इतिपितृविसर्जनं ॥ अत्रश्राद्धे यत्कृतंतत्सुकृतमस्तु यन्नकृतं

र्ज्जन है ॐ आमावाजस्य प्रसवोजग० यो मंत्र बोलके परिक्रमावत् वारत्रय उदकधारा देना पीछे प्रमाण करके अष्टपद चलेजाना पीछे चार परिक्रमा करके नमस्कार करना ऐसे पित्रेश्वरविसर्ज्जन है ॥ अत्र

नाश यहां श्राद्धमें जो किया है सुकृत होवो जो हमने न किया सो सर्व ब्राह्मणोंके वचनोंसे परिपूर्ण होवो। और अपात्रिकश्राद्धके अंदर अष्टपद अनुगमन नहीं करना ॥ सव्यं कृत्वा आचम्य हरिका स्मरण करना पीछे पितृब्राह्मण ऐसा बोले तेरे पित्रेश्वर तृप्त होके आयु देवेगा और संतान देवेगा और धन विद्या देवेगा और

तत्सर्वंब्राह्मणवचनात्परिपूर्णमस्तु ॥ अपात्रिकेअष्टौपादानुगमनं नैव ॥ सव्यंकृत्वाचम्य ॥ हरिंस्मृत्वा॥ आयुःप्रजां धनंविद्यांस्वर्गंमोक्षंसुखानिच। प्रयच्छंतुमहाराज्यंप्रीतास्तुभ्यंपिता महाः इत्याशिषःसंतु ॥ देवताभ्यइतित्रिर्जपेत्। पाणिभ्यां देवदीपंनिर्वापयेत् अपसव्येन पितृदीपान्निर्वापयेत् ॥ ततःसव्यंकृत्वा हस्तौपादौप्रक्षाल्य आचम्य। ॐप्रमादात्कुर्वतां कर्म्मप्रच्यवेताध्वरेषुयत् ॥ स्मरणादेवविष्णोर्वैसंपूर्णंस्यादितिश्रुतिः ॥ अपरश्राद्धचतुष्टय

स्वर्गमोक्ष सुख महाराज्य तृप्त होके देवेंगे या आशिषा हम देते हैं पीछे देवताभ्यः० यो मंत्र त्रयवार बोलना दोनों हाथोंसे देवदीपक निर्भुज करना। पीछे अपसव्य होके पित्रेश्वरोंका दीपक निर्भुज करना॥ सव्य होके पांव धोके आचमन करके पीछे यजमान बोले जो प्रमादसे हमने कर्म किया है जो कर्म्मयज्ञमें

जो कर्म मेरेसे विपरीत हो गया है सो कर्म्म विष्णुभगवान्की स्मरणसे संपूर्ण हो जाता है ये वेद गाता है
श्राद्धकर्म संपूर्ण होनेके वास्ते ये वचन कहना । पीछे श्राद्धचतुष्टयकी सामग्रीद्रव्य ब्राह्मणोंकुं देना और
पिंडोंकुं जलमें प्रवेश करना और उच्छिष्टकुं अलग डालना ॥ पीछे वैश्वदेवबलि करना । पश्चात् दश ब्राह्म-

स्यद्रव्यप्रतिपत्तिर्ब्राह्मणायकुर्यात् नामदद्यात् पिंडान्जलेप्रतिपादयेत् ॥ उच्छिष्टमार्ज्जनं
कुर्य्यात् ॥ अथवैश्वदेवबलिंकुर्य्यात् ॥ पश्चात् दशप्रभृतिश्रोत्रियान् यथाशक्तिभोजये
त् ॥ इति सपिंडीश्राद्धम् ॥ अथसपिंडीकरणांतेषष्ट्यधिकशतत्रयं जलघटदानंकर्त्त
व्यं ॥ अथाब्दांतेनित्यश्राद्धप्रकारवाक्यं ॥ अद्यामुकगोत्रस्यामुकशर्मणः पितुरक्ष
यस्वर्गाद्युत्तमलोकवासकामनयाद्वादशाहमारभ्यआब्दिकपर्यंतमिदं षष्ट्यधिकशतत्रयको

णोंको आदि लेके अच्छे अच्छे ब्राह्मण अपनी श्रद्धा माफिक जिमाना अच्छी तरहसे भोजन करवाना ।
इति सपिंडीश्राद्धविधिः ॥ अथ नाम अब सपिंडीश्राद्ध किया पीछे तीन सौ साठ ३६० घट सर्व वस्तुसहित
दान करना इसी सपिंडीकर्म्मसे पश्चाद्वर्षपर्यंत नित्यश्राद्ध प्रकार वाक्य कहते हैं । अद्यामुकगोत्रस्यामुक-

शर्मा पिताकुं अक्षयस्वर्ग आदि लेके उत्तम लोकोंकी प्राप्तिकी कामना करके द्वादशाह दिनकुं आरंभ लेके वर्षपर्य्यंत यो जो तीन सौ साठ ३६० घटोंका समुदाय कुशा जल करके पूर्ण तिल तंदुल दुग्ध तीर्थ जल करके युक्त ऐसो जो घटसमुदाय सो महापथ नाम यमपंथके दुःख निवृत्त होनेके अर्थ आमान्न नाम

शिकाजलपूर्णघटैः सहितंतिलतंदुलदुग्धजलैर्युतं महापथोपशांत्यर्थंआमान्नश्राद्धंतुभ्यं स्वधा। यदिप्रेतपदोच्चारणेतवोपतिष्ठतामितिवदेत् इतिकेचिन्मतंनांगीकर्त्तव्यम् ॥ यदि षष्ट्युत्तरशतत्रयंघटपूर्णंदातुंनसमर्थस्तदाद्वादशाहेद्वादशघटान्दद्यात् ॥ अथसपिंडनश्राद्ध दिनेत्रयोदशपदानांदानं ॥ प्रतिज्ञांकृत्वात्रयोदशेह्नित्रयोदशपदानिनानागोत्रेभ्योब्राह्मणे

सिधासहित तुभ्यं स्वधा ऐसा बोलके ब्राह्मणोंकुं देना प्राणीके अर्पन होता है कदाचित् वर्ष दिनसे सपिंडी करे तो प्रेतपद बोलना तब ऐसा बोलना तवोपतिष्ठताम् ये केचित्का मत है परंतु सपिंडीके पीछे प्रेतपद नहीं बोलना परंतु तीन सौ साठ ३६० घट देनेका सामर्थ्य नहीं होवे द्वादशके दिन द्वादश घट तो जरूर देना ॥ अथ नाम सपिंडी या पीछे उसी दिन प्राणीके निमित्त त्रयोदश पद देना संकल्प द्वादशके दिन

करना तहां ऐसा बोलना त्रयोदशेह्नि त्रयोदशपदानि अनेकगोत्रके ब्राह्मणोंकुं देना पदका प्रमाण गरुडपुराणमें कृष्णका वाक्य है। पदकी सामग्री कहते हैं १ छत्र, २ उपानहजोडी, ३ पांचों वस्त्र, ४ मुंदडी, ५ कमंडलु नाम लोटो, ६ आसन, ७ पांचों बरतन ये सप्त जिनस पदकी है सो ऐसी ऐसी त्रयोदशस्थानमें

भ्योदद्यात् ॥ तथाचगारुडेकृष्णवाक्यं ॥ छत्रोपानहवस्त्राणिमुद्रिकाचकमंडलुं ॥ आसनंभाजनंचैवपदंसप्तविधंस्मृतं ॥ १ ॥ देयानिसर्ववस्तूनिवरिष्ठानित्रयोदशे ॥ योददातिमृतस्येह जीवन्वाप्यात्महेतवे ॥ २ ॥ अथसपिंडनांतेहवनविधिः वेदान्पठन्ब्राह्मणःगृहंनीत्वापूर्वंमुखोपविष्टः तत्रघटमानीयकुंकुमादिना गणपतिंस्थापयेत् प्रथमंत्वंजलिंबद्ध्वागणप

रखना और अपनी मरजी होवे जैसी जीनसा पदमें और डालनी अपनी आत्माका विहित देखना अथ नाम सपिंडीके पश्चात् हवन विधिसे करना। पश्चात् वेदका मंत्र बोलता हुवा ब्राह्मणकुं घरमें लाके पूर्वाभिमुख बैठके वहां घट लायके कुंकुमादि लेयके गणपतिकी स्थापना करनी प्रथम हाथ जोडके गणपतिकी पूजा

करना अथ संकल्प करना प्रथम ॐ श्रीमद्भगवते महापुराणाय ॐ विष्णुः ३ अद्योनमः परमात्मने० इत्यादिक सर्व बोलके मास, पक्ष, तिथि, वार, नक्षत्र, योग, लग्न, मुहूर्त, करण इन करके संयुक्त समयमें अमुकगोत्रमें उत्पन्न जो मैं हूं अमुकशर्मा सो अमुकगोत्रस्य पितुरमुकशर्म्मणः किया जो सो सपिंडन जिसीके

तिंध्यायेत् ॥ अथसंकल्पः ॥ ॐश्रीमद्भगवतेमहापुराणायॐविष्णुः ३ अद्योनमः परमात्मने इत्यादिपठित्वामासानांमासोत्तमे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे यथानक्षत्रयोगलग्नमुहूर्त्तकरणान्वितायां अमुकगोत्रोत्पन्नाऽमुकशर्म्मा अमुकगोत्रस्यपितुरमुकशर्म्मणः कृतैतत्सपिंडनांतेहवनकर्म्मकर्त्तुं पृथ्वीगौरीगणेशकलशस्थापननवग्रहाद्यावाहनं पूजनं यथासंपादितसामग्र्या अहंकरिष्ये । इतिसंकल्पः ॥ ततःस्वस्त्ययनं ॥ ततो भू

अंतमें हवनकर्म्मकर्तुं पृथ्वी, गौरी, गणेश, कलशस्थापन, नवग्रहादिकोंको आवाहन पूजन जो प्राप्त हुई सामग्री तिसीसे मैं करूंगा । ऐसा संकल्प करना इति संकल्पः । पश्चात् भूमिस्पर्शनं गौरी नाम दुर्गास्पर्शन,

कलशकरण, कलशमें गणपत्यादिदेवोंका बाह्य नाम बाहर पूजा करना मंत्रोंसे नव ग्रहोंका आवाहन करना। इसीके पश्चात् ब्राह्मण वरण करना इसीके पश्चात् शय्या दान करना गोदान करना पूजादानादिक सर्व यथाशक्तिपूर्वक करना पददानं हवन करना पददान करनेके पीछे हवन करना ये केचित्का मत है सो

मिस्पर्शनंगौरीस्पर्शःकलश करणं कलशेगणपत्यादीनावाह्यपूजयेत् ॥ नवग्रहावाहनादिकंच कुर्य्यात् ॥ तदंतेब्राह्मणवरणं तदंतेशय्यादानंगोदानं पूजादानादिसर्वविधेयं ॥ पददानंहवनंचेति ॥ किंवाहवनंपददानंवेतिकेचित् ॥ अथत्रयोदशाहेपददानेपूजांविधाय प्रथमंवरणं पश्चात्पददानं ॥ अद्येत्यादिपठित्वा अमुकगोत्रोत्पन्नोऽमुकशर्म्मा अमुकगोत्रस्यपितुरमुकशर्म्मणः कृतैतत्सापिंडनांतशुद्धश्राद्धानंतरेत्रयोदशाहे अमुकगोत्रप्रवरवेदाध्यायिनंब्राह्मणं

अंगीकार नहीं करना परंतु त्रयोदशके दिन पददानमें पूजाविधि करना प्रथम तो ब्राह्मण वरण करना पीछे पददान देना अद्येत्यादि बोलके अमुकगोत्रमें उत्पन्न भया अमुकशर्मा मैं सो अमुकगोत्र पिताकुं अमुकशर्माकुं कृत जो यो सपिंडनके अंतमें शुद्ध श्राद्धके पश्चात् सपिंडनश्राद्ध है सो विशुद्ध है । नित्य घटश्राद्ध है

सो शुद्धश्राद्ध है इसीके पश्चात् त्रयोदश दिनमें अमुकगोत्र अमुकप्रवर वेदाध्यायिनं ब्राह्मणकुं अमुकशर्माकुं हवनकर्म करवेकुं ये जो गंध, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप, यज्ञोपवीत, द्रव्य, वस्त्रादिकुं करके त्वामहं वृणे ऐसा बोलके वरना स्वस्तीति प्रतिवचनं ब्राह्मण बोले ॥ इति ब्राह्मणवरणं ॥ अथ नाम अगाडी पददानका संकल्प कहते हैं ॐ अद्य कृतैतत् सत् अमुकगोत्रमें उत्पन्न भया अमुकशर्म्माऽहं अमुकगोत्रस्य अमुकशर्म्मणः

अमुकशर्म्मणां हवनकर्म्मकर्तुं एभिर्गंधाक्षतपुष्पादियज्ञोपवितद्रव्यवस्त्रादिभिस्त्वामहं वृणे ॥ स्वस्तीतिप्रतिवचनं ब्राह्मणोवदेत् ॥ इतिब्राह्मणवरणं ॥ अथपददानं ॥ ॐअद्यकृतैतत् सदमुकगोत्रोत्पन्नामुकशर्म्मा अमुकगोत्रस्यपितुरमुकशर्मणः सपिंडनशुद्ध श्राद्धानंतरे त्रयोदशेह्नि अक्षयस्वर्गाद्युत्तमलोकप्राप्तिकामःभूरिभोगभोजनार्थंएतानिच्छत्रोपानहवस्त्रमुद्रिकाकमंडलुआसनभाजनानि सप्तविधपदानित्रयोदशानिच अन्यदपिव्यज

पिताके सपिंडन शुद्ध श्राद्धके अनंतर त्रयोदशदिने अक्षय स्वर्गादि उत्तमलोक प्राप्तिकी कामना करके बहुत भोगनेके वास्ते ये जो छत्र, उपानह, वस्त्र, मुद्रिका, कमंडलु, आसन, भाजनानि सप्तविधपदानि

त्रयोदशसंख्याकानि औरभी कुछ पंखा, सजल कुंभ, द्रव्य शर्करासहितानि समुदायेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो अथवा नानागोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो जुदा जुदा विभाग करके एक एककुं यथानामगोत्रवालेकुं और वेदाध्यायिभ्यो प्रवरशाखावालेकुं एतत् लक्षणयुक्त जो तू ब्राह्मण है सो तेरेकुं हम घटदान सामग्रीसहित देते सो

नसजलकुंभद्रव्यशर्करासहितानि समुदायेभ्योनानानामगोत्रप्रवरवेदाध्यायिभ्योब्राह्मणेभ्यो यथाभागंविभज्य प्रत्येकंयथानामगोत्रप्रवरवेदाध्यायिनेब्राह्मणायतुभ्यमहंसंप्रददे । परोक्षे दातुमहमुत्सृजेइतिवाक्यंपठेत् । दक्षिणांच । अद्यकृतैतत्पदद्दानसांगतासिद्ध्यर्थं इमां स्वर्णदक्षिणां अमुकगोत्रायामुकशर्म्मणेतुभ्यमहंसंप्रददे । स्वस्तीतिप्रतिवचनं ॥ इतिसपिंडीश्राद्धप्रयोगः ॥

॥ इति प्रेतमंजरीग्रंथः समाप्तः ॥

अंगीकार करो ऐसा बोलके ब्राह्मणके हाथमें संकल्पका जल देना पीछे घटदानके ब्राह्मणकुं दक्षिणा देना दक्षिणाजल हाथमें लेके अद्य कृतैतत् यो जो किया पददान जिसीकी सांगताकी सिद्धिके अर्थ इमां नाम या जो स्वर्णदक्षिणा अमुकगोत्र अमुकशर्मा जो तू है सो तेरेकुं मैं देता हूं ऐसा बोलके ब्राह्मणकुं

दक्षिणा देना पीछे स्वस्तीति प्रतिवचनं ऐसा ब्राह्मण बोले ॥ श्रीरस्तु ॥ या सपिंडीश्राद्धविधि है ॥ अथ ग्रंथसमाप्तौ मंगलप्रतिज्ञाश्लोकाः इमे । रामपूर्वपदो यत्र प्रतापोत्तरसंयुतः ॥ नाम्ना विख्यातजातोऽहं मिश्रवंशे महाकृतिः ॥ १ ॥ विजयाख्यपुरे वासः सहस्त्रार्द्धाच्च वत्सरात् ॥ मम वंशे ह्यभूत्प्राज्ञा विद्यावृत्त्योपजीविनः ॥ २ ॥ पद्धतिः प्रेतकर्म्माख्या लघुमिश्रेण ग्रंथिता ॥ तस्या वै बालबोधार्थं भाषाटीका मया कृता ॥ ३ ॥ मत्यानुमानतो मे वै श्राद्धकर्म्मप्रकाशिका ॥ दीपिका च बहुस्नेहा कलिजीवसुखाय वै ॥ ४ ॥ स्वे स्वे देशांतरे चैव ग्रामभेदात्कुलाच्च वै कर्मलोपः कृतः प्राज्ञैस्तच्छुद्धिः क्रियतां पुनः ॥ ५ ॥ भूभूनागधरासंख्ये शाके वै शालिवाहने ॥ माघशुक्लदशम्यां च समाप्तिर्ह्यभवद्गुरौ ॥ ६ ॥ इति श्रीपंडितरामप्रतापमिश्रविरचिता प्रेतकर्म्मपद्धतीत्यपरपर्याय-बृहत्प्रेतमंजरीभाषाटीका समाप्ता ॥

इदं पुस्तकं श्रीकृष्णदासात्मज-गंगाविष्णुना स्वकीये "लक्ष्मीवेंकटेश्वर" मुद्रणालये मुद्रितं प्रकाशितं च ॥

कल्याण-मुंबई. संवत् १९६२.

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास, "लक्ष्मीवेंकटेश्वर" छापाखाना, कल्याण-मुंबई.